मासिक

गुरमत ज्ञान

ISSN 2394-8485

३/-

कार्तिक-मार्गशीर्ष संवत् नानकशाही ५५७ नवंबर 2025 वर्ष १९ अंक ३

विशेषांक
३५० वर्षीय शहीदी पर्व
श्री गुरु तेग बहादर साहिब

शहीदी-स्थान श्री गुरु तेग बहादर साहिब
गुरुद्वारा सीसगंज साहिब, दिल्ली

संदेश

श्री गुरु नानक देव जी द्वारा चलाए गए नानक निर्मल पंथ की आध्यात्मिक परंपराओं को परवर्ती गुरुओं ने आगे बढ़ाया, पांचवें गुरु की शहीदी ने इसमें कुर्बानी का रंग भर दिया, नवम गुरु की शहीदी ने इस रंग को और गहरा कर दिया। नवम गुरु ने जहां धर्म-रक्षक के रूप में प्रताड़ितों और शोषितों की रक्षा की, वहां उन्होंने पूरे विश्व को यह संदेश भी दिया कि मानवाधिकारों की रक्षा कैसे की जाती है। इतिहास में यह ऐसी शहादत है जिसका मुख्य उद्देश्य हर प्रकार की स्वतंत्रता था। श्री गुरु तेग बहादर साहिब जहां अपनी अद्वितीय शहादत के लिए याद किए जाते हैं, वहाँ गुरु जी ने अपनी बाणी के माध्यम से मानवता को प्रभु-बंदगी करने और निर्भय होकर जीवन जीने की शिक्षा दी। गुरु जी बाबा बकाला साहिब की सुहावनी धरती पर लंबा समय ईश्वर के ध्यान में लीन रहे। यहीं पर भाई मक्खण शाह लुबाणा ने पाखंडी गुरुओं का पर्दाफाश किया और 'सच्चा गुरु लाधो रे!' कहकर सच्चे गुरु, श्री गुरु तेग बहादर साहिब की पहचान कराई। लोगों को सत्य के साथ जोड़ने और सत्य का मार्ग दिखाने के लिए गुरु जी ने लंबी धर्म प्रचार-यात्राएँ कीं और लोगों के कष्टों को दूर किया। इतिहास साक्षी है कि उन्होंने दिल्ली जाकर कश्मीरी ब्राह्मणों की पुकार पर धर्म की आज़ादी के लिए अपनी शहादत दी। गुरु जी की शहादत के बाद, गुरु-घर के प्रेमी गुरसिक्ख भाई जैता जी, गुरु जी के शीश को आदरपूर्वक श्री अनंदपुर साहिब में दशमेश पिता जी के पास लेकर आए और भाई लक्खी शाह बनजारा ने अपने घर में आग लगाकर गुरु जी के शरीर का अंतिम संस्कार किया। गुरु जी द्वारा मानवता पर किए गए उपकारों के कारण, गुरु जी को 'धर्म की चादर' और 'सृष्टि की चादर' नाम से सम्मानित किया जाता है। ऐसे दयालु, दीन-दुखियों के रक्षक, सत्य और न्याय के रक्षक, नवम गुरु जी तथा उनके साथ शहीद हुए सिक्खों— भाई मतीदास जी, भाई सतीदास जी और भाई दिआला जी की ३५०वीं शहादत वर्षगांठ तथा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का ३५०वां गुरुता-दिवस, नवंबर माह में पूरी दुनिया बड़ी श्रद्धा और भावना के साथ मना रही है। इस अवसर पर, जहाँ धर्म प्रचार कमेटी, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करने की योजना बनाई गई है, वहाँ मासिक पत्रिका 'गुरमत ज्ञान' का यह अंक इस शताब्दी को समर्पित विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया गया है, ताकि संगत को गुरु-इतिहास और नवम गुरु जी की बाणी के दर्शन से अवगत कराया जा सके। हम सभी का कर्त्तव्य है कि हम गुरु जी का गुणगान करते हुए, इस विशेषांक में प्रकाशित रचनाओं को पढ़ें और गुरु जी के जीवन-दर्शन तथा शहादत के उद्देश्य से अवगत हों।

गुरु-पंथ के दास

एडवोकेट हरजिंदर सिंघ
अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी,
श्री अमृतसर साहिब।

बलविंदर सिंघ काहलवां
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी,
श्री अमृतसर साहिब।

ISSN 2394-8485

ੴ सतिगुर प्रसादि॥

गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

कार्तिक–मार्गशीर्ष संवत् नानकशाही 557
वर्ष 19 अंक 3 नवंबर 2025

संपादक : सतविंदर सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा	
सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब -143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4
संपादकीय 5
श्री गुरु तेग बहादर साहिब की प्रचार-यात्राओं का संक्षिप्त ब्यौरा 7
–डॉ. आत्मा सिंघ
श्री गुरु तेग बहादर साहिब की विचारधारा 11
–डॉ. तारन सिंघ (दिवंगत)
नवम् गुरु की बाणी में मानव जीवन-आदर्श का उल्लेख 16
–डॉ. महीप सिंघ
श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी में वैराग्य-भावना का उल्लेख 21
–डॉ. रतन सिंघ (जग्गी)
श्री गुरु तेग बहादर साहिब का दर्शन 29
–डॉ. दलविंदर सिंघ (ग्रेवाल)
श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहादत : मानवाधिकारों के संदर्भ में 33
–बीबी मनमोहन कौर
श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी : एक अध्ययन 38
–स. परमजीत सिंघ सुचिंतन
नवम गुरु : योद्धा एवं तत्वज्ञ के रूप में 48
–डॉ. मनजीत कौर
धर्म-सिद्धांतों के प्रहरी : श्री गुरु तेग बहादर साहिब 53
–डॉ. कशमीर सिंघ नूर
. . . . शहीद भाई मतीदास जी, भाई सतीदास जी और भाई दिआला जी 57
–डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल
बर दो आलम शाह गुरू गोबिंद सिंघ 62
–डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ
सृष्टि की चादर, धर्म के रक्षक (कविता) 71
–स. करनैल सिंघ सरदार पंछी
ख़बरनामा 72

गुरबाणी विचार

मंघर माहु भला हरि गुण अंकि समावए ॥
गुणवंती गुण रवै मै पिरु निहचलु भावए ॥
निहचलु चतुरु सुजाणु बिधाता चंचलु जगतु सबाइआ ॥
गिआनु धिआनु गुण अंकि समाणे प्रभ भाणे ता भाइआ ॥
गीत नाद कवित कवे सुणि राम नामि दुखु भागै ॥
नानक सा धन नाह पिआरी अभ भगती पिर आगै ॥१३॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११०९)*

तुखारी राग में उच्चरित 'बारह माहा' बाणी की इस पावन पउड़ी में प्रथम पातशाह श्री गुरु नानक देव जी मार्गशीर्ष मास की ऋतु एवं वातावरण के प्रसंग में जीव-स्त्री को प्रभु-नाम-सुमिरन एवं चिंतन करने का गुरमति मार्ग बख़्शिश करते हैं।

गुरु जी कथन करते हैं कि मार्गशीर्ष मास उस जीव-स्त्री के लिए पूर्णत: अनुकूल है जो अपने हृदय में परमात्मा के गुणों अथवा रूहानी और नैतिक गुणों का आत्मसात करती हुई इन्हें अपने जीवन-यापन का अभिन्न अंग बना लेती है। ऐसी सौभाग्यशाली जीव-स्त्री सदैव गुणों को ग्रहण करती रहने के कारण गुणवती कहलाती है। वह गुणों को इसलिए अपनाती है कि ऐसा करने से प्रभु-पति प्रसन्न होता है जो कि सदास्थिर है।

गुरु पातशाह परमात्मा के सदास्थिर के गुण के साथ-साथ उसे 'चतुरु सुजाणु' कहते हुए फरमान करते हैं कि गुणवती जीव-स्त्री चतुर व बुद्धिमान प्रभु के आगे सदा समर्पित रहती है। वह प्रभु का नाकिट्य हासिल कर लेती है। उसका ध्यान प्रभु-चरणों में लगा रहता है। प्रभु-गुणों की धारक गुणवती जीव-स्त्री को जगत का हर घटनाक्रम प्रभु की रज़ा प्रतीत होने लगता है।

गुणवती जीव-स्त्री का प्रभु के साथ परिचय हो जाता है और वह अपना ध्यान प्रभु-हुक्म को समझने-मानने में लगाये रखती है। प्रभु की कृपा-दृष्टि से उसका मन प्रभु-भक्ति में लग जाता है और सांसारिक मोह-माया एवं भटकन का उसका दुख दूर भाग जाता है। गुरु जी फरमान करते हैं कि ऐसी जीव-स्त्री प्रभु को प्रिय लगने लगती है। वह अपने हृदय की भक्ति-भावना प्रभु के लिए सदैव बनाए रखती है। उसका मनुष्य-जन्म का उद्देश्य पूर्ण होता है, उसका दुनिया में आना सफल हो जाता है।

संपादकीय

लासानी शहादत

गुरु साहिबान का रूहानी मिशन था— जीवों के दुखों-क्लेशों का नाश करना, मानवता में से नफ़रत, झगड़े, ईर्ष्या, ख़ुदगर्ज़ी और धक्केशाही को ख़त्म करना, जीवों में प्रभु के प्रति प्रेम-भक्ति पैदा करना, "एकु पिता एकस के हम बारिक" तथा "ना को बैरी नही बिगाना" का एहसास कराना और आत्मिक रूप से मुर्दा हो चुकी जनता में आध्यात्मिक जीवन की अलख जगाना। भारतीय लोगों की मृतप्राय जमीर को अमृत-शक्ति प्रदान करने वाले जगत-गुरु, नानक निरंकारी की परम ज्योति ने दस जामे (जन्म) धारण किये थे।

इसी के अंतर्गत जब भारत में धर्म परिवर्तन की संकटमयी घड़ी में कश्मीरी ब्राह्मणों ने श्री गुरु तेग बहादर साहिब को याद किया था तो उस समय 'अनाथ भारत' के सहायक बन कर श्री गुरु तेग बहादर साहिब सामने आए, मज़लूमों का हाथ थामा और अपनी शहादत देकर "बांहि गहे की लाज" रखी। शरणागत-प्रतिपालक गुरु जी ने शरण में आए प्रताड़ित लोगों के धर्म की रक्षा की थी।

नवम् गुरु जी ने भारतीय जनता में निर्भयता, निर्वैरता तथा आत्माभिमान पैदा करने के लिए "जोध महाबल सूर" वाली उच्च आध्यात्मिक अवस्था पैदा की। इस अवस्था के लिए "सुरति मति मनि बुधि" की नये सिरे से अनुपम संरचना के लिए श्री गुरु तेग बहादर साहिब के पास युक्ति थी— 'नाम-सुमिरन'। नाम-सुमिरन द्वारा ही जीवों में रूहानी आनंद पैदा होना था, चेतना बलवान होनी थी। बलवान चेतना ने ही शरीर में शक्ति पैदा करनी थी। इस रूहानियत से भरपूर बल ने ज़ुल्मी बल को पछाड़ कर धार्मिक सहनशीलता वाले धर्मी राज्य की स्थापना करनी थी। इस नई संरचना से सत्य, संतोष, नेकी, दया, धर्म, धीरज आदि सद्गुणों वाले रूहानी जीवों का समाज बनना था, जिसमें किसी के साथ जात-पांत, ऊंच-नीच का भेदभाव न हो। इस युग-परिवर्तन वाले रूहानी मिशन को साकार करने के लिए नवम् पातशाह ने अपने पूर्ववर्ती गुरु साहिबान की भाँति नाम-सुमिरन को आधार बनाया और नाम-सुमिरन की शक्ति से ज़ुल्म व ज़ुल्मी को टक्कर देने की राह दिखायी। इसी के अंतर्गत नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने औरंगज़ेब द्वारा भारतवासियों के किए जा रहे धार्मिक अपमान को अपना सीस देकर रोका।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में बार-बार नाम-सुमिरन की बात आई है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने अपनी बाणी में "कहै नानकु रामु भजि लै", "हरि जसु रे मना गाइ लै", "कहु नानक हरि भजु मना", "कहु नानक मन सिमरु तिह", "रामु सिमरि रामु सिमरि इहै तेरै काजि है" का उपदेश दृढ़ करवाया है।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने अपने जीवन-काल के दौरान मानवता के उद्धार के लिए धर्म प्रचार-यात्रा

की, नाम-सुमिरन का उपदेश दिया, "भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन" वाली आदर्श जीवन-युक्ति समझायी। लोगों में जाकर उनके दुख-दर्द सुने और उनका समाधान किया। धर्म की आज़ादी के लिए अन्याय-विरोधी गुरु जी ने अपना आप न्यौछावर कर अपनी शरीर रूपी चादर के साथ मानवता को सुरक्षा-छतरी प्रदान की, इसीलिए आप जी को 'धर्म की चादर' और 'सृष्टि की चादर' कह कर अलंकृत किया जाता है।

परंतु, वर्तमान में हमारे देश में ही गुरु साहिबान द्वारा किये परोपकारों को भुला दिया गया। उनकी शिक्षाओं के विपरीत "सभु को मीतु हम आपन कीना हम सभना के साजन" की जगह आज धार्मिक कट्टरता की ज्वाला पुन: उठी है। अल्पसंख्यकों को निशाना बनाया जा रहा है। अगर कुछ बदला है तो वो है— हुकूमत। तब औरंगज़ेब के शासन में भारतवासियों पर अंधाधुंध ज़ुल्म हो रहा था और अब वर्तमान केंद्र की सरकार अल्पसंख्यकों, ख़ास कर सिक्खों को अपने ही देश में बेगानगी का एहसास करवा रही है, जिसकी एक बड़ी मिसाल चिरकालीन से उठ रही बंदी सिंघों की रिहाई की माँग को अनसुना करना है। सिक्ख कौम को कई पक्ष से समय-समय पर नीचा दिखाने की कोशिश प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से की जा रही है। नवम् पातशाह ने शरणागत आए लोगों का सहारा बन कर धर्म की आज़ादी के लिए अपनी शहादत दी थी। उसे भूल कर हाकिमों द्वारा अपनी मनमर्जी की जा रही है, जो कि अति निंदनीय घटनाक्रम है। अल्पसंख्यकों के ख़िलाफ़ फैलाई जा रही नफ़रत जहाँ देश को अस्थिरता के माहौल की तरफ ले जा रही है, वहाँ मानवाधिकारों का हनन भी हो रहा है।

विश्व स्तर पर आज जो मानवाधिकारों और विश्व-शान्ति की बात की जा रही है, उसका गुरबाणी में लगभग ५५० वर्ष पूर्व ही भरपूर मात्रा में वर्णन हो गया था। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने आज से ३५० वर्ष पूर्व धर्म की आज़ादी के अधिकार को जिंदा रखते हुए अपनी शहादत देकर इसे व्यवहारिक रूप से लागू कर दिया था। हमें ऐसे दीन-दयालु, परोपकारी सतिगुरु का ३५०वर्षीय शहीदी दिवस मनाते हुए उनके बताए मार्ग पर चलना चाहिए और सरकारों को भी गुरु साहिब की परोपकारी एवं अतुलनीय शहादत से प्रेरणा लेते हुए वर्षों से इन्साफ की माँग कर रही सिक्ख कौम की माँगों की तरफ ध्यान देना चाहिए।

'गुरमत ज्ञान' का यह विशेषांक श्री गुरु तेग बहादर साहिब, भाई मतीदास जी, भाई सतीदास जी तथा भाई दिआला जी की ३५०वर्षीय शहीदी शताब्दी और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के ३५०वर्षीय गुरुगद्दी दिवस को समर्पित करते हुए प्रकाशित किया जा रहा है। इस अंक में जहाँ पाठक वर्ग को गुरु साहिबान के जीवन से सम्बंधित जानकारी मिलेगी, वहाँ उनके द्वारा उच्चरित बाणी में उपस्थित सरोकार तथा उपदेशों से सम्बन्धित विवरण से अवगत होकर रूहानी आनंद मिलेगा।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब की प्रचार-यात्राओं का संक्षिप्त ब्यौरा

*–डॉ. आत्मा सिंघ**

श्री गुरु तेग बहादर साहिब का जन्म १ अप्रैल, १६२१ ई. (बैसाख वदी ५, १६७८ बिक्रमी) को पिता श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब तथा माँ माता नानकी जी के घर श्री अमृतसर साहिब में हुआ।

चौपई॥
संगति पाइ निदेस सिधाई।
मात नानकी बहु सुख पाई।
पाँच विसाख अहि जबै बितायो।
फर्क अंग सुखु भार जनायो॥१०७८॥[१]

श्री गुरु अरजन देव जी आपके दादा थे। आपका बचपन में नाम 'तिआग मल्ल' था। आप ईश्वर की भक्ति में रुचि रखते थे। आपका विवाह करतारपुर निवासी भाई लाल चंद की सुपुत्री माता गुजरी जी के साथ १५ आश्विन, १६८९ बि. को हुआ। सन् १६४४ में आप अपनी सुपत्नी और माता सहित बकाला गाँव में आ बसे। आप २० मार्च, १६६५ ई. को गुरुआई पर आसीन हुए।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने गुरुआई मिलने के बाद धर्म-प्रचार-यात्राएं आरंभ की और भूले-भटके लोगों का मार्गदर्शन करने के साथ-साथ सामाजिक तथा लोक-कल्याण के कार्यों को सफलापूर्वक किया।

पंजाब की यात्रा : श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने सर्वप्रथम श्री अमृतसर साहिब की यात्रा आरंभ की। बाबा बकाला से चलकर आप कालेके २ पहुँचे। गोइंदवाल होते हुए तरनतारन की यात्रा कर आप श्री अमृतसर साहिब पहुँचे। यहाँ आकर स्नान किया, विश्राम किया। पुजारियों ने आपको श्री हरिमंदर साहिब के अंदर न जाने दिया और दरवाज़े बंद कर दिए। उस समय प्रिथीचंद के पुत्र मेहरबान की पीढ़ी का श्री हरिमंदर साहिब पर कब्ज़ा था। गुरु जी कुछ समय श्री अकाल तख़्त साहिब के निकट ठहरे और बाद में वल्ला नामक गाँव आ गए। जब श्री अमृतसर साहिब की संगत को इस बात का पता चला तो उन्होंने वल्ला गाँव पहुंच कर गुरु जी से क्षमा-याचना की। वल्ला गाँव के बाद श्री गुरु तेग बहादर साहिब घुक्केवाली नामक गाँव पहुँचे। गुरु जी की कृपा से इस गाँव में गुरुद्वारा गुरु का बाग़ शोभित है।

तत्पश्चात् बाबा बकाला होते हुए गुरु जी कीरतपुर साहिब के लिए चल पड़े। रास्ते में आप करतारपुर ठहरे। चक्क गुरु (बंगा), नवांशहर,

* सहायक प्रोफेसर, बाबा अजय सिंघ खालसा कॉलेज, गुरदास नंगल, गुरदासपुर। फोन : ९८७८८-८३६८०

दुर्गापुर से होते हुए आप कीरतपुर साहिब पहुँचे। कीरतपुर साहिब निवास के दौरान आपने निकट ही माखोवाल गाँव में जमीन खरीद कर १९ जून, १६६५ ई. को 'चक्क नानकी' नामक नगर की स्थापना की।

"संवत् सत्तरां सौ बाईस असाढ मास की इक्कीस के दिहुं बाबा गुरदित्ता जी रंधावा के हाथ से सहोटे गाँव के रकबा में माखोवाल के थेह पर मोढ़ी गाडी। इस नए गाउं का नाम 'चक्क नानकी' राखा।[३]

बाद में इस नगर का नाम 'श्री अनंदपुर साहिब' प्रसिद्ध हुआ। यहाँ श्री गुरु तेग बहादर साहिब से सम्बन्धित गुरुद्वारा गुरु के महिल, गुरुद्वारा सीसगंज साहिब, गुरुद्वारा भोरा साहिब और गुरुद्वारा मंजी साहिब सुशोभित हैं।

मालवा क्षेत्र की यात्रा : श्री अनंदपुर साहिब से धमताण तक गुरु जी इन गाँवों-शहरों में से गुज़रे[४]—कीरतपुर साहिब, भरतपुर, घनौली, रोपड़, भट्ठा साहिब, मोरिंडा, टहलपुरा, सरहिंद, हरपालपुर, आकड़, नथाणा, मकारोंपुर, अनंदपुर, उगाणी, धरमगढ़, मंगवाल, उडनी, मनीमाजरा, हसनपुर, लंघ, भगड़ाणा, नौलखा, सैफाबाद, धरमगढ़, नरड़ू मोतीबाग पटियाला, सींभड़ों, अगोल, रोहटा, रामगढ़, गुणीके, दोदड़ा, आलोहरख, भवानीगढ़, ढोडे, फगूवाला, नागरा, करहाली, दिढ़बा, घनौड़ जट्टां, बाउड़ हाई, राजोमाजरा, मूलोवाल, सेखा, कट्टू, फरवाही, हंढ्याया, गुरुसर, धौला, जोगा अलीशेर, जोधेके, भन्देर, भोपाली, मौड़ कलाँ, भैणी बाघे की, घुंमण साबो के मोड़, डिक्ख, कुब्बे, टाहला साहिब, कोट गुरु बाजल, जस्सी, तलवंडी साबो की, मईसरखाना, बठिंडा, खीवा कलाँ, समाओ, भीखी, दलेओ, कणकवाल कलाँ, कोट धरमू, सूलीसर, बरा बछोआणा, गोबिन्दगढ़, गंढू, गॉग मूणक, गुरने कलाँ, लल्ह कलाँ, शाहपुर। धमताण वो स्थान है, जहाँ आप जी को कैद किया गया।[५]

हरियाणा की यात्रा : गुरु जी ने बाँगर क्षेत्र के निम्नलिखित स्थानों की यात्रा की— बसी पठाणा, चन्नणा, सोढल-सोढैल, तन्दोवाल, लखनौर, मकारपुर, कबूलपुर, ननहेड़ी, लहल, दुख निवारण, गढ़ी गुहला, भागल, करहाली, चीका, बुद्धपुर, सिआणा सैयदां, समाणा, कर्हा, बीबीपुर, पहोआ, खारक, खटकड़, जींद, लाखण माजरा, रोहतक, मकरोड़, खनौर, बहर जक्ख, कैंथल, बारना, थानेसर, झीउरहेड़ी, बनी, बदरपुर, करनाल, कड़ा मानकपुर, गढ़ी नज़ीर, रायपुर हेड़ी, तराउड़ी, खड़कपुरा आदि।[६]

पूरब की यात्रा : श्री गुरु तेग बहादर साहिब को प्रचार-यात्रा के दौरान ८ नवंबर, १६६५ ई. को बंदी बना कर दिल्ली लाया गया तो राजा मान सिंह ने गुरु जी को रिहा करवा लिया। इसके बाद गुरु जी राजा मान सिंह की हवेली में कुछ दिन ठहरे। बाद

में आप मथुरा, आगरा, इटावा, कानपुर, लखनऊ, फतेहपुर आदि शहरों से होते हुए इलाहाबाद में दिसंबर १६६५ ई. में पहुँच कर वर्तमान में गुरुद्वारा पक्की संगत नामक जगह पर दिसंबर १६६५ ई. से मार्च १६६६ ई. तक चार महीने रहे। इलाहाबाद के बाद मिर्जापुर होते हुए बनारस पहुँचे, जहाँ दो सप्ताह ठहरे। बनारस से सासाराम और बोध गया होते हुए मई, १६६६ ई. में पटना साहिब पहुँचे। आप अक्तूबर १६६६ ई. में ढाका पहुँचे। २२ दिसंबर, १६६६ ई. को जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का जन्म हुआ तो गुरु जी को भाई मिहर चंद तथा भाई कल्याण दास के माध्यम से यह सूचना ढाका में ही मिली। पटना से ढाका आप मुंगेर, भागलपुर, कोलगांव, राजमहल, संतनगर, माल्दा आदि होते हुए पहुँचे। ढाका से गुरु जी सिलहट गए, जहाँ पर चौमासा काटा। इसके बाद आप चिट्टागाउं पहुँचे, जहाँ १६६७ ई. के आखिर तक रहे। सन् १६६८ के जनवरी माह में आप फिर ढाका लौटे जहाँ निवास कर नाम-प्रचार किया।

ढाका से दिसंबर १६६८ ई. में राजा राम सिंह के साथ आसाम गए और फरवरी १६६९ ई. में ढुबरी पहुँचे। राजा चक्रध्वज सिंह के बुलावे पर गुरु जी गुहाटी, हजो एवं तेजपुर गए। गुरु जी अभी आसाम में ही थे जब ९ अप्रैल, १६६९ ई. को औरंगज़ेब का फरमान जारी हुआ कि ग़ैर-मुसलमानों के मंदिर गिरा दिए जाएँ। गुरु जी वापिस लौटे और ढाका कलकत्ता, मिदनापुर, बालेश्वर, रूपसा, कटक, भुवनेश्वर, जगन्नाथपुरी, विष्णुपुर, बांकुरा, गोमोह, गया के रास्ते पुन: पटना साहिब पहुँचे। परिवार को पंजाब लौटने के लिए कह कर आप गंगा के उत्तरी तट से जौनपुर, अयोध्या, लखनऊ, शाहजहाँपुर, मुरादाबाद होते हुए सन् १६७० ई. में दिल्ली पहुँचे, जहाँ आप कड़ामानकपुर, सढोल, बानिकपुर, रोहतक, तरावड़ी, बनी बदरपुर, मुनीरपुर, अजराना कलाँ, रायपुर होड़ी, झीवर हेड़ी, रोहड़ा, थानतीर्थ, डढ्ढी, बुद्धपुर, सिआणा सैयदां, थानेसर, कुरुक्षेत्र, बरना, सरस्वती, कैथल, पिहोवा, करा साहिब, चीका, भागल, गूल्हा, गढ़ी नज़ीर, समाणा आदि होते हुए सैफाबाद के रास्ते वापिस श्री अनंदपुर साहिब मार्च १६७१ ई. में पहुँचे।

श्री गुरु नानक देव जी के बाद श्री गुरु तेग बहादर साहिब की सबसे अधिक प्रचार-यात्राएं देखने को मिलती हैं, जो कि पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, आसाम और बंग्लादेश तक फैली हुई हैं। इन स्थानों पर गुरु जी के चरण-स्पर्श प्राप्त स्थान विद्यमान हैं, जो कि उनकी दैवीय हस्ती और परोपकार की भावना का प्रकटीकरण करते हैं। गुरु जी की इन यात्राओं का उद्देश्य मानवता को प्रभु-मुखी बनाना और सदाचारक जीवन-जाच की तरफ प्रेरित करना था। इसके साथ ही गुरु जी आम लोगों की जीवन के

साथ जुड़ी समस्याओं का भी समाधान करते हुए नज़र आते हैं, जैसे गुरु जी की प्रचार-यात्राओं से पता चलता है कि गुरु जी तालाब साफ़ कराने और कुएं खुदवाने में विशेष रुचि लेते थे। पानी की पूर्ति के लिए कुआँ खुदवाना एक बड़ा कार्य था, जो कि हर कोई नहीं कर सकता था। आम लोगों के लिए पानी की पूर्ति इन कुओं द्वारा ही होती थी। जिस गाँव में जो भी व्यक्ति कुआँ खुदवाने की इच्छा रखता था, गुरु जी उसे उत्साह और प्रेरणा प्रदान करते थे। नये कुएं खुदवाने के साथ-साथ पुराने कुओं के पानी को इस्तेमाल किए जाने के योग्य बनाने में गुरु जी का विशेष योगदान था।[८]

गुरु जी की प्रचार-यात्राओं के दौरान उनका क्षमा करने का गुण प्रमुखता के साथ उभर कर सामने आता है। जब किसी गाँव में गुरु जी का सम्मान नहीं होता या अभिमानाधीन कोई अपमान कर देता तो वे बिना कोई प्रतिक्रिया किए आगे चले जाते। जब उन गाँववासियों को अपनी गलती का एहसास होता तो वे गुरु जी से क्षमा-याचना के लिए उनके पीछे अगले गाँव तक जाते। गाँववासियों को उनकी गलती का एहसास हुआ देख कर गुरु जी उन्हें क्षमा कर देते।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी ने अपनी प्रचार-यात्राओं के दौरान शान्ति, एकता, सद्भावना, सेवा और सरबत्त के भले (सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय) का संदेश दिया। गुरु जी ने धर्म-संकीर्णता से ऊपर उठ कर सर्वसाझे धर्म अर्थात् मानवता, अहिंसा, दया, अमन और अखंडता के मार्ग पर चलने का संदेश दिया।

हवाला-सूची :

१. डॉ. किरपाल सिंघ (संपा.), श्री गुरप्रताप सूरज ग्रंथ में से श्री गुरु तेग बहादर साहिब का जीवन-वृत्तांत (भाग १), कृत महाकवि भाई संतोख सिंघ, धर्म प्रचार कमेटी, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब, २०१७, पृष्ठ १९.

२. गुरु तेग बहादर मार्ग, पंजाब, डॉ. सुखदयाल सिंघ, १९९७, पृष्ठ ३०

३. गुरु कीआं साखियां, भाई स्वरूप सिंघ कौशिश, २००३, पृष्ठ ७२

४. डॉ. किरपाल सिंघ (संपा.), श्री गुरप्रताप सूरज ग्रंथ में से श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी का जीवन-वृत्तांत (भाग ३) कृत महाकवि भाई संतोख सिंघ, धर्म प्रचार कमेटी, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब, २०१८, पृष्ठ १९

५. डॉ. किरपाल सिंघ (संपा.), श्री गुरप्रताप सूरज ग्रंथ में से श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी का जीवन-वृत्तांत (भाग १) २०१७, पृष्ठ ५२

६. उक्त, पृष्ठ ५५

७. उक्त, २०१८, पृष्ठ २६

८. डॉ. गुरप्रीत सिंघ, श्री गुरु तेग बहादर जी : जीवन, प्रचार-यात्रावां ते कारज, श्री गुरु तेग बहादर जी : जीवन-फलसफा ते शहादत, संपा. डॉ. महिल सिंघ, रवि साहित्य प्रकाशन, श्री अमृतसर साहिब, २०२१, पृष्ठ २१०

श्री गुरु तेग बहादर साहिब की विचारधारा

–डॉ. तारन सिंघ (दिवंगत)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के प्रथम स्वरूप, जिसे उस समय 'पोथी साहिब' कहा जाता था, की सम्पादना श्री गुरु अरजन देव जी ने गुरुद्वारा रामसर साहिब नामक स्थान (श्री अमृतसर साहिब) पर मुकम्मल की थी। बाद में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने उस 'पोथी साहिब' में श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी दर्ज करवाई और इसे 'गुरु' का दर्जा प्रदान कर 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब' नाम प्रदान किया। दसम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की अपनी बाणी का संग्रह 'दसम ग्रंथ' नाम से विख्यात है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में श्री गुरु तेग बहादर साहिब के ५९ पद और ५७ श्लोक दर्ज हैं। पदों को 'शब्द' कहा जाता है। 'शब्द' से तात्पर्य वह बाणी है, जिसमें गुरु साहिब परमात्मा और उसके हुक्म या निज़ाम से सम्बन्धित अपने जातीय अनुभव, जो उनके तजुर्बे पर आधारित हैं, बयान करते हैं। भारतीय दर्शन में 'शब्द' को 'मुख्य प्रमाण' माना गया है। जो 'ग्रंथ' महापुरुष अपने अनुभव और आध्यात्मिक तजुर्बे के आधार पर रचते हैं, वे 'शब्द' कहलवाते हैं। श्री गुरु तेग बहादर साहिब के शब्द श्री गुरु ग्रंथ साहिब के गउड़ी, आसा, देवगंधारी, बिहागड़ा, सोरठि, धनासरी, जैतसरी, टोडी, तिलंग, बिलावलु, रामकली, मारु, बसंत, सारंग और जैजावंती, पंद्रह रागों में दर्ज हैं। सोरठि राग में बारह शब्द दर्ज हैं। गउड़ी में नौ तथा शेष रागों में तीन-तीन, चार-चार शब्द हैं। आपके श्लोक श्री गुरु ग्रंथ साहिब के भोग की बाणी में अर्थात् अंतिम भाग में दर्ज हैं। श्लोक परंपरागत रूप से दो पंक्तियों या चार चरणों के हैं। श्लोक भी प्राचीन भारतीय काव्य-रूप हैं और पुरातन धार्मिक ग्रंथों में इस काव्य-रूप का साधारणतया प्रयोग हुआ है।

गुरबाणी का अंतिम लक्ष्य मानव-कल्याण है। भक्ति, प्रभु-मिलाप, मुक्ति आदि इसी लक्ष्य के सूचक हैं। श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी का केंद्रीय नुक्ता यह है कि मानव बंधन में है, क्योंकि वह आत्मिक तौर पर निर्बल हो गया है। उसका आत्मिक बल कमजोर हो गया है। अज्ञानता उसकी निर्बलता है। अज्ञानता में वह मन की इच्छा से काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार का शिकार है, ख़ुदगर्ज़ी में दुखी है, दर-दर की ग़ुलामी में जकड़ा हुआ है।

मानवीय जीवन के ये दोनों स्तर ही बाणी में माने गए हैं। कहीं इन्हें 'मनमुखि' और कहीं पर 'गुरमुखि' कहा गया है, कहीं पर बंधन और मुक्त कहा गया है, कहीं पर शाक्त और भक्त, मूर्ख और ज्ञानी कहा है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने बंधनों

में जकड़े मानव को फिर 'मुग्ध' (अज्ञानी) कहा है और परम पद, निर्भय पद, मुक्ति पद या निर्वाण पद पर पहुँचे हुए को 'ज्ञानी' कहा है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी का केंद्रीय भाव बंधन में जकड़े मानव को निर्भय-निर्वाण पद पर पहुंचाना है। उन्होंने दोनों तरफ का विश्लेषण किया है कि मानवीय बंधन क्या हैं, मानव क्यों बंधन में पड़ गया है और वह कैसे बलवान होकर बंधन-मुक्त हो सकता है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब का विश्लेषण यह है कि मानवीय बंधन का कारण अज्ञानी मन है। अगर इसे ज्ञान हो जाये तो यह भक्ति करेगा और बलवान हो जाएगा। अगर बलवान हो जाए तब यह बंधन-मुक्त होकर रहेगा। आओ, बंधन, मन, ज्ञान-अज्ञान, बल और मुक्ति आदि सिद्धांतों का विचार, श्री गुरु तेग बहादर साहिब के आशनुसार करते हैं :—

बंधन : मानव के बंधन का कारण अज्ञान है जिससे वह अपनी असली अवस्था, जो कि परमात्मा में लीन होना है, पर नहीं पहुँचता। परमात्मा के सभी गुणों की धारक शख्सियत का मालिक होना ही उसकी सम्पूर्णता वाली अवस्था है। इसके बिना वह अपूर्ण है, अधूरा है, निर्बल है। अपूर्णता दुख का कारण है, अतएव बंधन दुखदायी हैं। अपूर्णता के कारण ही जन्म-मरण है, आवागमन है। गर्भवास और मरण का त्रास दोनों दुख का रूप हैं :

बलु छुटकिओ बंधन परे कछू न होत उपाइ ॥
कहु नानक अब ओट हरि गज जिउ होहु सहाइ ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२९)

अज्ञानी और निर्बल मानव की भवितव्यता की तुलना श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने तेंदुए के जाल में फंसे हाथी के साथ की है। मानव कई अटूट तारों के जाल में उलझ गया है। तन का मोह उसका पहला बंधन है। कुटुंब का मोह उसका दूसरा बंधन है। अपने और कुटुंब के सुख की लालसा उसका तीसरा बंधन है। माया के मोह के कारण मन का फिसलना उसका चौथा बंधन है।

कुसंगति, मन की चंचलता, तथाकथ्य कर्म-धर्म में प्रवृत्त होना, दुख-सुख, हर्ष-शोक, स्तुति-निंदा, सोना-मिट्टी, विष-अमृत की दशा में डगमगाना अन्य बंधन हैं। इस दुर्दशा का कारण मन है। मन के रूप तथा वास्तविकता को न जानना अज्ञानता है। सबसे कठिन बंधन यह है कि उसे बंधन में से निकलने का उपाय भी कोई नहीं सूझता। कोई बंधन-मुक्त-जन, ज्ञानी पुरुष, गुरु, साधु ही किसी बंदी को बंधन-मुक्त कर सकता है। कोई बंदी किसी अन्य बंदी को मुक्त नहीं कर सकता। गुरु स्वयं मुक्त है।

मन : मन में काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की तरंगें उठती हैं। मन इनमें डगमगाता, भटकता और लटकता रहता है। उसे स्थिरता प्राप्त नहीं है। मन चंचल है, पारे की भांति अस्थिर है और यह दुखदायी अवस्था है। मन सुख-दुख, हर्ष-शोक, प्रशन्सा-निंदा की बदलती दशा के साथ ऊँचा-

नीचा होता रहता है। कभी खुशी में आकर आकाश को जा छूता है और कभी निराशा में पाताल में जा गिरता है। मन में ज़ोरदार झुकाव, प्रवृत्तियां, जज़्बे, एहसास, अहंकार उसे अचल, समान और स्थिर नहीं होने देते। वह अब कुछ और तथा पल भर में कुछ और होता है। यह दशा दुखदायी है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब, इसीलिए मन को साधने के लिए उत्साहित करते हैं :

साधो मन का मानु तिआगउ॥

कामु क्रोधु संगति दुरजन की ता ते अहिनिसि भागउ॥१॥रहाउ॥

सुखु दुख दोनो सम करि जानै अउरु मानु अपमाना॥

हरख सोग ते रहै अतीता तिनि जगि ततु पछाना॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २१९)

मन तृष्णा के अधीन है, जिस कारण चंचल है। इसका मूल प्रकृति है और इसमें माया के लिए तृष्णा है। प्रकृति के सभी गुण इसमें हैं, इसलिए यह तामसिक और राजसी रुचियों के अधीन है। कहीं सात्विक रुचियों में भी लग जाता है। चौथे पद में कभी विचरण नहीं करता। मन का काम क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार पर काबू पाना कठिन है। मन का वश में न रहना ही दुखों का कारण है।

मन अपनी महानता को भूले बैठा है। इसे न अपने लक्ष्य की समझ है, न दुर्लभ जन्म की सार है, न ही प्रभु का ज्ञान है, जो हर समय इसका संगी है। *''अंतरि बाहरि सदा संगि प्रभु ता सिउ नेहु न लावै॥''* भ्रम में पड़ना मन की कमज़ोरी है। इसका ज्ञान अधूरा है। इस भ्रम के कारण *"सुख कै हेति बहुतु दुखु पावत सेव करत जन जन की॥"*

मन माया के अधीन बावला हो जाता है, विवेक गंवा बैठता है। मन सदा यही चाहता है कि उसे जगत की शोभा प्राप्त हो। यह अच्छा होने का अभिमान करता है, प्रपंच करता है, लोगों को ठगता है, करता कुछ और है, प्रकट कुछ और करना चाहता है। "करि परपंचु जगत कउ डहकै अपनो उदरु भरे॥" नाम सेवा का लेता है, लालच अपना पूरा करता है। अंदर से कुछ और है, बाहर से कुछ और है।

मन की अज्ञानता का एक रूप यह है कि यह परगृह में खुशी महसूस करता है। *"पर दारा निंदिआ रस रचिओ राम भगति नहि कीनी॥"* घटिया वृत्ति वाला है। यूं कहें कि गलत मार्ग पर जल्दी चल पड़ता है। *"मुकति पंथु जानिओ तै नाहनि धन जोरन कउ धाइआ॥"* अंतर्मुखी नहीं, बहिर्मुखी है :

ना हरि भजओ न गुर जनु सेविओ नह उपजिओ कछु गिआना।।

घट ही माहि निरंजनु तेरै तै खोजत उदिआना॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६३२)

इसी तरह कई जन्म गुज़ार चुका है। इसका आवागमन खत्म नहीं होगा, जब तक यह अंतर्मुखी नहीं होगा और विवेक धारण नहीं करेगा।

ज्ञान और अज्ञान : मन की चंचलता, डगमगाती दशा का कारण इसका अज्ञान है। अज्ञान यह है कि जो सत्य है उसकी परवाह नहीं है, जो असत्य है उसे संजोने में लगा है। तन, कुटुंब-रचना, जगत सब असत्य है, सपने की भांति नाशमान है। जीव इन्हें सत्य जानकर इनका मोह करता है। ज्ञान है— सत्य की पहचान। सत्य और असत्य दोनों को जानना विवेक या ज्ञान है।

हरि की गति नहि कोऊ जानै॥
जोगी जती तपी पचि हारे अरु बहु लोग सिआने॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ५३७)

परमात्मा मनुष्य के निकट से भी अति निकट है। वह मनुष्य के अंदर है। वही जीवन है। इस बात का ज्ञान ही ब्रहम-ज्ञान है :

पुहप मधि जिउ बासु बसतु है मुकर माहि जैसे छाई॥
तैसे ही हरि बसे निरंतरि घट ही खोजहु भाई॥ १॥
बाहरि भीतरि एको जानहु इहु गुर गिआनु बताई॥
जन नानक बिनु आपा चीनै मिटै न भ्रम की काई॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६८४)

अज्ञान यह है कि सामने रचना नष्ट हो रही है, परन्तु फिर भी सभी इसे सत्य माने बैठे हैं। किसी ज्ञानी को ही समझ आई है :

काम क्रोध मोह बसि प्रानी हरि मूरति बिसराई॥
झूठा तनु साचा करि मानिओ जिउ सुपना रैनाई॥१॥
जो दीसै सो सगल बिनासै जिउ बादर की छाई॥
जन नानक जगु जानिओ मिथिआ रहिओ राम सरनाई॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २१९)

हुक्म और चिंता : ज्ञानी मनुष्य की अवस्था हुक्म में चलने वाली मानी गई है। ज्ञानी हुक्म, रजा में राज़ी रहता है। वह हर हाल में प्रभु के हुक्म को पहचानता है, मानता है :

सुखु दुखु दोनो सम करि जानै अउरु मानु अपमाना॥
हरख सोग ते रहै अतीता तिनि जगि ततु पछाना॥१॥
उसतति निंदा दोऊ तिआगै खोजै पदु निरबाना॥
जन नानक इहु खेलु कठनु है किनहूं गुरमुखि जाना॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २१९)
जो नरु दुख मै दुखु नही मानै॥
सुख सनेहु अरु भै नही जा कै कंचन माटी मानै॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६३३)

जीवन का प्रयोजन : ज्ञानी मनुष्य अपने जीवन के प्रयोजन का पता है। जीवन-अवसर बड़ा अमूल्य है। यही प्रभु-मिलाप की सीढ़ी है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने मानव-जन्म को अमूल्य, दुर्लभ रत्न कहा है। "फिरत फिरत बहुते जुग हारिओ मानस देह लही॥ नानक कहत मिलन की बरीआ सिमरत कहा नही॥" जीवन का एक-एक पल बहुमूल्य है। ज्ञानी मनुष्य जीवन को व्यर्थ नहीं जाने देता। वह हर पल भजन, सुमिरन में लगाता है :

—गुन गोबिंद गाइओ नही जनमु अकारथ कीनु॥

कहु नानक हरि भजु मना जिह बिधि जल कउ मीनु॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२६)

—राम भजु राम भजु जनमु सिरातु है॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३५२)

धर्म : ज्ञानी मनुष्य धर्म को पहचानता है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब के अनुसार धर्म तभी संभव है अगर मन पर नियंत्रण हो। औपचारिक साधन करने से मन का अहंकार बढ़ता है। यही मन की चंचलता है। धर्म तभी पूर्ण है, सफल है, अगर मन वश में आ जाये :

तीरथ करै ब्रत फुनि राखै नह मनूआ बसि जा को॥
निहफल धरमु ताहि तुम मानहु साचु कहत मै या कउ॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ८३)

बल और मुक्ति : लोगों को समय के हालात के अनुसार बलवान बनाना ही गुरु साहिबान का लक्ष्य था। बल आत्मिक दशा है, मात्र शरीर का भारी भरकम होना नहीं है। आत्मिक बल शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक बल को बढ़ाता है और स्थिर करता है, इसीलिए श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने भक्ति-बल पर जोर दिया है :

बलु होआ बंधन छुटे सभु किछु होत उपाइ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२९)

इसी भावना में "बलु छुटकिओ बधन परे" और "बलु होआ बंधन छुटे" के श्लोक हैं। यह बल धारण करने के लिए अपेक्षित शर्त श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने अपनी बाणी में स्पष्ट की है। जहाँ ज्ञान आ गया, वहां त्याग आयेगा। जहाँ त्याग आ गया, वहां बल आयेगा। जहाँ बल आयेगा, वहां आज़ादी आएगी। यही श्री गुरु तेग बहादर की विचारधारा है।

निश्चिंतता : उत्पत्ति है तो विनाश भी है। यही अटल नियम है। चिंता नहीं होनी चाहिए, क्योंकि शरीर, कुटुंब, धन, पदार्थ सभी नाशवान हैं :

जो उपजिओ सो बिनसि है परो आजु कै कालि॥
नानक हरि गुन गाइ ले छाडि सगल जंजाल॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२९)

जिंह घटि सिमरनु राम को सो नरु मुकता जानु॥
तिहि नर हरि अंतरु नही नानक साची मानु॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२८)

मुक्त मनुष्य किसी दर का मुहताज नहीं रहता। मुक्त मनुष्य माया, पदार्थ, संपत्ति, धन आदि के अधीन नहीं रहता। मुक्ति केवल प्रभु-नाम-सुमिरन से ही मिल सकती है। शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक उतराव-चढ़ाव पार कर ही मुक्ति मिलती है। मुक्त पद पर सामाजिक, राजसी, आर्थिक, बंधन नहीं होते। मुक्त मनुष्य आत्मिक मंडल का निवासी होता है।

नवम् गुरु की बाणी में मानव जीवन-आदर्श का उल्लेख

–डॉ. महीप सिंघ

श्री गुरु तेग बहादर साहिब के जीवन-आदर्श का एक पक्ष उनका जीवन और दूसरा पक्ष उनकी बाणी है। गुरु साहिब की बाणी में प्रकटीकरण की एक अति आकर्षक सरलता है, जो पाठक के साथ अपना सीधा और गहरा सम्बन्ध स्थापित कर लेती है।

श्री गुरु तेग बहादर साबिह की बाणी का रचना-पक्ष दो स्थितियों को समानांतर ढंग के साथ हमारे सामने रखता है। एक स्थिति है सांसारिक, जिसमें धन-दौलत के अलावा काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि मानसिक प्रवृत्तियां शामिल हैं। इस पक्ष को 'माया' का नाम दिया जा सकता है। दूसरी स्थिति वाहिगुरु-परमात्मा की है— जिसमें माया से मुक्ति, उससे उभर कर अकाल पुरख के साथ जुड़ने की बात को बार- बार दृड़ करवाया गया है। इस पक्ष को 'नाम' कहा गया है।

मानवीय संकट क्या है? संसार के सभी सम्बन्ध-रिश्ते, सभी सुख और आनंद प्रदान करने वाली वस्तुएँ मानव के लिए हैं। मानव साधक है और ये सभी वस्तुएं साधन हैं। ये वस्तुएं मानव को व्यापक बनाती हैं, उसे पूर्णता प्रदान करती हैं और उसके जीवन को सार्थक बनाती हैं। मगर होता क्या है? मानव अपने संबंधों, सुख-सुविधाओं का इतना दास बन जाता है कि ये सभी वस्तुएं उसके लिए न होकर, वह इन वस्तुओ के लिए हो जाता है। परिणाम यह निकलता है कि व्यापकता की जगह उसके हाथ में लघुता आती है, पूर्णता की बजाय वह खंड-खंड अधूरेपन का शिकार हो जाता है और सार्थकता से दूरस्थ होकर जीवन की निरर्थकता का बोझ ढोने लगता है। उसके सामने कोई बड़ा आदर्श नहीं रहता। सुख की खोज में वह कुत्ते की भांति द्वार-द्वार पर भटकता फिरता है। यदि उसे कुछ मिल जाए तो कंचन, कामिनी, छोटे-छोटे मान-अपमान सुख-दुख, हर्ष-शोक प्रशन्सा-निंदा में घिर कर रह जाता है।

गुरु साहिब अपनी बाणी द्वारा मानव को इन दोनों स्थितियों का सामना करवाते हैं और फिर 'माया' से उभर कर 'नाम' के साथ जुड़ने की प्रेरणा देते हैं।

गुरु साहिब का समकालीन समाज अपने बड़े जीवन-आदर्शों को भूल कर कंचन-कामिनी की सेवा में ही डूबा हुआ था। ऐसे व्यक्ति की मनोदशा प्रकट करते हुए उन्होंने कहा :

कहउ कहा अपनी अधमाई॥

उरझिओ कनक कामनी के रस नह कीरति प्रभ गाई ॥१ ॥ रहाउ ॥
जग झूठे कउ साचु जानि कै ता सिउ रुच उपजाई ॥
दीन बंध सिमरिओ नही कबहू होत जु संगि सहाई ॥१ ॥
मगन रहिओ माइआ मै निस दिनि छुटी न मन की काई ॥
कहि नानक अब नाहि अनत गति बिनु हरि की सरनाई ॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७१८)

इस एक शब्द से अनेक बातें उभर कर सामने आती हैं। माया के प्रपंच में फंसा हुआ मानव सोने और स्त्री के मोह में फंस कर रह जाता है, संसार की झूठी वस्तुओं को सत्य मान लेता है, क्योंकि वह रात-दिन माया में गलतान रहता है, इसी लिए उसके मन से अज्ञान की काई दूर नहीं होती। ऐसे इंसान के लिए हरि की शरण में आए बिना और कोई ठौर नहीं।

गुरु साहिब मानव को उसके मोह की छोटी-छोटी हदों से निकाल कर वाहिगुरु- नाम के व्यापक धरातल पर लाना चाहते हैं, जहाँ से वह अपने आप को, अपने समाज व चौगिर्दे को देख सके। मानव को वे जिस परमात्मा के साथ जोड़ना चाहते है, वह उसके अंदर बसी हुई सच्चाई है, जिसे वह अपनी संकुचित मोह-दृष्टि द्वारा भूला बैठा है। इसी लिए, उन लोगों के लिए, जो अपने आप को माया से मुक्त कर परमात्मा की खोज में वन में भटकने के लिए चले जाते हैं और अपने आप को एक दूसरे प्रकार की घेराबंदी में घेर लेते हैं, कहा कि उस परमात्मा को ढूँढने के लिए वन में जाने की ज़रूरत नहीं। वह तो आपके अंदर उसी तरह बसा हुआ है, जैसे फूल में सुगंध और शीशे में परछाईं। सबसे पहले अपने आप को पहचानो, क्योंकि अपने आप को पहचाने बिना भ्रम की छाया मिटती नहीं :

काहे रे बन खोजन जाई ॥
सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥
पुहप मधि जिउ बासु बसतु है मुकर माहि जैसे छाई ॥
तैसे ही हरि बसे निरंतरि घट ही खोजहु भाई ॥१ ॥
बाहरि भीतरि एको जानहु इहु गुर गिआनु बताई ॥
जन नानक बिनु आपा चीनै मिटै न भ्रम की काई ॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६८४)

मानव अपने आप को पहचान कर जिस वाहिगुरु के साथ जुड़ता है, वह गुणों की ख़ान है। गुरु साहिब उसके कुछ गुणों की तरफ इशारा करते हैं :

पतित उधारन भै हरन हरि अनाथ के नाथ ॥
कुह नानक तिह जानीऐ सदा बसतु तुम साथि ॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२६)

वह पतितों का उद्धार करने वाला है, भय का नाश करने वाला है और अनाथों का नाथ है। साथ

ही, वह सदा हमारे संग रहता है।

उस समय का समाज कैसा था? लोग कहीं हुकूमत द्वारा पतित किये जा रहे थे, और कहीं उस समाज की तरफ से भी, जो किसी तथाकथित नीची जाति के इंसान की परछाईं पड़ जाने से ही किसी को पतित मान लेता था। दूसरी बात, उस समाज में रहने वाला इंसान भय में था, डरा और सहमा हुआ था, अपने आप को अनाथ महसूस कर रहा था। गुरु साहिब ने कहा कि परमात्मा का संग हमें भय से मुक्त करता है।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने कहा कि कलियुग में हरि का नाम भयनाशक है, बुद्धि की मलिनता को नष्ट करता है। जो नाम-सुमिरन करते हैं, उनके सभी कार्य सफल होते हैं।

जब मानव के सामने कोई बड़ा आदर्श नहीं होता तो उस का सारा ध्यान किसी भी तरह से ज्यादा से ज्यादा दौलत इकट्ठी करने और उसे अपने परिवार पर ख़र्च करने में लग जाता है। ऐसा मानव माया के नशे में गलतान हुआ जवानी, धन तथा आत्मप्रशंसा के अलावा और कुछ नहीं देख सकता। वह सुख की तलाश करता हुआ दुख इकट्ठा करता है :

—मदि माइआ कै भइओ बावरो हरि जसु नहि उचरै॥
करि परपंचु जगत कउ डहकै अपनो उदरु भरै॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ५३६)

—बहु परपंच करि पर धनु लिआवै॥
सुत दारा पहि आनि लुटावै ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६५६)

—साधो इहु जगु भरम भुलाना॥
राम नाम का सिमरनु छोडिआ माइआ हाथि बिकाना॥१॥ रहाउ॥
मात पिता भाई सुत बनिता ता कै रसि लपटाना॥
जोबनु धनु प्रभता कै मद मै अहिनिसि रहै दिवाना॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६८४)

गुरु साहिब ने अपनी बाणी में माया में व्यस्त जिस मन या मानव की तसवीर खींची है, वह उस समय के समाज की ही तसवीर थी। वह ऐसा समाज था जिसके इंसान अपने निजी सुख की तलाश में लीन थे, और उच्च स्तर की सभी जिम्मेदारियों को भुला बैठे थे। लोग वेद-पुराण तो सुनते थे, उत्तम मार्ग क्या है यह भी जानते थे, मगर जीवन में उसका पालन नहीं करते थे और अपने दुर्लभ मानव जीवन को खराब कर रहे थे :

बेद पुरान साध मग सुनि करि निमख न हरि गुन गावै॥१॥ रहाउ ॥
दुरलभ देह पाइ मानस की बिरथा जनमु सिरावै ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २२०)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी में संसार की नश्वरता का स्वर मुख्य है। इस नश्वरता के अनेक पहलू हैं। उनके सामने बात यह नहीं थी कि यह संसार झूठा है, इसलिए मानव को सच्चाई

ढूँढने के लिए इसे छोड़ देना चाहिए या संसार से उपराम हो जाना चाहिए। उनके सामने जो समाज था वह सांसारिक सुखों की दौड़भाग में इस कद्र डूबा हुआ था कि उसे यह बताना अति आवश्यक था कि जीवन में बड़े आदर्शों के अलावा यह सब कुछ व्यर्थ है। एक तरफ़ हुकूमत के साथ जुड़े हुए इंसान थे, जो अपनी ताकत के नशे में किसी को कुछ मानते नहीं थे और यह समझते थे जैसे वे सदा के लिए हुकूमत करने का पटा लिखा कर लाए हों। ऐसे लोगों के लिए उन्होंने कहा कि इस संसार में राम और रावण जैसे शक्तिमान पुरुष नहीं रहे, जिनका इतना बड़ा परिवार था, फिर आपको अहंकार किस बात का है? पृथ्वी का शासन तो सपने की तरह तथा रेत की दीवार की भांति है।

रामु गइओ रावनु गइओ जा कउ बहु परवारु ॥
कहु नानक थिरु कछु नही सुपने जिउ संसारु ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२९)

सुपने जिउ धनु पछानु काहे परि करत मानु ॥
बारू की भीति जैसे बसुधा को राजु है ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३५२)

दूसरी तरफ़ वे लोग थे जो जीवन के मोह और लालसाओं में इस कद्र डूबे हुए थे कि वे हर प्रकार का अपमान सहते हुए सम्मान को पूरी तरह से भुला बैठे थे। ऐसे समाज को अपने वजूद का एहसास करवाना था, उसमें आत्मविश्वास पैदा करना था। इसके लिए लोगों को संसार के छोटे-छोटे लालच से ऊपर उठाना था। उन्हें यह समझाया जाना भी ज़रूरी था कि जिस नाशवान शरीर को बचाने के लिए वे हर तरह की हरकतें कर रहे हैं, वह सदास्थिर नहीं।

गुरु साहिब ने कभी भी संसार का त्याग कर सन्यासी बनने का उपदेश नहीं दिया। वे संसार में रहते हुए सांसारिक जिम्मेदारियों को निभाते हुए और श्रम करते हुए जीवन व्यतीत करने के लिए कहते हैं। जब वे कहते हैं कि संसार झूठा है तो उनका इशारा उस सांसारिकता या माया की तरफ होता है, जिसमें उलझ कर मानव अपने व्यापक कर्त्तव्यों को भूल जाता है।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब मानव को उस मानसिक स्तर पर लाना चाहते हैं, जहाँ से वह हर प्रकार का त्याग कर सके, बलिदान कर सके। यह अवस्था तब आती है, जब वह दुख में दुख नहीं मानता, सुख-स्नेह की इच्छा नहीं करता, भय-मुक्त रहता है। सोने को मिट्टी के समान समझता है। निंदा, स्तुति, लोभ, मोह, अहंकार से ऊपर उठ जाता है। न उसे हर्ष प्रभावित करता है, न ही शोक। उसे निजी मान-अपमान की चिंता नहीं रहती। वह सभी सांसारिक आशाओं से आज़ाद हो जाता है। काम-क्रोध उसे स्पर्श नहीं कर सकते। उसके हृदय में माया की जगह ब्रह्म का निवास हो जाता है।"

जो नरु दुख मै दुखु नही मानै ॥
सुख सनेहु अरु भै नही जा कै

कंचन माटी मानै ॥१॥ रहाउ ॥
नह निंदिआ नह उसतति जा कै लोभु मोहु अभिमाना ॥
हरख सोग ते रहै निआरउ नाहि मान अपमाना ॥१॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६३३)

गुरु साहिब अकाल पुरख की शक्ति, जो मानव के अपने अंदर की शक्ति है, पर भरोसा रखने पर ज़ोर देते हैं। जीवन में एक वक्त ऐसा आ जाता है जब मानव अनुभव करता है कि :

—चिंता ता की कीजीऐ जो अनहोनी होइ ॥
इहु मारगु संसार को नानक थिरु नही कोइ ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२९)

— चेतना है तउ चेत लै निसि दिनि मै प्रानी ॥
छिनु छिनु अउध बिहातु है फूटै घट जिउ पानी ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७२६)

बल छूट गया है, उस पर अनेक बंधन पड़ गए हैं और उसके पास कोई उपाय नहीं रह गया है। अपने एक दोहरे में वे इसी तरह की मनोदशा का चित्र-चित्रण करते हैं :

—बलु छुटकिओ बंधन परे कछू न होत उपाइ ॥
कहु नानक अब ओटि हरि
गज जिउ होहु सहाइ ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२९)

फिर वे खुद ही इस मनोदशा का समाधान करते हुए कहते हैं :

बलु होआ बंधन छुटे सभु किछु होत उपाइ ॥
नानक सभु किछु तुमरै हाथ मै तुम ही होत सहाइ ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२९)

मानव के जीवन में एक समय ऐसा आता है, जब सभी संगी-साथी उसे बेसहारा छोड़ जाते हैं :

संग सखा सभि तजि गए कोऊ न निबहिओ साथि ॥
कहु नानक इह बिपति मै टेक एक रघुनाथ ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२९)

ऐसी दशा में वे मानव को अकाल पुरख की शक्ति का भरोसा और आश्वासन देते हुए कहते हैं :

नामु रहिओ साधू रहिओ रहिओ गुरु गोबिंदु ॥
कहु नानक इह जगत मै किन जपिओ गुर मंतु ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२९)

'निर्भय पद' प्राप्त करने का एकमात्र उपाय है कि मानव अपने मन में माया की जगह नाम को स्थान दे :

राम नामु उर मै गहिओ जा कै सम नही कोइ ॥
जिह सिमरत संकट मिटै दरसु तुहारो होइ ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२९)

'निर्भय पद' को प्राप्त मानव साधना और शहीदी के मार्ग पर बेफिक्र होकर चल पड़ता है। न वह किसी से डरता है और न ही किसी को डराता है :

भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥
कहु नानक सुनि रे मना गिआनी ताहि बखानि ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२७)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी में वैराग्य-भावना का उल्लेख

–डॉ. रतन सिंघ (जग्गी)
–डॉ. गुरशरन कौर (जग्गी)

आध्यात्मिक तौर पर चेतन व्यक्ति के जीवन का मुख्य उद्देश्य है— परमात्मा को प्राप्त करना या उसमें लीन होना। मायावी प्रपंच में घिरा हुआ व्यक्ति अपने सीमित व्यक्तित्व की हदबंदियों को पार कर परम-तत्व में मिलने के लिए सदा यत्नशील रहता है। परंतु, ऐसा कर सकना सरल नहीं है। इसके लिए वैराग्य की भावना को विकसित करना अति ज़रूरी है। वही व्यक्ति इस मायाजाल को काट सकता है जो अपने मन को वश में कर लेता है, अपने जीवन-लक्ष्य से सम्बन्धित स्पष्ट होता है और अपने मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए दृढ़ संकल्पित होता है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने वैराग्य की भावना को विकसित करने वाले को भाग्यशाली कहा है :

जिहि बिखिआ सगली तजी लीओ भेख बैराग॥
कहु नानक सुनु रे मना तिह नर माथै भागु॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२७)

माया अथवा मायाजाल क्या है? असत्य को सत्य मान लेना ही 'माया' है। माया का स्वरूप बहुत विशाल है। यह एक ऐसी ठगमूरी है जिसका सेवन करके सभी मदहोश हो जाते हैं। यह ऐसी सर्पनी है जो मनुष्य के सारे कर्मफल को नष्ट कर देती है। इसका स्वभाव व्यभिचारी है। शंकर के अनुसार, अगर परमार्थिक सत्ता एक है तो संसार की सृष्टि, वास्तव में, सृष्टि नहीं है। ईश्वर अपनी माया-शक्ति के माध्यम से संसार का इंद्रजाल बुनता है। फलस्वरूप वह एक होते हुए भी अनेक रूपों वाला दिखाई देता है। इसका कारण 'अज्ञान' है। अज्ञान के न रहने पर परमात्मा की अनेकता का भ्रम भी ख़त्म हो जाता है। यह अज्ञान अथवा मिथ्या ज्ञान, वास्तव में भ्रम है जिसे 'अध्यास' भी कहा जा सकता है। अवस्तु में वस्तु का आरोप 'मिथ्या ज्ञान' है। यही अध्यास है। गुरबाणी में इसे परमात्मा द्वारा सृजित नशे का एक गोला माना गया है जिसके सेवन से प्राणी सुधबुध भूल जाता है :

अमलु गलोला कूड़ का दिता देवणहारि॥
मती मरणु विसारिआ खुसी कीती दिन चारि॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १५)

मनुष्य आत्म-स्वरूपी स्थिति के समय

माया से मुक्त है। उसका मन प्रकाशयुक्त है। जब वह अपने अस्तित्व का एहसास कर आत्म-स्वरूपी स्थिति से गिरता है तो मन में अंधकार पसर जाता है। यह अंधकार ही अज्ञान है और इसी को मायावी प्रभाव कहा जा सकता है। इस प्रभाव के अधीन होने पर मनुष्य अपने वास्तविक स्वरूप को भूल जाता है। वह माया-संचालित संसार में विचरण करता है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब का कथन है :

—माइआ कारनि धावही मूरख लोग अजान॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२७)

—निसु दिनु माइआ कारने प्रानी डोलत नीत॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२७)

गुरबाणी के अनुसार जब तक जिज्ञासु अंधकारमय मन को नहीं मारता, तब तक माया के प्रभाव को नष्ट नहीं कर सकता— "न मनु मरै न माइआ मरै॥" श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने भी बताया है कि अपने मूल रूप को पहचाने बिना माया द्वारा फैलाए भ्रम का नाश नहीं होता :

—मगन रहिओ माइआ मै निस दिनि छुटी न मन की काई॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७१८)

—जन नानक बिनु आपा चीनै मिटै न भ्रम की काई॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६८४)

मायावी प्रपंच में साधक के फंसे रहने का मूल कारण मन है, इसलिए इसे साधने के लिए गुरबाणी में बहुत बल दिया गया है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने आधी से अधिक अपनी बाणी मन को संबोधित की है। यहाँ तक कि "सुनि रे मना", "हरि भजु मना" आदि उक्तियाँ उनका तकियाकलाम बन गया है। वैराग्य की भावना को विकसित करने के लिए चंचल मन को संयम में लाना अति आवश्यक है। जब तक मन माया के चक्रव्यूह का भेदन नहीं करता, तब तक वैराग्य की भावना पैदा नहीं हो सकती। मन को साधने की धार्मिक शिक्षा में विशेष प्रेरणा दी गई है।

मन मनुष्य के शरीर में स्थित एक अदृश्य शक्ति है, जिसके माध्यम से उसे दुख-सुख, संकल्प-विकल्प, रुचि-अरुचि, मित्रता-शत्रुता सद्भावना-दुर्भावना आदि का अनुभव होता है। भारतीय धर्म और दर्शन-ग्रंथों में मन के प्रति विस्तार सहित चर्चा हुई है। मन के विकार को 'मानसिक रोग' कहा जाता है। मनोविकारों की संख्या अनन्त है। इनमें से छ: तो बहुत ही असाध्य हैं, जैसे काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और घृणा। मन इंद्रियों के साथ संयुक्त होकर जीव को विषयों का भोग कराता है। मन को काबू करने से ही उसके विकार ख़त्म होते हैं। मन को काबू करने के दो प्रकार हैं— एक, शरीर की मौजूदगी में मन को काबू करना और

दूसरा, शरीर के नष्ट होने पर मन को मारना। इन्हें क्रमश: 'स्वरूप मन मारन' और 'अरूप मन मारन' कहा जाता है। पहले साधन के द्वारा जीवन-मुक्त अवस्था प्राप्त होती है और दूसरे साधन के द्वारा विदेह मुक्ति मिलती है। गुरबाणी 'स्वरूप मन मारन' के लिए आदेश देती है।

सारी गुरबाणी मन के स्वरूप, शक्ति और सामर्थ्य को चित्रित कर उसे वश में करने पर बल देती है। इस पर विजय प्राप्त करना जगत को जीतने के समान है। मन के, वास्तव में दो रूप हैं— प्रकाशमय मन और अंधकारमय मन। पहला रूप वासना-मुक्त है और दूसरा वासना-युक्त। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने वासना-युक्त मन के बारे में ही अधिक बात कर उसके अनियंत्रित स्वरूप को खोला है, जैसे :

—साधो इहु मनु गहिओ न जाई॥
चंचल त्रिसना संगि बसतु है या ते थिरु न रहाई॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २१९)

—माई मनु मेरो बसि नाहि॥
निस बासुर बिखिअन कउ धावत किहि बिधि रोकउ ताहि॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६३२)

यहाँ पर गुरु जी ने अपने मन के अनियंत्रितपन का जो वर्णन किया है, यह उनकी विनम्रता का प्रदर्शन है। इस ढंग से उन्होंने अपने अनुयायियों के मन की स्थिति के साथ-साथ अपने मन की स्थिति का सामंजस्य स्थापित किया है। वासना-युक्त मन को श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने संबोधित कर वासना-मुक्त स्थिति की तरफ यात्रा करने के लिए बार-बार समझाया है। इस सारी प्रक्रिया के लिए उपदेशात्मक शैली इस्तेमाल की गई है। ये उपदेश मन को सद्कर्मों में प्रवृत्त होने, बुरे कर्मों का त्याग करने और वास्तविक कर्त्तव्य को पहचानने के लिए दिए गए हैं, जैसे :

—मन रे कहा भइओ तै बउरा॥
अहिनिसि अउध घटै नही जानै भइओ लोभ संगि हउरा॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २२०)

—रे मन ओट लेहु हरि नामा॥
जा कै सिमरनि दुरमति नासै पावहि पदु निरबाना॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९०१)

जब तक मन विषय-वासनाओं के अधीन है तब तक आध्यात्मिक विकास संभव नहीं। फलस्वरूप मन को मारना अथवा साधना बहुत ज़रूरी है। अंधकारमय मन को साधने अथवा मारने के लिए श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने कई सुझाव दिए हैं। ये सुझाव मन को ही संबोधित हैं, जैसे :

रे मन राम सिउ करि प्रीति॥
स्रवन गोबिंद गुनु सुनउ अरु गाउ रसना गीति॥१ रहाउ॥
करि साधसंगति सिमरु माधो होहि पतित पुनीत॥

कालु बिआलु जिउ परिओ डोले मुखु पसारे मीत॥१॥
आजु कालि फुनि तोहि ग्रसि है समझि राखउ चीति॥
कहै नानकु रामु भजि लै जातु अउसरु बीत॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६३१)

मन को साधने के पश्चात् ही उसकी चंचलता और सांसारिक पदार्थों के प्रति लगाव ख़त्म होता है। इसके बाद ही वैराग्य का सच्चा भाव विकसित होता है।

शरीर के संपर्क में आने से, मायावी प्रभाव के कारण जीवात्मा में दैत्य-भावना पैदा होती है। यही व्यक्ति के अहंकार का कारण है। इस दैत्य-बुद्धि को दूर करने से ही वैराग्य की भावना को विकसित किया जाता है। श्री गुरु नानक देव जी ने कहा है— "दुबिधा विचि बैरागु न होवी जब लगु दूजी राई॥" दुविधा को दूर करने के तीन उपाय हैं— एक संसार को विवेक बुद्धि के द्वारा मिथ्या समझना। दूसरा, संसार के प्रति उपरामता की भावना विकसित करना और तीसरा, नाम-सुमिरन के द्वारा मन को परमात्मा की तरफ मोड़ना अर्थात् भक्ति में लीन होना। मध्य युग के संतों, साधुओं, भक्तों ने चाहे नाम-सुमिरन अथवा भक्ति को सर्वश्रेष्ठ उपाय माना है, लेकिन विवेक बुद्धि तथा संसार के प्रति उपरामता, ये दोनों तीसरे उपाय के सहायक या मूलभूत उपाय हैं। ये भक्ति-मार्ग पर चलने के प्रथम पड़ाव हैं। इन दोनों का सामुच्चय ही वैराग्य है। यह वैराग्य न आत्म-त्याग वाला है, न कर्म-विहीन है और न ही सन्यासी वृत्ति वाला है। इसे निवृत्ति मार्गी वैराग्य भी नहीं कहा जा सकता। यह तो मनुष्य की वह सहज वृत्ति है जिस कारण माया-युक्त संसार में रहते हुए भी वह इसके प्रभाव से मुक्त है। यह वैराग्य-वृत्ति सांसारिकता से पलायन नहीं, निर्लेपता है।

व्यवहार में वैराग्य दो रूपों में सामने आया है। एक रूप तो वह है जिसमें व्यक्ति अपना सब कुछ छोड़ कर वनवासी हो जाता है। गुरबाणी में इस प्रकार के वैराग्य का खंडन किया गया है, क्योंकि यह मात्र दिखावा है, दिल से उत्पन्न वैराग्य नहीं। श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी में भी वैराग्य के इस रूप का विरोध हुआ है। उनके अनुसार वैराग्य सांसारिक प्रपंच से हट कर जंगलों में भटकने से प्राप्त नहीं होता, क्योंकि जिस परमात्मा की प्राप्ति की इच्छा है, वह तो फूल में समाई खुशबू और दर्पण में समाई परछाईं की तरह मानव के हृदय में ही सदा उपलब्ध है :

काहे रे बन खोजन जाई॥
सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई॥१॥रहाउ॥

पुहप मधि जिउ बासु बसतु है मुकर माहि जैसे छाई॥
तैसे ही हरि बसे निरंतरि घट ही खोजहु भाई॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६८४)

वैराग्य का दूसरा रूप है— गृहस्थ में ही निर्लिप्त भाव के साथ रहना और हृदय से सभी वासनाओं का त्याग कर हरि के साथ जुड़ना। गुरबाणी (आसा माहि निरासु रहीजै) और श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी (आसा मनसा सगल तिआगै जग ते रहै निरासा) में इस प्रकार के वैराग्य का प्रतिपादन हुआ है।

जन्म-जन्मांतरों से संजोए संस्कारों के कारण मनुष्य के मन में वैराग्य की भावना को जगाना सरल नहीं है। सर्वप्रथम मोह-माया में ग्रस्त जीव को सांसारिकता का सही रूप दिखाना है। सांसारिक प्रपंच मिथ्या है, यह बात मनुष्य के मन में बसानी है तभी वह इसके प्रति उपराम होकर धर्माचरण में लीन हो सकता है। जैसे-जैसे धर्माचरण दृढ़ होता जाएगा, वैसे-वैसे वैराग्य की भावना का विकास होता जाएगा। इसके लिए सर्वप्रथम मिथ्या तत्व का ज्ञान कराना ज़रूरी है। स्पष्ट है कि वैराग्य की प्राप्ति के लिए ज्ञान अथवा विवेक का सहारा लिए बिना मंजिल पर नहीं पहुँचा जा सकता। फलस्वरूप सर्वप्रथम इस तथ्य का ज्ञान होना ज़रूरी है कि संसार का सारा खेल, समूचा व्यवहार सपने की भाँति है, नश्वर है। गुरबाणी में व्यवहारिक रूप से संसार को चाहे सत्य मान लिया गया है, जैसे *"सचे तेरे खंड सचे ब्रहमंड॥" "इह जगु सचै की है कोठड़ी सचे का विचि वासु॥" साचा खेलु तुम्हारा॥"* ऐसे में विवेक बुद्धि के साथ इन उद्धारणों को समझना ज़रूरी है। इससे सम्बन्धित किसी नुक्ते पर पहुँचने के लिए समूची गुरबाणी की अंतर-दृष्टि को समझने की ज़रूरत है। अगर जगत सचमुच सच्चा होता तो गुरबाणी में उसे झूठा, मिथ्या, नाशवान न कहा जाता। गुरबाणी में किसी प्रकार का कोई अंतर-विरोध नहीं। जगत को सच्चा और झूठा दोनों तरह का मान लेने से अंतर-विरोध का एहसास होता है और इस तरह अद्वैत और विशिष्टाद्वैत दोनों सिद्धांतों का मिश्रण हो जाता है। गुरबाणी अद्वैतवाद के सहजीकृत रूप को पेश करती है, जिसके अनुसार परम सत्ता केवल एक निराकार परमात्मा ही है, अन्य कोई नहीं। परम सत्ता ही सच्ची है, बाकी सब नाशवान है। दृष्टमान जगत भी अपने अस्तित्व का स्पष्ट एहसास करा रहा है, इसलिए वह भी सत्य है। वैसे यह ऐसा सत्य नहीं जैसा परमात्मा है। फलस्वरूप इसे व्यवहारिक सत्य कहा जा सकता है, परमार्थक नहीं, क्योंकि व्यवहारिक सत्य काल द्वारा शासित है, इसलिए परिवर्तनशील है, अस्थाई

है। जब गुरबाणी में संसार की सत्यता की बात होती है तो इससे तात्पर्य संसार की व्यवहारिक सत्यता है। वैसे गुरबाणी का वास्तविक दृष्टिकोण संसार की नश्वरता वाला है। इसी प्रवृत्ति के अधीन श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने संसार को नश्वर माना है। यह गुरबाणी की विचारधारा का ही विस्तरण है। यह अलग बात है कि युगीन परिस्थितियों के अनुरूप श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी में यह बात अधिक प्रकट हुई है।

ध्यान लगाने की प्रक्रिया के मूल में वैराग्य की भावना का विशेष स्थान है, क्योंकि दुविधा में वैराग्य की भावना पैदा नहीं हो सकती। गुरमति की इसी विचार-परंपरा में श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने संसार को नश्वर माना है।

इस बात को स्थापित करने के लिए गुरु जी ने दो युक्तियों का इस्तेमाल किया है। एक युक्ति के द्वारा गुरु जी ने संसार को सीधे ही नश्वर अथवा मिथ्या माना है। इसे साधारण युक्ति कहा जा सकता है, जैसे :

—राम नाम बिनु मिथिआ मानो सगरो इहु संसारा॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७०३)

—जग झूठे कउ साचु जानि कै ता सिउ रुच उपजाई॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७१८)

दूसरी युक्ति प्रतीक-योजना की है। अलग-अलग प्रतीकों का इस्तेमाल कर जगत की नश्वरता की स्थिति का ज्ञान कराया गया है। इन प्रतीकों में से मृग-तृष्णा, स्वप्न, बादर की छाई, पेखना, बालू की दीवार, बुदबुदा आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं, जैसे :

—म्रिग त्रिसना जिउ झूठो इहु जग देखि तासि उठि धावै॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २१९)

—सगल जगतु है जैसे सुपग बिनसत लगत न बार॥
बारू भीति बनाई रचि पचि रहत नही दिन चारि॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६३३)

—इहु जगु धूए का पहार॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११८६)

—जो दीसै सो सगल बिनासै जिउ बादर की छाई॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २१९)

जब संसार की वास्तविकता स्पष्ट हो जाती है तो उसके प्रति उपरामता का पैदा होना स्वाभाविक हो जाता है। गुरु जी ने संसार के प्रति उपरामता को और दृढ़ कराने के लिए इसकी प्रत्येक वस्तु, संपत्ति, सखा, मित्र आदि के नश्वर होने की घोषणा की है :

—दारा मीत पूत रथ संपति धन पूरन सभु मही॥
अवर सगल मिथिआ ए जानउ भजनु रामु को सही॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६३१)

—कां को तनु धनु संपति कां की का सिउ नेहु लगाही॥
जो दीसै सो सगल बिनासै जिउ बादर की

छाही॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १२३१)

वास्तव में, यह सब कुछ तब तक ही कुछ अर्थ रखता है जब तक शरीर में प्राण हैं। जब प्राण निकल जाते हैं तो निकट सम्बंधी भी जल्दी से जल्दी त्यागने का यत्न करते हैं। यह जगत का चलन है, कोई नयी बात नहीं। युगों-युगांतरों से इस चलन का अनुभव किया जा रहा है। इस सबके बावजूद मनुष्य सांसारिक प्रपंच में लीन है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने चेतावनी दी है कि जगत के सभी सम्बन्धों की स्थापित विधि को ध्यान में रख कर अपने परम पुरुषार्थ से मनुष्य को चूकना नहीं चाहिए :

सब किछु जीवत को बिवहार॥
मात पिता भाई सुत बंधप अरु फुनि ग्रिह की नारि॥ १ ॥रहाउ॥
तन ते प्रान होत जब निआरे टेरत प्रेति पुकारि॥
आध घरी कोऊ नहि राखै घर ते देत निकारि॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ५३६)

वैराग्य-भावना के विकसित होने की स्थिति केवल मानव-जन्म में पैदा हो सकती है अन्य किसी जन्म में नहीं। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने अपनी बाणी में परमसति की प्राप्ति मानव-जन्म में ही संभव बताई है। मानव-जन्म एक ही बार मिलता है, इसलिए इस जन्म में मुक्ति का उपाय करना अति आवश्य है :

फिरत फिरत बहुते जुग हारिओ मानस देह लही॥
नानक कहत मिलन की बरीआ सिमरत कहा नही॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६३१)

स्पष्ट है कि श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने वैराग्य की भावना के लिए मानव-जन्म लाज़िमी तत्व माना है। जब इस जन्म का इतना अधिक महत्व है तो मानव को सावधानीपूर्वक इसका प्रयोग करना चाहिए। इस जन्म के बीत जाने के बाद परम-पद की प्राप्ति असंभव है। क्षण-क्षण कम हो रही जीवन-अवधि को सार्थक करने के लिए गुरु जी ने ताकीद की है :

प्रानी नाराइन सुधि लेहि॥
छिनु छिनु अउध घटै निसि बासुर ब्रिथा जातु है देह॥ १ ॥ रहाउ॥
तरनापो बिखिअन सिउ खोइओ बालपनु अगिआना॥
बिरधि भइओ अजहू नही समझै कउनु कुमति उरझाना॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९०२)

जो व्यक्ति आध्यात्मिक तौर पर चेतन होकर मानव-जन्म का सदुपयोग करता है, वह संसार-सागर से पार हो जाता है। इस प्रकार के वैराग्य की भावना मानव के स्वरूप अथवा व्यक्तित्व को बिल्कुल बदल देती है। उसके लिए दुख-सुख, मान-अपमान, हर्ष-शोक, प्रशंसा-निंदा सब एक समान हो जाते हैं। वह संसार में विचरण करता हुआ इसके मायावी

प्रभाव से अप्रभावित रहता है। ऐसे मनुष्य के हृदय में श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने ब्रह्म का निवास माना है :

जो नरु दुख मै दुखु नही मानै॥
सुख सनेहु अरु भै नही जा कै कंचन माटी मानै ॥. . .
आसा मनसा सगल तिआगै जग ते रहै निरासा॥
कामु क्रोधु जिह परसै नाहनि तिह घटि ब्रहमु निवासा॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६३३)*

सांसारिक प्रपंच से उपराम रहने वाले को कोई लोभ-लालच प्रभावित नहीं कर सकता। उसका जीवन-उद्देश्य मानव-कल्याण करना बन जाता है। वह न किसी से डरता है, न किसी को डराता है। वह अन्याय के आगे भी नहीं झुकता, न उसे स्वीकार करता है। वह बड़ी से बड़ी कुर्बानी देने के लिए तैयार हो जाता है। उसके लिए जीवन का मोह और सांसारिक सम्बन्ध कुछ अर्थ नहीं रखते। श्री गुरु तेग बहादर साहिब के सामने ऐसी ही स्थिति पैदा हो गई थी। वे धर्म-परिवर्तन द्वारा किये जा रहे अन्याय को स्वीकार न कर सके। कश्मीर के ब्राह्मणों के संकट को दूर करने के लिए उन्होंने शहीदी देने से ज़रा भी संकोच न किया, क्योंकि वे ऐसी अवस्था तक पहुँच चुके थे, जहाँ सांसारिक मोह-माया की प्रभावी सीमाएं ख़त्म हो जाती हैं। ऐसी अवस्था में पहुँचे व्यक्ति को ही उन्होंने 'ज्ञानी' नाम दिया है :

भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन॥
कहु नानक सुनि रे मना गिआनी ताहि बखानि॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२७)

वैराग्य की भावना कोई भावुक अवस्था नहीं, न ही मन में उभरी कोई क्षण भर की तरंग है। यह तो ब्रह्म-ज्ञान के मार्ग का मार्गी बनने के लिए लिया गया हलफ़ है, जिसकी पालना ब्रह्मी अवस्था की प्राप्ति तक निरंतर करनी होती है और जीवनपर्यंत संतुलन को बनाए रखना होता है। इस हलफ़ की सम्पन्नता गुरु जी के अनुसार नश्वर शरीर की आहूति देकर धर्म की स्थापना में देखी जा सकती है। यहाँ शीश की बजाय धीर को प्राथमिकता दी गई है। यहाँ शीश नश्वर शरीर का बोधक है और धीर वैराग्य की परम पराकाष्ठा का सूचक है :

धरम हेत साका जिनि कीआ॥
सीसु दीआ पर सिररु न दीआ॥ (बचित्र नाटक)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब का दर्शन

*–डॉ. दलविंदर सिंघ (ग्रेवाल)**

श्री गुरु तेग बहादर साहिब के फलसफे को जानने के लिए हमारे लिए सिक्ख धर्म के मूल फलसफे के बारे में जान लेना ज़रूरी होगा। सिक्ख धर्म के संस्थापक श्री गुरु नानक देव जी की शिक्षाएं, हालाँकि वे १५वीं सदी के भारत के संदर्भ में कही गई थीं, उनकी प्रासंगिकता आज भी बरकरार है। समानता, सामाजिक न्याय और आध्यात्मिक भक्ति पर उनका ज़ोर समय एवं कल्पना से परे है, जो आधुनिक संसार को दरपेश बहुत-सी चुनौतियों का हल पेश करता है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब के फलसफे की स्थायी विरासत भी इसी तथ्य में है कि कैसे श्री गुरु नानक देव जी के 'परमात्मा एक है' (ੴ) के संदेश की निरंतरता में मानवता को सभी प्रकार के भय और हर तरह के वैर से मुक्त रहने के लिए प्रेरित करते हैं। इसी फलसफे को श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने कैसे अपनी बाणी और जीवन-गतिविधियों के माध्यम से आगे बढ़ाया, उस समय के संदर्भ को भी जान लेना ज़रूरी है।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब के समय भारत पर औरंगजेब का शासन था, जो कट्टर एवं, धर्मांध मुसलमान था और हिंदुओं तथा दूसरे धर्मावलंबियों को भी मुसलमान बनाने पर तुला हुआ था। वह चाहता था कि अगर सारा हिंदुस्तान मुसलमान बन जाये तो उसका पूरे देश पर शासन और मजबूत हो जायेगा। वह अपनी हुकूमत का डर देकर जबरन धर्म-परिवर्तन करवा रहा था। इस जबरन धर्म-परिवर्तन ने हिंदू धर्म में चिंता एवं खलबली पैदा कर दी थी और वह अपने आप को बेबस महसूस करने लगा था। औरंगजेब जब उत्तर भारत में था तो उसने कश्मीर के नवाब इफ्तिखार ख़ान को इस धर्म-परिवर्तन की मुहिम और प्रचंड करने के लिए कहा। आदेश पाते ही इफ्तिखार ख़ान ने जब कश्मीर के हिंदुओं को धर्म-परिवर्तन करने का आदेश दिया तो उन्होंने कुछ समय की मोहलत माँगी।

इस मुसीबत का हल ढूँढने के लिए वे श्री गुरु तेग बहादर साहिब के पास श्री अनंदपुर साहिब आए और अपना कष्ट गुरु साहिब के आगे बयान किया। गुरु साहिब जानते थे कि इसके लिए किसी महान पुरुष को कुर्बानी देकर जनसाधारण में जुल्म के खिलाफ डट कर खड़े होने व कुर्बानी हेतु

** १९२५, बसंत एवेन्यू, लुधियाना–१४१०१३, फोन : ९८१५३-६६७२६*

तैयार रहने की भावना का भाव पैदा करना होगा। जब गुरु जी ने यह हल पंडितों के सामने रखा तो उस समय उनके पास खड़े बाल गोबिंद राय जी ने कहा कि "पिता जी! आपके बिना यह कुर्बानी और कौन दे सकता है ताकि धर्म-परिवर्तन होने से रोका जा सके?"

गुरु साहिब ने बाल गोबिंद राय जी की इस भावना को सही जान कर कश्मीरी पंडितों को भरोसा दिया कि वे उनकी मदद करेंगे। उन्हें धर्म-परिवर्तन नहीं करना चाहिए।

कश्मीरी पंडितों ने इफ्तिखार ख़ान को गुरु जी का संदेश दे दिया। उसने औरंगजेब को यह सब कह सुनाया। सरकारी आदेश पाकर फौज ने गुरु जी को गिरफ़्तार कर दिल्ली पहुँचाया जहाँ उन्हें भी धर्म-परिवर्तन न करने पर जेल में रख कर यातनाएं दी गईं।

जब गुरु जी न झुके तो गुरु जी के साथी सिक्खों को निर्दयतापूर्वक शहीद कर दिया गया, जिसमें भाई मतीदास जी, भाई दिआला जी, भाई सतीदास जी शामिल थे। यह सब गुरु जी की नज़रों के सामने इसलिए किया गया ताकि वे डरकर धर्म-परिवर्तन के लिए तैयार हो जाएं। गुरु जी अडिग रहे और उन्होंने भी शहादत का मार्ग चुना। गुरु जी ने शहादत देकर यह संदेश दे दिया कि धर्म सर्वोपरि है। परमात्मा को अपनी याद में रख कर शहादत देना कोई कमज़ोरी नहीं। यह शरीर तो नाशवान है। इसने एक दिन नष्ट होना ही है। अच्छा है कि यह शरीर धर्म-रक्षा एवं लोक-रक्षा के काम आ जाए।

शहादत का संकल्प सिक्ख धर्म में अद्बितीय है। इससे पूर्व उनके दादा श्री गुरु अरजन देव जी ने शहादत देकर अपने सिद्धांतों के दृढ़ संकल्प का परिचय दिया था। इसी रास्ते पर चल कर ही श्री गुरु तेग बहादर साहिब शहीद हुए। इसके बाद सिक्खों में शहादत की जो लड़ी चली वह भी बेमिसाल है।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने सर्वप्रथम लोगों में हुकूमत के डर को ख़त्म करने का संदेश दिया और उन्हें हुकूमत का सामना करने का मार्ग बताया। गुरु जी द्वारा बाणी के माध्यम से जो जनसंदेश दिए गए उनके अनुसार उनके फलसफे का संक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत करने का यत्न किया जा रहा है :—

परमात्मा सभी प्राणियों में निवास कर रहा है :

जन नानक सभ ही मै पूरन एक पुरख भगवानो ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११८६)

परमात्मा ने ही सारी जग-रचना की है :

—साधो रचना राम बनाई ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २१९)

—अपनी माइआ आपि पसारी आपहि देखनहारा ॥
नाना रूपु धरे बहु रंगी सभ ते रहै निआरा ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ५३७)

परमात्मा को जंगलों में ढूँढने की ज़रूरत नहीं है। वो प्रत्येक प्राणी के अंदर ही विद्यमान है :

—घट ही माहि निरंजन तेरै तै खोजत उदिआना॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६३२)

काहे रे बन खोजन जाई॥

—सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६८४)

मानव-रचना पाँच तत्वों से मिलकर हुई है :

पांच तत को तनु रचिओ जानहु चतुर सुजान॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२७)

सारा जग नाशमान है। यह जग सपने की तरह है। राम और रावण जैसे, जिनके बड़े परिवार थे, वे भी नहीं रहे। जग से चले जाना कोई अनहोनी बात नहीं, इसलिए इस बात की चिंता करना व्यर्थ है :

जो उपजै सो सगल बिनासै रहनु न कोऊ पावै॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १२३१)

जिउ सुपना अरु पेखना ऐसे जग कउ जानि॥
इन मै कछु साचो नही नानक बिनु भगवान॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२७)

जग रचना सभ झूठ है जानि लेहु रे मीत॥
कहि नानक थिरु न रहै जिउ बालू की भीति॥ ४९॥
रामु गइओ रावनु गइओ जा कउ बहु परवारु॥
कहु नानक थिरु कछु नही सुपने जिउ संसारु॥ ५०॥
चिंता ता की कीजीऐ जो अनहोनी होइ॥
इहु मारगु संसार को नानक थिरु नही कोइ॥ ५१॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२९)

यह जग किसी का पक्का ठिकाना नहीं है। यह तो बस पानी और बुलबुले की तरह है :

जैसे जल ते बुदबुदा उपजै बिनसै नीत॥
जग रचना तैसे रची कहु नानक सुनि मीत॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२७)

मानवीय मन को काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जैसे रोग लगे हुए हैं, जिस कारण मानव परमात्मा को भूला बैठा है :

काम क्रोध मोह बसि प्रानी हरि मूरति बिसराई॥
झूठा तनु साचा करि मानिओ जिउ सुपना रैनाई॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २१९)

जो सुख-दुख में बेबसी तथा पाँच विकारों की मार से बच गया, समझो, उसने भगवान को पा लिया :

सुखु दुखु जिह परसै नही लोभु मोहु अभिमानु॥
कहु नानक सुनु रे मना सो मूरति भगवान॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२७)

परमात्मा के नाम-सुमिरन द्वारा प्रतिदिन भजन-कीर्तन करने से दुर्मति, भय आदि दूर हो जाते हैं और सभी काम सफल हो जाते हैं :

भै नासन दुरमति हरन कलि मै हरि को नामु॥
निसि दिनु जो नानक भजै सफल होहि तिह काम॥ २०॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२७)

तीर्थ-यात्रा, वृत, दान आदि कर यदि कोई गर्व करता है तो ऐसा समझो जैसे हाथी ने स्नान कर

अपने ऊपर फिर मिट्टी उड़ाकर डाल ली हो :

तीरथ बरत अरु दान करि मन मै धरै गुमानु ॥
नानक निहफल जात तिह जिउ कुंचर इसनानु ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२८)

जीवन-मार्ग शुद्ध रखने से ही परमात्मा का एहसास होता है, इसलिए हमेशा सच्चा, विशुद्ध जीवन जीओ :

साची रहत साचा मनि सोई ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ८३१)

सच्चा, विशुद्ध होने के लिए मन हमेशा सत्य-मार्ग पर चले तथा बुरी संगत से दूर रहे :

साधो मन का मानु तिआगउ ॥
कामु क्रोधु संगति दुरजन की ता ते अहिनिसि भागउ ॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २१९)*

अपने मन पर अगर काबू नहीं है, तो मनुष्य काम, क्रोध, मोह, लोभ और अहंकार को अपनी कमजोरी बनने से नहीं रोक सकता। जैसे-जैसे कोई इंसान इनका ग़ुलाम बनता जाता है, वह अपनी अंतरात्मा से, परमात्मा से और अपने जीवन-लक्ष्य से दूर होता जाता है। इंसान का माया में खचित होना बढ़ता जाता है :

सुरग नरक अंम्रित बिखु ए सभ तिउ कंचन अरु पैसा ॥
उसतति निंदा ए सम जा कै लोभु मोहु फुनि तैसा ॥२॥
दुखु सुखु ए बाधे जिह नाहनि तिह तुम जानउ गिआनी ॥
नानक मुकति ताहि तुम मानउ इह बिधि को जो प्रानी ॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २२०)*

जो मानव दुख को दुख नहीं मानता, जो सुख के पलों में नियंत्रण से बाहर नहीं होता, मन में किसी का भी भय नहीं रखता और स्वर्ण को मिट्टी के समान मानता है, उसे परमात्मा का ज्ञान हुआ जानो :

जो नरु दुख मै दुखु नही मानै ॥
सुख सनेहु अरु भै नही जा कै कंचन माटी मानै ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६३३)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब का फलसफा उच्च जीवन-मूल्यों का आधार है, जिन्होंने मानसिक ग़ुलामी झेल रही प्रजा को निर्भय होकर जीना सिखाया। उन्होंने जीवन-बलिदान देकर समझाया कि हमें मुश्किलों के समय घबराना नहीं चाहिए, बल्कि पूरी नैतिक और सामाजिक ज़िम्मेदारी के साथ सामना करते हुए आत्मबलिदान को सर्वोपरि रखना चाहिए। मानव-कल्याणार्थ अपने सामाजिक कर्त्तव्यों का निर्वहन करना चाहिए। गुरु जी का जीवन हमें सिखाता है कि हमें समय बर्बाद करते हुए किसी चमत्कार का इन्तज़ार नहीं करना चाहिए, बल्कि पूरे जोश एवं आत्मविश्वास के साथ रण-क्षेत्र में डट जाना चाहिए। गुरु जी ज़ोर देकर कहते हैं कि मानव-जीवन बड़ा अनमोल है। इसका सदुपयोग कर लाभ उठाना चाहिए।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहादत : मानवाधिकारों के संदर्भ में

*–बीबी मनमोहन कौर**

धर्म कई प्रकार का होता है। जो धर्म संकीर्ण दृष्टिकोण वाला है, उसका उद्देश्य केवल रिद्धि-सिद्धि हासिल कर, निजी स्वार्थों की पूर्ति कर, समाज के किसी एक वर्ग विशेष की रक्षा करने तक ही सीमित होता है। इसके विपरीत जो धर्म समूचे समाज की कद्र कर, समूची मानवता के अधिकारों की आवाज़ बनकर, मजलूम व प्रताड़ित लोगों को ऊपर उठाता है, वास्तव में वही धर्म विशाल और मानव धर्म है। अपने-अपने अकीदे के मुताबिक सर्वशक्तिमान की उपासना करने का अधिकार हर मानव के पास होना चाहिए।

शुभ कर्मों द्वारा एक अकाल पुरख परमात्मा के साथ प्यार करने का नाम ही धर्म है। हर कोई अपने-अपने धर्म को श्रेष्ठ मानता है। किसी को भी दूसरे के धर्म में दख़ल देने का कोई हक नहीं। इसी तरह अपने तय किए आदर्शों को अपनाते हुए जीवन जीना हर मानव का मौलिक अधिकार है। मौलिक अधिकार मानव-समानता की भावना को उत्साहित करने वाले होने चाहिए।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहादत धर्म से सम्बन्धित दो मतों के टकराव का परिणाम थी। एक तरफ़ गुरु जी का विशाल मानववादी धर्म था और दूसरी तरफ़ मुग़ल बादशाह औरंगजेब का संकीर्ण व सांप्रदायिक धर्म था, जिसका घेरा एक धर्म विशेष तक ही सीमित था।

करम धरम की जिनि पति राखी। अटल करी कलिजुग मै साखी॥१४॥१॥ *(श्री गुरु सोभा)*

श्री गुरु तेग बहादर साहिब का बचपन का नाम 'तिआग मल्ल' था। 'गुरबिलास पातशाही ६' (कृत कवि सोहन) श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से कुछ ही वर्ष बाद लिखा गया था। इसके अनुसार श्री गुरु तेग बहादर साहिब के जन्म के समय उनके पिता श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने "दीन रछ संकट हरै" के शब्द उच्चारण कर भविष्य को दृष्टिगोचर होते हुए फरमान किया कि यह बालक बेसहारों का सहारा बनकर उनकी सहायता करेगा:, असह्य को सहन करने वाला, धीरज का धुरंधर, अपना आप कुर्बान करने वाला होगा।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शख्सियत के निर्माण में उनकी माँ माता नानकी जी का बहुत बड़ा योगदान है। आप जी के सभी गुण श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शख्सियत का शृंगार बन गए। आप जी के बचपन की एक साखी के अनुसार, आपकी आयु चार वर्ष थी तो बड़े भ्राता बाबा गुरदित्ता जी की शादी के समय माता जी ने आप जी

*इंचार्ज, गुरमत प्रकाश एवं गुरमत ज्ञान, धर्म प्रचार कमेटी, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर। फोन : ९८१४८-९८१२४

को रेशमी कपड़े, कैंठा (गले का एक आभूषण) और सोने के कड़े पहना कर बारात के साथ जाने के लिए तैयार किया। आप जी ने रास्ते में एक निर्धन बालक को अर्द्धनग्न अवस्था में देखा जो कि जाती हुई बारात देख रहा था। उसकी दुर्दशा देखते हुए आपने अपने कपड़े उतार कर उसे पहना दिए। यहाँ तक कि कैंठा और कड़े भी दे दिए। वापस घर पहुँचे तो माता नानकी जी ने देखते ही पूछा, "आपके वस्त्र और गहने कहाँ हैं?" आप जी ने कहा, "एक बालक को दे दिए। मैंने सोचा, मुझे तो आप और दिला दोगे!" बचपन की यह घटना गुरु पातशाह के जीवन में आने वाली बड़ी घटनाओं की तरफ भी इशारा करती है, जिसमें त्याग की भावना प्रबल थी।

आप जी के 'तिआग मल्ल' से 'तेग बहादर' बनने तक का सफ़र संदेश देता है कि समाज में अपने अधिकारों के साथ-साथ दूसरों के अधिकारों की रक्षा एवं पूर्ति करने के लिए हर मनुष्य को मानसिक व शारीरिक तौर पर मज़बूत होना चाहिए। ज़िंदगी में आई प्रत्येक चुनौती और ज़ुल्म के आगे झुकने की बजाय उसका डटकर मुकाबला करना चाहिए। गुरु जी ने अपनी बाणी में भी प्रभु के भय-भंजन वाले गुण की तरफ बार-बार संकेत करते हुए दरसाया है कि एक अकाल पुरख की लगातार आराधना करने से मनुष्य न किसी से डरता है और न किसी को डराता है। उसमें से डर की भावना ख़त्म हो जाती है। अगर कोई उसे डराए तो भी वह डरता नहीं, बल्कि मुकाबला करता है और हर कुर्बानी करने के लिए तैयार रहता है :

भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥
कहु नानक सुनि रे मना गिआनी ताहि बखानि ॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२७)

यह बात सदा याद रखने वाली है कि बचपन में अपने वस्त्रों आदि द्वारा निर्धन बालक की सहायता करने वाले गुरु पातशाह ने भविष्य काल में इससे भी आगे बढ़ते हुए कश्मीरी ब्राह्मणों के धर्माधिकारों की रक्षा अपनी कुर्बानी देकर की और "सृष्टि की चादर" के उपनाम से विख्यात हुए :

प्रगट भए गुरु तेग बहादर ।
सगल स्रिसटि पै ढापी चादर ॥ (श्री गुरु सोभा)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने दूरस्थ देशों में जाकर सिक्खी का प्रचार किया। आप जी ने अपने गुरु-काल का अधिकतर समय धर्म प्रचार-यात्राओं में गुज़ारा। आप जी का यात्रा-वृत्तांत पढ़ कर पता चलता है कि आपने लोक-कल्याणार्थ को मुख्य रखते हुए बाँगर क्षेत्र, जो कि आजकल हरियाणा प्रदेश में है, में कई कुएं खुदवाए।

आप जी के गुरु-काल में औरंगजेब की सत्ता थी। औरंगजेब अपने पूर्ववर्ती मुगल शासकों की तुलना में अधिक कट्टरपंथी था। उसने सभी हिंदुओं को मुसलमान बनाने की धार रखी थी। उसने ज्यादा जोर कश्मीरी पंडितों के धर्मांतरण पर दिया था, क्योंकि कश्मीरी पंडित हिंदू धर्मावलंबियों की मुख्य जमात समझे जाते थे। औरंगजेब का धर्मांतरण का मुद्दा सभी धर्म के लोगों के लिए अत्यंत पीड़ादायक बन गया था। औरंगजेब की धर्मांतरण की नीति के विरुद्ध आप जी ने गाँव-गाँव जाकर लोगों को लामबंद किया

और इसका सामना जान की बाजी लगाकर करने के लिए कहा।

ज्ञानी सोहण सिंघ सीतल लिखते हैं कि श्री गुरु तेग बहादर साहिब द्वारा श्री अनंदपुर साहिब से दिल्ली पहुँचते समय लम्बा भ्रमण-चक्कर लगाने का एक ख़ास उद्देश्य था। आप हर जगह एक ही सिद्धांत का प्रचार करते हुए जाते कि बादशाह का धर्म है प्रजा की सुरक्षा करना, निर्बलों का सहारा बनना, सबके साथ एक समान व्यवहार व इन्साफ करना। सुरक्षा का अर्थ है— हर पक्ष से रक्षा करना। जहाँ प्रजा के माल-धन और मान-सम्मान की सुरक्षा ज़रूरी है, वहाँ लोगों के धर्म की रक्षा करना भी बादशाह का ही फ़र्ज़ है। सरकार को सदा धर्म-निरपेक्ष होना चाहिए। बेइन्साफ़ शासक न लोगों का विश्वास प्राप्त कर सकता है और न ख़ुदा का आशीर्वाद। आपने अपनी धर्म प्रचार-यात्राओं के दौरान लोगों को मान-सम्मान एवं निडरतापूर्वक जीना सिखाया। जीओ और जीने दो का सिद्धांत ही श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शिक्षाओं का मूल सिद्धांत है।

औरंगजेब को यह सूचना मिली कि श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने कश्मीरी पंडितों की बात को हमदर्दी के साथ सुना है। उनकी मदद करने का वायदा करते हुए वे उनके लिए हर तरह की कुर्बानी करने के लिए तैयार हो गए हैं। उसके लिए यह बात बड़ी हैरान करने वाली थी कि श्री गुरु तेग बहादर साहिब न तो ब्राह्मण हैं, वे न तो तिलक लगाते हैं, न ही जनेव धारण करते हैं। उनकी विचारधारा में इन चीजों की कोई जगह नहीं है, फिर भी उन्होंने हिंदुओं की मदद करने का उन्हें आश्वासन दे दिया।

दरअसल, गुरु जी मनुष्य की मानसिक व शारीरिक स्वतंत्रता के पक्षधर थे। उनकी कुर्बानी 'तिलक जनेव' की रक्षा के लिए नहीं, धर्म की स्वतंत्रता के लिए थी। धर्म-पालन का प्रथम चरण ही स्वतंत्रता की मांग करता है तथा गुलामी के बंधनों एवं जबरदस्ती से अधिकारों की छीना-झपटी से कोसों दूर रहता है। आपके अनुसार यह हर मनुष्य का अपना निजी अधिकार है कि वह किस धर्म में आस्था रखे।

पीड़ित पक्ष के लिए अपना जीवन कुर्बान करना श्री गुरु तेग बहादर साहिब का स्वैइच्छित फ़ैसला था। बेशक औरंगजेब उस वक्त का शक्तिशाली बादशाह था परन्तु धर्म-परिवर्तन के नाम पर पीड़ित पक्ष का हाथ थामना, उनके धर्म के बचाव हेतु कुर्बानी देना गुरु साहिब का खुला एलाननामा था :

बांह जिन्हां दी पकड़ीए,
सिर दीजै बांहि न छोडीए।
गुरु तेग बहादर बोलिआ धर पईए धरम न छोडीए।

विभिन्न लेखकों ने गुरु साहिब की गिरफ़्तारी का हाल लिखा है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शख्सियत बड़ी दमदार थी, जिसका हवाला 'सूरज प्रकाश' ग्रंथ में कुछ इस प्रकार दिया गया है कि "औरंगजेब ने गुरु साहिब को गिरफ़्तार करने के लिए बारह हजार की संख्या में फ़ौज भेजी।

गुरु जी की शहादत केवल सिक्ख इतिहास में ही नहीं बल्कि भारत के इतिहास में एक विलक्षण

स्थान रखती है। हिंदू लगभग आठ सौ वर्ष मुगलों का ज़ुल्म सहते रहे मगर उनमें से किसी एक ने भी धर्म की आज़ादी के लिए दृढ़ इरादे के साथ कुर्बानी नहीं दी।

आप जी की शहादत के पश्चात् आप जी के उनन्य सेवक— भाई जैता जी द्वारा आपका पावन शीश उठाकर, जान जोखिम में डालकर श्री अनंदपुर साहिब ले जाकर तथा भाई लक्खी शाह बनजारा ने औरंगजेब के सभी सरकारी प्रबंधों को तहस-नहस करते हुए अपने घर में गुरु जी के धड़ का दाह-संस्कार कर सिक्खी की शान में विस्तार करते हुए ज़ुल्मी मुग़ल सलतनत का अहंकार तोड़ दिया। दिल्ली में गुरुद्वारा सीसगंज साहिब तथा गुरुद्वारा श्री रकाबगंज साहिब इस अद्वितीय कुर्बानी की यादगार के तौर पर सुशोभित हैं।

गुरु जी की बाणी मनुष्य-मात्र को सत्य के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती है, मानव विचारधारा की स्वतंत्रता के हक में तथा जब्र-ज़ुल्म के ख़िलाफ़ आवाज़ बुलंद करते हुए जीवन तक कुर्बान कर देने की भावना पैदा करती है। आप जी की बाणी में वैराग्य और त्याग की भावना उजागर होती है, जो मनुष्य को दुनियावी पदार्थों के प्रति आवश्यकता से अधिक मोह का त्याग करने के लिए प्रेरित करती हुई कुर्बानी के पथ पर अग्रसर करती है। उन्होंने धर्म-रक्षक बन कर "सीसु दीआ पर सिररु न दीआ" पर पहरा देते हुए अपना जीवन कुर्बान कर यह बात सत्य कर दिखाई। श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शख्सियत हर पीढ़ी के लोगों के लिए रौशनी-मीनार का काम करते हुए कुर्बानी, निष्काम सेवा-भावना, परोपकार के लिए प्रेरणा-स्रोत रही है और हमेशा रहेगी।

निस्संदेह श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहादत का केंद्रीय भाव धर्म की आज़ादी था। इसका सम्बन्ध किसी एक धर्म के साथ न होकर समूची मानव जाति की धर्म-स्वतंत्रता को जिंदा रखना था। शहादत का माध्यम चाहे 'तिलक-जनेव' की रक्षा करना बना, मगर इसका समग्र रूप से उद्देश्य मानवता की धार्मिक आज़ादी को जिंदा रखना था। आप जी के सिक्ख आज भी 'खालसा पंथ' के रूप में विश्व भर में मानवता के कल्याणार्थ संघर्षरत् रहते हैं और जरूरत पड़ने पर शहादत प्राप्त कर रहे हैं।

आज बहुत-से सरकारी और ग़ैर-सरकारी संगठन अस्तित्व में आ चुके हैं, जो मानवता के कल्याण हेतु कार्यशील हैं। बहुत-से देशों ने मिल कर विश्व की एक बड़ी संस्था 'संयुक्त राष्ट्र संघ' (United Nations Organisation) का गठन किया है। इसके कई उप-संगठन हैं, जो समय-समय पर विश्व में दरपेश समस्याओं का समाधान करने के लिए यत्नशील रहते हैं। इस महान संस्था द्वारा मानवाधिकारों के प्रति चेतना पैदा करने के लिए १० दिसंबर, १९४८ ई. को संयुक्त राष्ट्र में एक संयुक्त घोषणा-पत्र जारी किया गया, जिसे 'यूनाइटेड नेशन यूनिवर्सल डेकलारेशन ऑफ ह्यूमन राईट्स १९४८' का नाम दिया गया। इस दिन को 'मानवाधिकार दिवस' के रूप में मनाने का संदेश दिया गया। किसी भी देश की कोई भी संस्था यह दिवस मनाने के लिए

स्वतंत्र है, बशर्ते कि उसके द्वारा किये जा रहे कार्यों में से मानवाधिकारों के प्रति चेतना प्रकट होती हो।

गुरु साहिब की शहादत से प्रेरित सिक्खों की सिरमौर संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी भी समय-समय पर आयोजित अधिवेशनों में मानवाधिकारों के पक्ष में प्रस्ताव पारित कर शासकों द्वारा की जाती बेइंसाफी के खिलाफ आवाज़ उठाती रहती है, जैसे कि सज़ा पूरी कर चुके बंदी सिंघों को रिहा करवाना, सरदार स. जसवंत सिंघ खालड़ा के अगवा केस की पड़ताल करवाने से सम्बन्धित मामले आदि। विभिन्न देशों में बसते सिक्ख भाईचारे के विरुद्ध भेदभाव और नसली हमलों की निषिद्धता आदि के प्रस्ताव पारित कर समय-समय पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा विभिन्न देशों के शासकों तक अपनी माँग पहुंचायी जाती है। इस संस्था द्वारा समूची मानवता के लिए भी समय-समय पर आयोजित अधिवेशनों में प्रस्ताव पारित कर शासकों तक अपनी मांग रखी जाती है।

मानवाधिकारों के अंतर्गत हर मनुष्य का यह मौलिक अधिकार बनता है कि उसे स्वस्थ जीवन जीने के लिए साफ-सुथरा वातावरण मिले। इसी के तहत हवा-पानी की शुद्धता और मिलावटखोरी के विरोध में भी जहाँ शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी हमेशा जागरूक रहती है वहाँ आम जनता और सरकार को भी जागरूक करती रहती है। इसी के अंतर्गत संस्था की तरफ से आयोजित अधिवेशनों में विशेष रूप से प्रस्ताव पारित कर वातावरण की संभाल के लिए चिंता प्रकट करते हुए पंजाब के मत्तेवाड़ा जंगल को बचाने में अहम भूमिका निभाई गई। अपने प्रबंधाधीन गुरुद्वारा साहिबान में एक-एक एकड़ ज़मीन में बाग़ लगा कर वातावरण को बचाने के लिए प्रस्ताव पारित कर मानवता की भलाई और कुदरत की सुंदरता के लिए अहम भूमिका निभाई जा रही है।

बाढ़, तूफ़ान, सुनामी, भूकंप, करोना आदि प्राकृतिक आपदा में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी मानवता के मौलिक अधिकारों की पूर्ति हेतु सबसे पहले पीड़ित लोगों तक पहुँचती है। गुरु-घरों के दरवाज़े पीड़ित व प्रभावित लोगों के लिए खोल दिए जाते हैं। पीड़ित लोगों की बुनियादी ज़रूरतों, खाने-पीने के पदार्थ, पहनने और रहने के लिए वस्त्र व टैंट तथा बीमारी आदि से बचने के लिए न केवल दवाएँ पहुंचाई जाती हैं, बल्कि अपने कर्मचारियों को भी मानवता की सेवा के लिए भेजा जाता है। यही सिक्ख धर्म का सिद्धांत है जो उन्हें किसी भी आपदा के लिए सदैव तन-मन-धन से सेवा करने हेतु तत्पर करता है।

सहायक सामग्री :

१. गुरु तेग बहादर स्मृति ग्रंथ, संपादक स. सतिबीर सिंघ

२. गुरु तेग बहादर साहिब : जीवन, संदेश और शहादत, संपादक डॉ. तारन सिंघ

३. सिक्ख अध्ययन, डॉ. परमवीर सिंघ

४. सिक्ख विचारधारा, प्रो. प्रीतम सिंघ एम. ए.

५. गुरमति प्रकाश, सितंबर/ नवंबर १९९८, नवंबर २०१२

६. Sri Guru Tegh Bahadur sahib ji, Virtus & Values- Dr. Jaswinder Singh

श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी : एक अध्ययन

–स. परमजीत सिंघ सुचिंतन*

श्री गुरु तेग बहादर साहिब द्वारा उच्चरित कुल ५९ शबद व ५७ सलोक श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शोभायमान हैं। ये ५९ शबद, गुरु साहिब जी द्वारा १५ रागों में उच्चारण किए गए हैं, जिनका विवरण निम्न प्रकार है :—

रागु गउड़ी	–	९ शबद
रागु आसा	–	१ शबद
रागु देवगंधारी	–	३ शबद
रागु बिहागड़ा	–	१ शबद
रागु सोरठि	–	१२ शबद
रागु धनासरी	–	४ शबद
रागु जैतसरी	–	३ शबद
रागु टोडी	–	१ शबद
रागु तिलंग	–	३ शबद
रागु बिलावलु	–	३ शबद
रागु रामकली	–	३ शबद
रागु मारू	–	३ शबद
रागु बसंतु	–	५ शबद
रागु सारंग	–	४ शबद
रागु जैजावंती	–	४ शबद
कुल	–	५९ शबद

श्री गुरु तेग बहादर साहिब द्वारा उच्चरित कुल ५७ सलोक, श्री गुरु ग्रंथ साहिब में पन्ना १४२६ से १४२९ पर शोभायमान हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शोभायमान समूची बाणी, मानवीय मूल्यों को अपनाकर, मानव-कल्याण करने का उपदेश देती है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब द्वारा उच्चरित बाणी का अध्ययन करें तो पता चलता है कि गुरु साहिब ने अपनी बाणी में समूचे विश्व को मानवीय जीवन के विभिन्न पहलुओं के बारे में मार्गदर्शन दिया है। लेख के आकार की सीमा को ध्यान में रखते हुए, इस लेख में गुरु साहिब द्वारा उच्चरित केवल ५९ शबदों का अध्ययन प्रस्तुत करने का ही प्रयास किया गया है। गुरु साहिब ने इन ५९ शबदों में निम्नलिखित पहलुओं पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित किया है :—

अकाल पुरख की स्तुति :

कहु नानक भजु राम नाम नित जा ते काजु सरै॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ५३६)

भावार्थ : गुरु साहिब जी कहते हैं कि हे प्राणी! अकाल पुरखु के नाम का सुमिरन किया कर, जिसकी बरकति से तेरे जीवन का उद्देश्य पूरा हो सके।

करि साधसंगति सिमरु माधो होहि पतित पुनीत ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६३१)

भावार्थ : हे भाई ! गुरमुखों की संगत किया कर और अकाल पुरख का सुमिरन किया कर, जिसकी बरकति से विकारी भी पवित्र बन जाते हैं!

*७६, फेस-३, अर्बन अस्टेट, दुग्गरी, लुधियाना– १४१०१३, फोन : ९७७९१-२४५००

चेतना है तउ चेत लै निसि दिनि मै प्रानी॥
छिनु छिनु अउध बिहातु है
फूटै घट जिउ पानी॥१॥ रहाउ॥
हरि गुन काहि न गावही मूरख अगिआना॥
झूठै लालचि लागि कै नहि मरनु पछाना ॥१॥
अजहू कछु बिगरिओ नही जो प्रभ गुन गावै ॥
कहु नानक तिह भजन ते निरभै पदु पावै ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७२६)

भावार्थ : हे मनुष्य ! अगर तूने अकाल पुरख का नाम-सुमिरन करना है तो दिन-रात एक करके जपना शुरू कर दे, क्योंकि जैसे चटके (टूटे) हुए घड़े में से धीरे-धीरे पानी निकलता रहता है, वैसे ही एक-एक पल करके, धीरे-धीरे तेरी उम्र बीतती जा रही है। हे मूर्ख और अज्ञानी ! तू अकाल पुरख का गुणगान क्यों नहीं करता? माया के झूठे लोभ में फँस कर, तुझे मौत की भी याद नहीं आती! अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा। तू अब भी अकाल पुरख का गुणगान करना आरम्भ कर दे (भले ही सुमिरन के बग़ैर कितनी ही उम्र बीत चुकी हो), क्योंकि अकाल पुरख के सुमिरन की बरकति से मनुष्य वह आत्मिक दर्जा प्राप्त कर लेता है, जहाँ उसे कोई डर छू नहीं सकता!

हरि जसु रे मना गाइ लै जो संगी है तेरो॥
अउसरु बीतिओ जातु है कहिओ मान लै मेरो॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७२७)

भावार्थ : गुरु साहिब कहते हैं कि हे प्राणी ! तू अपने मन को समझा कि अकाल पुरख का गुणगान किया कर! वही तेरा असल साथी है! मेरी बात मान ले! तेरी उम्र बीतती जा रही है, इसलिए देरी मत कर!

मानस जनमु दीओ जिह ठाकुरि सो तै किउ बिसराइओ॥
मुकतु होत नर जा कै सिमरै निमख न ता कउ गाइओ॥२॥
माइआ को मदु कहा करतु है संगि न काहू जाई॥
नानकु कहतु चेति चिंतामनि होइ है अंति सहाई॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९०२)

भावार्थ : हे प्राणी ! जिस अकाल पुरख ने तुझे मानस-जन्म दिया है, तूने उस अकाल पुरख को क्यों भुला दिया है? जिस अकाल पुरख का नाम-सुमिरन करने से माया के बँधनों से निजात मिलती है, तू एक क्षण-मात्र भी उस अकाल पुरख का नाम-सुमिरन नहीं करता! हे प्राणी ! तू माया का इतना घमंड क्यों कर रहा है? यह तो आखिर में किसी के साथ भी नहीं जाती। गुरु साहिब कहते हैं कि हे भाई ! अकाल पुरख का सुमिरन करता रह, आखिर में वही तेरा मददगार होगा!

इक भगति नाराइन होइ संगि॥
कहु नानक भजु तिह एक रंगि॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११८७)

भावार्थ : गुरु साहिब कहते हैं कि सिर्फ अकाल पुरख की भक्ति ही मनुष्य के साथ रहती है, इसलिए अकाल पुरख के प्यार में टिक कर, उसका सुमिरन किया कर!

अकाल पुरख का हुक्म :

छिन महि राउ रंक कउ करई राउ रंक करि डारे ॥
रीते भरे भरे सखनावै यह ता को बिवहारे ॥१॥
अपनी माइआ आपि पसारी आपहि देखनहारा ॥
नाना रूपु धरे बहु रंगी सभ ते रहै निआरा ॥२॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ५३७)

भावार्थ : हे भाई ! वह अकाल पुरख एक क्षण में

कंगाल को राजा बना देता है और राजा को कंगाल कर देता है, खाली बर्तनों को भर देता है और भरों को खाली कर देता है अर्थात् गरीबों को अमीर और अमीरों को गरीब बनाना, यह उसका नित्य का काम है। अकाल पुरख ने अपनी माया स्वयं फैलाई हुई है और स्वयं ही उसकी देखभाल व संभाल कर रहा है। अनेक रंगों का मालिक अकाल पुरख अनेक रूप धारण कर लेता है और सारे ही रूपों से अलग भी रहता है।

कर्मकांड :

कहा भइओ तीरथ ब्रत कीए राम सरनि नही आवै ॥
जोग जग निहफल तिह मानउ जो प्रभ जसु बिसरावै ॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ८३०)

भावार्थ : यदि मनुष्य अकाल पुरख की शरण में नहीं आता तो उसके तीर्थ-यात्रा करने और व्रत आदि रखने का क्या लाभ ? जो मनुष्य अकाल पुरख की स्तुति भुला देता है, उसके योग व यज्ञ सब व्यर्थ हैं।

तीरथ करै ब्रत फुनि राखै नह मनूआ बसि जा को ॥
निहफल धरमु ताहि तुम मानहु साचु कहत मै या कउ ॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ८३१)

भावार्थ : जिस मनुष्य का मन वश में नहीं, फिर चाहे वह तीर्थ-यात्रा करे या फिर व्रत रखे, ये सब धर्म-कर्म व्यर्थ ही समझो! गुरु साहिब कहते हैं कि मैं यह सच्ची बात बता देता हूं।

गृहस्थ जीवन :

ना हरि भजिओ न गुर जनु सेविओ नह उपजिओ कछु गिआना ॥
घट ही माहि निरंजनु तेरै तै खोजत उदिआना ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६३२)

भावार्थ : हे भाई ! अभी तक न तूने अकाल पुरख की भक्ति की है, न ही गुरु या गुरमुखों की सेवा की है और न ही तेरे भीतर आत्मिक जीवन का बोध उत्पन्न हुआ है। माया से निर्लेप अकाल पुरख तेरे हृदय में निवास करता है, परन्तु तू उसे बाहर जंगलों में खोज रहा है।

काहे रे बन खोजन जाई ॥
सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६८४)

भावार्थ : हे भाई ! अकाल पुरख को ढूँढने के लिए जंगल में क्यों जाता है? अकाल पुरख सर्वव्यापक है, वह सदा माया के प्रभाव से निर्लेप रहता है। वह तेरे साथ बसता है।

जीवन-युक्ति (जीवन-जाच) :

सुखु दुखु दोनो सम करि जानै अउरु मानु अपमाना ॥
हरख सोग ते रहै अतीता तिनि जगि ततु पछाना ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २१९)

भावार्थ : हे संतजनों ! जो मनुष्य सुख और दुख, मान और अपमान, दोनों को एक समान समझता है, खुशी के समय अहंकार में नहीं आता और गमी के समय घबराता नहीं, ऐसे व्यक्ति ने जीवन का सार समझ लिया है।

जो नरु दुख मै दुखु नही मानै ॥
सुख सनेहु अरु भै नही जा कै
कंचन माटी मानै ॥१॥ रहाउ ॥
नह निंदिआ नह उसतति जा कै लोभु मोहु अभिमाना ॥
हरख सोग ते रहै निआरउ नाहि मान अपमाना ॥१॥
आसा मनसा सगल तिआगै जग ते रहै निरासा ॥
कामु क्रोधु जिह परसै नाहनि तिह घटि ब्रहमु निवासा ॥२॥
गुर किरपा जिह नर कउ कीनी तिह इह जुगति

पछानी॥
नानक लीन भइओ गोबिंद सिउ जिउ पानी संगि पानी॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६३३)

भावार्थ : हे भाई ! जो व्यक्ति दुख में दुखी नहीं होता, जिस मनुष्य के हृदय में सुखों से मोह नहीं और न ही किसी प्रकार का भय होता है, जो मनुष्य सोने को मिट्टी के समान समझता है, उसे अपने अंदर अकाल पुरख के निवास का एहसास हो जाता है। जो व्यक्ति न किसी की निंदा से विचलित होता है, न किसी की चापलूसी से खुश होता है, जिस मनुष्य के अंदर किसी वस्तु का लोभ, मोह और अहंकार नहीं होता, जो मनुष्य खुशी और ग़मी से निर्लेप रहता है, जिस मनुष्य पर न मान (आदर) का कोई असर पड़ता है, न अपमान का, ऐसे मनुष्य को दिल में अकाल पुरख के निवास का एहसास हो जाता है। जो मनुष्य सभी आशाओं और अपेक्षाओं को त्यागकर इस संसार से विरक्त हो जाता है, जिस मनुष्य को न काम-वासना छू सकती है, न ही क्रोध छू सकता है, उस मनुष्य के हृदय में अकाल पुरख का निवास हो जाता है। जिस मनुष्य पर गुरु की कृपा हो जाती है, उस व्यक्ति ने ही इस जीवन की जाच (युक्ति,ढंग) समझी है। गुरु साहिब कहते हैं कि ऐसा मनुष्य अकाल पुरख के साथ ऐसे एकाकार हो जाता है, जैसे पानी के साथ पानी मिल जाता है।

दुरमति (दुर्मति) का नाश :

नानक हरि जसु किउ नही गावत कुमति बिनासै तन की॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४११)

भावार्थ : गुरु साहिब कहते हैं कि हे प्राणी ! तू अकाल पुरख की स्तुति क्यों नहीं करता ? अकाल पुरख की स्तुति की बरकति से ही तेरी ये खोटी मति दूर हो सकेगी।

जब ही सरनि साध की आइओ दुरमति सगल बिनासी ॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६३३)

भावार्थ : जब कोई व्यक्ति गुरु की शरण में आता है तो उसकी सारी खोटी मति (बुद्धि) नाश हो जाती है।

रे मन ओट लेहु हरि नामा ॥
जा कै सिमरनि दुरमति नासै पावहि पदु निरबाना॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९०१)

भावार्थ : हे मेरे मन ! अकाल पुरख के नाम का आसरा लिया कर, जिसके नाम- सुमिरन से खोटी मति नाश हो जाती है। नाम की बरकति से तू वह आत्मिक अवस्था हासिल कर लेगा, जहाँ कोई वासना अपना प्रभाव नहीं डाल सकती।

नाशवान शरीर :

जो तनु तै अपनो करि मानिओ अरु सुंदर ग्रिह नारी ॥
इन मैं कछु तेरो रे नाहनि देखो सोच बिचारी॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २२०)

भावार्थ : हे मेरे मन ! यह शरीर, जिसे तू अपना समझ रहा है और घर की सुंदर स्त्री, जिसे तू अपनी मान रहा है, इनमें से कोई भी तेरा सदा निभने वाला साथी नहीं है, सोच कर व विचार कर देख ले!

साधो इहु तनु मिथिआ जानउ॥
या भीतरि जो रामु बसतु है साचो ताहि पछानो॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११८६)

भावार्थ : हे गुरमुखो! इस शरीर को नाशवान समझो! इस शरीर में निवास करने वाले अकाल पुरख को सदा स्थिर जानो!

मन कहा बिसारिओ राम नामु॥

तनु बिनसै जम सिउ परै कामु ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११८६)

भावार्थ : हे मन ! तू अकाल पुरख का नाम क्यों भुलाए बैठा है? जब शरीर नाश हो जाता है, तब अकाल पुरख के नाम-सुमिरन के बिना यम के संग वास्ता पड़ता है।

जो उपजै सो सगल बिनासै रहनु न कोऊ पावै ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १२३१)

भावार्थ : यहाँ जो कोई पैदा होता है, वह नाश हो जाता है। यहाँ कोई भी सदा नहीं रह सकता।

नानकु जनु कहतु बात बिनसि जैहै तेरो गातु ॥
छिनु छिनु करि गइओ कालु तैसे जातु आजु है ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३५२)

भावार्थ : गुरु साहिब कहते हैं कि तेरा अपना यह शरीर भी नाश हो जाएगा। जैसे तेरी उम्र का कल का दिन पल-पल करके बीत गया है, वैसे ही आज का दिन भी गुजरता जा रहा है।

असथिरु जो मानिओ देह सो तउ तेरउ होइ है खेह ॥
किउ न हरि को नामु लेहि मूरख निलाज रे ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३५३)

भावार्थ : जिस अपने शरीर को तू सदा स्थिर समझे बैठा है, तेरा वह शरीर तो राख हो जाएगा। हे मूर्ख! हे निर्लज्ज! तू क्यों अकाल पुरख का नाम नहीं जपता?

नाशवान संसार :

साधो रचना राम बनाई ॥
इकि बिनसै इक असथिरु मानै अचरजु लखिओ न जाई ॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २१९)*

भावार्थ : हे संतजनों ! अकाल पुरख ने संसार की यह आश्चर्यजनक रचना रची है। एक मनुष्य मरता है तो दूसरा मनुष्य उसे मरता देख कर भी, अपने आप को सदा जीवित रहने वाला समझता है। यह एक अद्भुत दृश्य है, जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता।

जो दीसै सो सगल बिनासै जिउ बादर की छाई ॥
जन नानक जगु जानिओ मिथिआ रहिओ राम सरनाई ॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २१९)*

भावार्थ : जैसे बादल की छाया सदा एक जगह टिकी नहीं रह सकती, वैसे ही जो कुछ संसार में दिखाई दे रहा है, वह सब कुछ समय आने पर नाश जाएगा। है। गुरु साहिब कहते हैं कि जिस मनुष्य ने संसार को नाशवान समझ लिया है, वह सदास्थिर अकाल पुरख की शरण में आ जाता है।

रे नर इह साची जीअ धारि ॥
सगल जगतु है जैसे सुपना
बिनसत लगत न बार ॥ १ ॥ रहाउ ॥
बारू भीति बनाई रचि पचि रहत नही दिन चारि ॥
तैसे ही इह सुख माइआ के उरझिओ कहा गवार ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६३३)

भावार्थ : हे मनुष्य ! अपने हृदय में ये बात पक्की तरह टिका ले कि सारा संसार सपने के समान है और इसे नष्ट होने में एक क्षण भी नहीं लगता। जैसे किसी ने रेत की दीवार खड़ी करके, उसे पोंछ कर तैयार किया हो परन्तु वह दीवार चार दिन भी नहीं टिकती, वैसे ही ये माया के सुख हैं जो सदैव नहीं रहते। हे मूर्ख मन ! तू इन सुखों में क्यों मदमस्त हो रहा है?

इहु जगु है संपति सुपने की देखि कहा ऐडानो ॥
संगि तिहारै कछू न चालै ताहि कहा लपटानो ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११८६)

भावार्थ : हे भाई ! यह संसार सपने में मिले उस धन के समान है जो सपने में मिल जाता है और जागते ही खत्म हो जाता है। इसे देखकर तू अहंकार क्यों करता है? अंत में कोई भी वस्तु तेरे साथ नहीं जाएगी। फिर तू इन धन-पदार्थों में क्यों आसक्त है?

इहु जगु धूए का पहार॥
तै साचा मानिआ किह बिचारि॥१॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११८६)

भावार्थ : हे मन ! यह संसार तो मानों धुएँ का पहाड़ है, जिसे हवा का एक झोंका उड़ा कर ले जाता है। तू क्या समझ कर, इस संसार को स्थायी माने बैठा है?

नानक कहत जगत सभ मिथिआ जिउ सुपना रैनाई॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १२३१)

भावार्थ : गुरु साहिब कहते हैं कि यह सारा संसार रात्रि के सपने के समान नाशवान है।

पाप :

नर अचेत पाप ते डरु रे ॥
दीन दइआल सगल भै भंजन सरनि ताहि तुम परु रे॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २२०)

भावार्थ : हे गाफिल मनुष्य ! पाप से बचा रह। पाप से बचने के लिए अकाल पुरख की शरण में रह, जो गरीबों पर दया करने वाला है और सारे डर दूर करने वाला है।

जानि बूझ कै बावरे तै काजु बिगारिओ॥
पाप करत सुकचिओ नही नह गरबु निवारिओ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७२७)

भावार्थ : हे मूर्ख प्राणी ! सब कुछ जानते हुए व समझते हुए भी, तू अपना काम बिगाड़ रहा है! तू पाप करते हुए, कभी ज़रा-सा भी नहीं हिचकिचाता, न ही तू अपने अंदर से धन-पदार्थ के अहंकार को दूर करता है!

प्रशंसा-निंदा :

उसतति निंदा दोऊ तिआगै खोजै पदु निरबाना ॥
जन नानक इहु खेलु कठनु है किनहूं गुरमुखि जाना॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २१९)

भावार्थ : जो मनुष्य प्रशंसा व निंदा दोनों का त्याग करके, ऊंची आत्मिक अवस्था की खोज करता है, उसने जीवन के मूल को पहचान लिया है। गुरु साहिब कहते हैं कि यह उच्च आत्मिक अवस्था वाला खेल बहुत कठिन है, कोई गुरमुख ही इसे समझ सकता है।

उसतति निंदा दोऊ परहरि हरि कीरति उरि आनो॥
जन नानक सभ ही मै पूरन एक पुरख भगवानो॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११८६)

भावार्थ : हे प्राणी ! प्रशंसा व निंदा दोनों काम छोड़कर, अकाल पुरख की उपमा को हृदय में बसा! गुरु साहिब कहते हैं कि केवल एक अकाल पुरख ही है जो सभी जीवों में व्याप्त है।

मुक्ति :

मुकति पंथु जानिओ तै नाहनि धन जोरन कउ धाइआ॥
अंति संग काहू नही दीना बिरथा आपु बंधाइआ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६३१)

भावार्थ : हे भाई ! तूने विकारों से मुक्ति पाने का रास्ता अभी तक नहीं समझा। धन एकत्र करने के लिए तू सदा दौड़भाग करता रहता है। दुनिया के पदार्थों में से, किसी ने भी अंतिम समय में किसी का साथ नहीं दिया। तूने व्यर्थ ही अपने आप को माया के मोह में जकड़ रखा है!

चंचल मनु दह दिसि कउ धावत अचल जाहि ठहरानो॥
कहु नानक इह बिधि को जो नरु मुकति ताहि तुम मानो॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६८५)

भावार्थ : सदा भटकता रहने वाला मन, दसों दिशाओं में दौड़ता फिरता है। जिस मनुष्य ने इसे अडोल करके टिका लिया है अर्थात् जिस व्यक्ति ने इस मन को स्थिर कर लिया है, गुरु साहिब कहते हैं कि ऐसे मनुष्य को यह समझ लेना चाहिए कि उसे विकारों से मुक्ति मिल गई है और उसे मोक्ष प्राप्त हो गया है।

मान मोह दोनो कउ परहरि गोबिंद के गुन गावै॥
कहु नानक इह बिधि को प्रानी जीवन मुकति कहावै॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ८३१)

भावार्थ : जो मनुष्य अहंकार और माया का मोह छोड़ कर, अकाल पुरख की उपमा के गीत गाता रहता है अर्थात् जो मनुष्य अकाल पुरख की स्तुति करता रहता है, जो मनुष्य ऐसा जीवन व्यतीत करता है, वह जीवन-मुक्त कहलाता है अर्थात् वह मनुष्य उस श्रेणी में गिना जाता है जो इस जिंदगी में विकारों की पकड़ से बचे रहते हैं।

राम नामु नरु निसि बासुर महि निमख एक उरि धारै॥
जम को त्रासु मिटै नानक तिह अपुनो जनमु सवारै॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९०२)

भावार्थ : जो व्यक्ति दिन या रात में एक क्षण के लिए भी, अकाल पुरख का नाम (अपने) हृदय में बसाता है, गुरु साहिब कहते हैं कि उस व्यक्ति के हृदय में से मौत का भय मिट जाता है और वह अपना जन्म सफल कर लेता है।

तजि अभिमानु सरणि संतन गहु मुकति होहि छिन माही॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १२३१)

भावार्थ : हे मन ! अहंकार त्याग कर गुरमुखों की शरण में पड़ जा! इस तरह तू एक क्षण में माया के बँधनों से मुक्त हो जाएगा।

जन नानक सोऊ जनु मुकता राम भजन चितु लावै॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १२३१)

भावार्थ : गुरु साहिब कहते हैं कि केवल वही व्यक्ति मोह के बँधनों से मुक्त होता है जो अपना मन अकाल पुरख के सुमिरन में लगाता है।

मानस जन्म :

साधो गोबिंद के गुन गावउ॥
मानस जनमु अमोलकु पाइओ बिरथा काहि गवावउ॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २१९)

भावार्थ : हे गुरु के प्यारे ! सदा अकाल पुरख के गुण गाते रहा करो! तुम्हें यह अत्यंत अनमोल मानव जन्म मिला है, इसे व्यर्थ क्यों गंवा रहे हो?

मानस देह बहुरि नह पावै कछू उपाउ मुकति का करु रे॥
नानक कहत गाइ करुना मै भव सागर कै पारि उतरु रे॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २२०)

भावार्थ : हे गाफिल मनुष्य ! यह मनुष्य जन्म फिर कभी नहीं मिलेगा, इसलिए मुक्त होने के लिए तुझे कोई उपाय करना चाहिए अर्थात् अकाल पुरख का सुमिरन करना चाहिए। गुरु साहिब कहते हैं कि जिस अकाल पुरख ने हम पर दया की है, उसका गुणगान करके इस भवसागर से पार हो जा।

फिरत फिरत बहुते जुग हारिओ मानस देह लही॥
नानक कहत मिलन की बरीआ सिमरत कहा नही॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६३१)

भावार्थ : हे भाई ! कई युगों से भटक-भटक कर

तू थक गया था। अब तुझे मनुष्य का शरीर मिला है। गुरु साहिब कहते हैं कि अकाल पुरख से मिलने की यही बारी है। अब तू सुमिरन क्यों नहीं करता?

रिश्तेदार व सम्बन्धी :

सभ किछु जीवत को बिवहार ॥
मात पिता भाई सुत बंधप अरु फुनि
ग्रिह की नारि ॥१॥ रहाउ ॥
तन ते प्रान होत जब निआरे टेरत प्रेति पुकारि ॥
आध घरी कोऊ नहि राखै घर ते देत निकारि ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ५३६)

भावार्थ : हे भाई ! माता-पिता, भाई, पुत्र, रिश्तेदार और यहां तक कि पत्नी, ये सब जीवित रहने तक का ही मेल जोल है। जब आत्मा शरीर से अलग हो जाती है अर्थात् कोई व्यक्ति मर जाता है तो सभी रिश्तेदार और मित्र यही कहते हैं कि यह भूत है। फिर कोई रिश्तेदार या संबंधी आधी घड़ी के लिए भी उसे घर में नहीं रखता, घर से निकाल दिया जाता हैं।

जगत मै झूठी देखी प्रीति ॥
अपने ही सुख सिउ सभ लागे किआ दारा किआ मीत॥१॥ रहाउ ॥
मेरउ मेरउ सभै कहत है हित सिउ बाधिओ चीत ॥
अंति कालि संगी नह कोऊ
इह अचरज है रीति ॥१॥
मन मूरख अजहू नह समझत सिख दै हारिओ नीत ॥
नानक भउजलु पारि परै जउ गावै प्रभ के गीत ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ५३६)

भावार्थ : इस संसार में मैंने सगे-संबंधियों का केवल झूठा प्रेम ही देखा है। स्त्री हो या मित्र, सभी अपने-अपने सुख के लिए ही साथ चलते हैं। सबका चित्त मोह से बँधा होता है, इसलिए उस मोह के कारण हर कोई यही कहता है कि यह मेरा है, यह मेरा है। लेकिन, अंत समय में कोई भी साथी नहीं बनता, संसार की यह विचित्र रीति चल रही है। मूर्ख मन अभी भी नहीं समझता, मैं समझा-समझाकर थक गया हूँ। गुरु साहिब कहते हैं कि जो व्यक्ति अकाल पुरख का गुणगान करता है, वह इस संसार-सागर से पार हो जाता है।

दारा मीत पूत रथ संपति धन पूरन सभ मही ॥
अवर सगल मिथिआ ए जानउ भजनु रामु को सही॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६३१)

भावार्थ : हे भाई ! स्त्री, मित्र, पुत्र, गाड़ियां, संपत्ति, धन और संसार, सभी को नाशवान समझो! एकमात्र अकाल पुरख का सुमिरन ही असल व सच्चा साथी है।

इह जगि मीतु न देखिओ कोई ॥
सगल जगतु अपनै सुखि लागिओ दुख मै संगि न होई॥१॥ रहाउ ॥
दारा मीत पूत सनबंधी सगरे धन सिउ लागे ॥
जब ही निरधन देखिओ नर कउ संगु छाडि सभ भागे ॥१॥
कहंउ कहा यिआ मन बउरे कउ इन सिउ नेहु लगाइओ ॥
दीना नाथ सकल भै भंजन जसु ता को बिसराइओ ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६३३)

भावार्थ : हे भाई ! इस संसार में कोई आखिर तक साथ निभाने वाला मित्र मैंने नहीं देखा। सारा संसार अपने सुख में ही जुटा हुआ है, दुख में कोई किसी का साथी नहीं बनता। स्त्री, मित्र, पुत्र, रिश्तेदार व संबंधी— ये सब धन से ही प्यार करते हैं। जैसे ही वे मनुष्य को गरीब हुआ देखते हैं, वे

सभी उसका साथ छोड़कर भाग जाते हैं। इस मूर्ख मन को मैं क्या समझाऊँ? इसने तो इन सभी कच्चे साथियों के साथ प्यार पा लिया है और उस अकाल पुरख के गुणगान को भूल गया है, जो दीनों का रक्षक और सारे डर (मौत के भय सहित) नाश करने वाला है।

प्रीतम जानि लेहु मन माही ॥
अपने सुख सिउ ही जगु फांधिओ को काहू को नाही ॥१॥ रहाउ ॥
सुख मै आनि बहुतु मिलि बैठत
रहत चहू दिसि घेरै ॥
बिपति परी सभ ही संगु छाडित कोऊ
न आवत नेरै ॥१॥
घर की नारि बहुतु हितु जा सिउ
सदा रहत संग लागी ॥
जब ही हंस तजी इह कांइआ
प्रेत प्रेत करि भागी ॥२॥
इह बिधि को बिउहारु बनिओ है जा सिउ नेहु लगाइओ ॥
अंत बार नानक बिनु हरि जी कोऊ कामि न आइओ॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६३४)*

भावार्थ : हे मित्र ! अपने मन में यह बात पक्के तौर पर समझ लीजिए कि सारा संसार अपने-अपने सुखों के साथ बँधा हुआ है। कोई भी व्यक्ति किसी का शाश्वत (आखिर तक निभने वाला) साथी नहीं बनता। सुख के समय अनेक मित्र आकर साथ बैठते हैं और चारों ओर से घेरे रखते हैं, परन्तु जब उसे कोई मुसीबत आकर घेर लेती है तो सब साथ छोड़ जाते हैं और कोई निकट नहीं आता। घर की स्त्री, जिससे बहुत प्रेम होता है, जो सदैव अपने पति के साथ रहती है, वह स्त्री भी पति के मरते ही 'भूत-भूत' कहकर चली जाती है अर्थात् पीछे हट जाती है। संसार का इस तरह का व्यवहार बना हुआ है, जिसके संग मनुष्य ने प्यार पा रखा है। गुरु साहिब कहते हैं कि अंत समय में अकाल पुरख के बिना कोई भी किसी की मदद नहीं कर सकता।

मात पिता सुत बंध जन हितु जा सिउ कीना ॥
जीउ छूटिओ जब देह ते डारि अगनि मै दीना ॥१॥
जीवत लउ बिउहारु है जग कउ तुम जानउ ॥
नानक हरि गुन गाइ लै सभ सुफन समानउ ॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७२६)

भावार्थ : हे मन ! माता-पिता, पुत्र, सगे-संबंधी आदि, जिनसे तुम सारी उम्र प्यार करते हो, वे तुम्हारी आत्मा के शरीर से अलग होते ही तुम्हें अग्नि में डाल देते हैं। इस संसार को ऐसे समझो, मानो कि यहाँ जीवित रहने तक ही बर्ताव-व्यवहार रहता है। गुरु साहिब कहते हैं कि यह सारा संसार सपने के समान है, इसलिए अकाल पुरख का गुणगान करते रहो!

सुख और दुख :

कहु नानक सोई नरु सुखीआ राम नाम गुन गावै ॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २२०)

भावार्थ : गुरु साहिब कहते हैं कि केवल वही मनुष्य सुखी जीवन वाला है जो अकाल पुरख का नाम जपता है और जो अकाल पुरख के गुण गाता है।

हरि के नाम बिना दुखु पावै ॥
भगति बिना सहसा नह चूकै गुरु इहु भेदु बतावै ॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ८३०)

भावार्थ : अकाल पुरख के नाम-सुमिरन के

बिना, मनुष्य कष्ट सहता रहता है। गुरु साहिब जीवन-मार्ग की यह गहरी बात बताते हैं कि अकाल पुरख की भक्ति किए बिना, मनुष्य का संदेह खत्म नहीं होता।

जन नानक भगवंत भजन बिनु सुखु सुपनै भी नाही॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १२३१)

भावार्थ : गुरु साहिब कहते हैं कि अकाल पुरख का नाम-सुमिरन किए बिना, कभी सपने में भी सुख नहीं मिलता।

सांसारिक पदार्थ :

संपति रथ धन राज सिउ अति नेहु लगाइओ॥
काल फास जब गलि परी सभ भइओ पराइओ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७२७)

भावार्थ : हे मन ! मनुष्य धन-पदार्थ, संपत्ति, वाहन और राज-माल से बहुत मोह करता है। जब मौत का फंदा उसके गले में पड़ता है तो ये सब पराए हो जाते हैं।

विषय-विकार :

साधो मन का मानु तिआगउ ॥
कामु क्रोधु संगति दुरजन की ता ते अहिनिसि भागउ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २१९)

भावार्थ : हे संतजनों ! अपने मन का अहंकार त्याग दो तथा काम, क्रोध और दुष्टों की संगति से दिन-रात (अर्थात् हर समय) दूर रहो!

तजि अभिमान मोह माइआ फुनि भजन राम चितु लावउ ॥
नानक कहत मुकति पंथ इहु गुरमुखि होइ तुम पावउ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २१९)

भावार्थ : अहंकार त्यागकर और माया का मोह दूर करके, अपना चित्त अकाल पुरख के सुमिरन में जोड़े रखो! गुरु साहिब कहते हैं कि विकारों व दुर्गुणों से मुक्त होने का यही एकमात्र उपाय है जो गुरु की शरण में आकर और गुरमुख बनकर किया जा सकता है।

लोभ मोह माइआ ममता फुनि अउ बिखिअन की सेवा ॥
हरख सोग परसै जिह नाहनि सो मूरति है देवा॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २२०)

भावार्थ : जिस मनुष्य को लोभ, मोह, माया, ममता, विकार, खुशी-गमी, इनमें से कोई भी छू नहीं सकता अर्थात् इनमें से कोई भी मनुष्य पर अपना जोर नहीं डाल सकता, वही मनुष्य वास्तव में अकाल पुरख का स्वरूप है।

मन रे कउनु कुमति तै लीनी ॥
पर दारा निंदिआ रस रचिओ राम भगति नहि कीनी ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६३१)

भावार्थ : हे मन ! तूने कैसी कुबुद्धि ले ली है? तू पराई स्त्री व पराई निंदा के रस में मस्त रहता है और अकाल पुरख की भक्ति तूने कभी की नहीं!

पापी हीऐ मै कामु बसाइ ॥
मनु चंचलु या ते गहिओ न जाइ ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११८६)

भावार्थ : पापी मनुष्य के हृदय में काम-वासना टिकी रहती है, इसलिए उसका चंचल मन काबू में नहीं रहता।

नवम गुरु : योद्धा एवं तत्वज्ञ के रूप में

–डॉ. मनजीत कौर*

अजर जरन जग धीर धुरंधर।
इस मानिद न को जग अंदरि।

'श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' के रचयिता भाई संतोख सिंघ के अनुसार श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने उपरोक्त वचन अपने सबसे छोटे सुपुत्र श्री गुरु तेग बहादर साहिब के लिए आशीर्वचन के रूप में कहे, क्योंकि गुरु जी ने अपने इस नौनिहाल में से ईश्वरीय नूर के दीदार करते हुए सर्वत्र खुशियाँ बाँटी थीं। माता नानकी जी की खुशी का भी ठिकाना नहीं था। वे भी अपने इस तेजस्वी पुत्र पर बलिहार जातीं।

"होनहार बिरवान के होत चिकने पात" वाली कहावत की सत्यता तो उसी दिन सत्य साबित हो गई थी, जब पिता श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने अपने इस लाल को पहली बार देखते ही शीश झुका कर वंदना की थी। यह सब देखते हुए भाई बिधीचंद जी ने प्रश्न किया कि "पिता का पुत्र को प्रणाम, वो भी नवजात शिशु को?" इस पर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का बड़ा ही सहज जवाब था— "यह शिशु कोई साधारण नहीं है, यह तो परम तेजस्वी, आध्यात्मिक ज्योति, दीनों का रक्षक और जनसाधारण के संकट का हरण करने वाला होगा।" 'गुरबिलास पातशाही ६' में इस संदर्भ में स्पष्ट अंकित है :

तब गुर सिस को वंदन कीनी अति हित लाई।
बिधिआ कहि कस विनति की कहो मोहि सति भाई॥

श्री गुरु तेग बहादर साहिब का बचपन का नाम 'तिआग मल्ल' था और इनकी शिक्षा-दीक्षा मीरी-पीरी के मालिक श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के कुशल निर्देशन में संपन्न हुई। आपको महान विद्वान पुरुषों से विद्या अर्जित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। चार वर्ष की आयु में ही पिता-गुरु जी ने गुरु-घर की परंपरा के अनुसार आपको दार्शनिकता, संगीत, घुड़सवारी, शस्त्र आदि का प्रशिक्षण देने का सम्पूर्ण प्रबंध किया। आपको बहुमुखी प्रतिभा एवं प्रभावी व्यक्तित्व का स्वामी बनाने में ब्रह्मज्ञानी बाबा बुड्ढा जी, भाई गुरदास जी, सूफी फकीर साँई मियां मीर जी, भाई बिधीचंद जी का भी विशेष योगदान रहा। साथ ही माता नानकी जी से इतिहास एवं सिक्ख पंथ की विशेष जानकारी मिली। इस प्रकार महान विद्वानों से

** २/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७ -६२५२३*

प्रशिक्षण, माता-पिता का आशीर्वाद तथा बड़े बहन-भाइयों का विशेष स्नेह उनके व्यक्तित्व को निरन्तर निखारता गया।

योद्धा के रूप में : १२ वर्ष की आयु में 'तिआग मल्ल' एक कुशल घुड़सवार बन गए और पिता जी के साथ शिकार पर जाने लगे। अत्यंत शांत एवं गंभीर प्रवृत्ति के इस बालक ने बाल्यावस्था में तीन युद्ध देखे। ये युद्ध शाहजहाँ की अति संकीर्ण धार्मिक मानसिकता ने गुरु जी पर थोपे, इसलिए इन युद्धों का प्रतिरोध अनिवार्य था। गुरु जी ने चारों युद्धों में विजय प्राप्त की, लेकिन युद्धों के हिंसक एवं वीभत्स रूप ने 'तिआग मल्ल' के बालमन पर विपरीत प्रभाव डाला।

चौथी लड़ाई करतारपुर में लड़ी गई। इसमें काले खान और पैंदे खान के नेतृत्व में मुगल सेना ने आक्रमण किया। इस युद्ध के संदर्भ में उल्लेखनीय तथ्य यह है कि यह वही पैंदे खान था जो कि गुरु-घर का अनन्य सेवक रहा था तथा श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने इसका पुत्र की भाँति पालन-पोषण किया था। विश्वासघाती पैंदे खान ने जिस थाली में खाया उसी में छेद किया। यही वो युद्ध था जिसमें 'तिआग मल्ल' ने सक्रियता से भाग लिया और एक कुशल योद्धा की तरह तेग के करतब दिखाकर दुश्मनों के छक्के छुड़ा दिए। युद्ध-भूमि में 'तिआग मल्ल' को इतने साहस के साथ लड़ते हुए देखकर सिक्ख सैनिकों ने जहाँ गुरु जी के समक्ष उनकी शूरवीरता की भूरि-भूरि प्रशंसा की, वहीं पिता श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने अपने इस पुत्र का नाम 'तिआग मल्ल' बदल कर 'तेग बहादर' रखकर सम्मानित किया।

इस महान योद्धा ने न केवल रणभूमि में तेग के जौहर दिखाए, अपितु दिल्ली के चाँदनी चौक में जल्लाद की तलवार का वार अद्भुत शांति एवं साहस के साथ अपनी गर्दन पर सहा और एक महान उद्देश्य की पूर्ति हेतु अद्वितीय शहादत देकर समूची मानवता की धार्मिक स्वतन्त्रता को बरकरार रखा। उनके व्यक्तित्व एवं बाणी का सूत्र-वाक्य है :

भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२७)

तत्वज्ञ के रूप में : श्री गुरु तेग बहादर साहिब आध्यात्मिक चिन्तक, त्यागी एवं गंभीर प्रवृत्ति के धर्मसाधक थे। उनकी आलौकिक बाणी आनंद-प्रदायिनी तथा तपित हृदयों को असीम शांति प्रदान करने वाली है। त्याग, वैराग्य एवं अनुराग की त्रिवेणी गुरु जी के मुखारबिंद से उच्चरित अमृतमयी बाणी ने ईश्वर-प्राप्ति का मार्ग सहज और सुगम बना दिया तथा संसार की नश्वरता एवं क्षणभंगुरता से जनमानस को अवगत करवाते हुए, जीवन का परम लक्ष्य समझाते हुए जीवन जीने की कला सिखाई।

गुरु जी का दृष्टिकोण जीवन की स्वीकारोक्ति है

न कि जीवन का निषेध। यह तो मानव जीवन के अस्तित्व की सीमाओं के बावजूद जीवन में प्राप्त कर सकने योग्य जागृति उत्पन्न करता है, व्यक्तिगत जीवन के मोह एवं भ्रमों से सचेत कर जीवन के परम उद्देश्य की पूर्ति हेतु निरंतर प्रयासरत रहने की अपील करता है। गुरु जी की बाणी वास्तविकता की सीख, अनुभव, आत्मिक अनुशासन, दार्शनिक दृष्टिकोण, विवेक एवं ज्ञानवर्धन का बोध कराती है, बेशकीमती जीवन का सच्चा अर्थ व परम उद्देश्य समझाती हैं। आओ, उनकी पावन बाणी में से गुरु जी के तत्वज्ञ स्वरूप के दर्शन कतिपय उदाहरणों से करते हैं :—

ईश्वरीय प्रेम : ईश्वरीय प्रेम में रंगा गुरु जी का पावन हृदय आठों पहर ईश्वर का गुणगान करता प्रतीत होता है। बाल्यावस्था से ही प्रभु-चिन्तन में लीन रहने वाले गुरु जी ने बाबा बकाला में कई वर्ष तक आराधना-साधना की और समूची मानवता को प्रभु-प्रेम में भीगे संदेशों द्वारा बड़े ही सरल एवं सहज ढंग से समझाया कि मानव जीवन दुर्लभ है। इसे विकारों में मत गंवाओ! पतितों को पुनीत करने वाले, दीन-दुखियों के सच्चे साथी, शरणागत रक्षक, परम दयालु प्रभु का सदैव सुमिरन करो, यही सच्चा कल्याणकारी मार्ग है :

साधो गोबिंद के गुन गावउ ॥
मानस जनमु अमोलकु पाइओ बिरथा काहि गवावउ ॥१॥ रहाउ ॥
पतित पुनीत दीन बंध हरि सरनि ताहि तुम आवउ ॥. . .
नानक कहत मुकति पंथ इहु गुरमुखि होइ तुम पावउ ॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २१९)*

प्रभु-सुमिरन हेतु बार-बार प्रबोधित करते हुए गुरु जी की बाणी है :

रामु सिमरि रामु सिमरि इहै तेरै काजि है ॥
माइआ को संगु तिआगु प्रभ जू की सरनि लागु ॥
जगत सुख मानु मिथिआ झूठो सभ साजु है ॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३५२)

अनेक पौराणिक गाथाओं से दृष्टांत देकर गुरु जी ने समझाया कि किस प्रकार अजामल तथा गनिका पाप-कर्म में प्रवृत्त थे, लेकिन प्रभु-नाम जपकर भवसागर से सहजता से पार उतर गए। ईश्वर-सुमिरन से क्षण भर में हाथी बंधन-मुक्त हो गया। यही नहीं, नाम जप कर ध्रुव भक्त ने अटल, अमर पद प्राप्त किया। गुरु जी के चिन्तनानुसार, मनुष्य को हर पल प्रभु को अपने निकट जानते हुए उसका सुमिरन करना चाहिए :

दुख हरता हरि नामु पछानो ॥
अजामलु गनिका जिह सिमरत मुकत भए जीअ जानो ॥. . .
नानक कहत भगत रछक हरि निकटि ताहि तुम मानो ॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ८३०)*

प्रभु-सुमिरन से समस्त भय दूर होते हैं तथा दुर्मति का विनाश होता है। प्रभु-सुमिरन से ही जीव

के सभी कार्य सिद्ध होते हैं :

भै नासन दुरमति हरन कलि मै हरि को नामु ॥
निसि दिनु जो नानक भजै सफल होहि तिह काम ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२७)

गुरु जी के चिन्तनानुसार प्रभु-सुमिरन की बदौलत मनुष्य जीते-जी मुक्तावस्था प्राप्त कर लेता है, क्योंकि ऐसी अवस्था में हरि और हरि-जन एक रूप हो जाते हैं :

जिह घटि सिमरनु राम को सो नरु मुकता जानु ॥
तिहि नर हरि अंतरु नही नानक साची मानु ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२८)

गृहस्थ में रहते हुए कमल सदृश्य निर्लेप रहना : गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए कमल सदृश्य निर्लेप-भाव से विचरण करना तथा माया में रहते हुए भी विकारों से रहित होकर इसके दुष्प्रभाव से मुक्त रहने की सीख गुरु जी की अमृतमयी बाणी से सर्वत्र मिलती है :

तजि अभिमान मोह माइआ फुनि भजन राम चितु लावउ ॥
नानक कहत मुकति पंथ इहु गुरमुखि होइ तुम पावउ ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २१९)

सुख-दुख में समरूप रहना, स्तुति एवं निंदा होने पर निर्लेप-भाव से रहना, जिंदगी के वास्तविक रहस्य को समझ कर हर हाल में ईश्वर की रजा में प्रसन्न रहना ही जीवन का मनोरथ होना चाहिए। इस संदर्भ में गुरु जी का पावन उपदेश है :

सुखु दुखु दोनो सम करि जानै अउरु मानु अपमाना ॥
हरख सोग ते रहै अतीता तिनि जगि ततु पछाना ॥१॥
उसतति निंदा दोऊ तिआगै खोजै पदु निरबाना ॥
जन नानक इहु खेलु कठनु है किनहूं गुरमुखि जाना ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २१९)

गुरु जी के चिन्तनानुसार जो मनुष्य मैं-मेरी अर्थात् माया की पकड़, लोभ, मोह तथा अहंकार का अपने हृदय से त्याग कर देता है वह स्वयं तो संसार रूपी भवसागर से पार उतरता ही है, साथ अपने संगी-साथियों को भी विकारों से मुक्त कर भवसागर से पार उतारने में सहायक सिद्ध होता है :

जो प्रानी ममता तजै लोभ मोह अहंकार ॥
कहु नानक आपन तरै अउरन लेत उधार ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२७)

गुरु जी जगत के मोह को मिथ्या मानते हैं, क्योंकि सभी सुख के साथी हैं। केवल ईश्वर का नाम ही संसार रूपी भवसागर से पार उतरने में रामबाण औषधि है। शेष समस्त रिश्ते स्वार्थ-सिद्धि हेतु हैं। इस संदर्भ में गुरु जी का बड़ा सुंदर संदेश है :

जगत मै झूठी देखी प्रीति ॥
अपने ही सुख सिउ सभ लागे किआ दारा किआ मीत ॥. . .

मन मूरख अजहू नह समझत सिख दै हारिओ नीत॥
नानक भउजलु पारि परै जउ गावै प्रभ के गीत॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ५३६)

जगत-रचना स्वप्न सदृश्य : गुरु जी ने मायामय जगत की क्षणभंगुरता एवं नश्वरता का बोध करवाते हुए इसकी तुलना पानी के बुलबुले, बालू की भीत, धुएं के पहाड़, स्वप्न आदि से करते हुए, मृगतृष्णा के भ्रम-जाल से निकल कर सदास्थिर रहने वाले प्रभु की भक्ति हेतु प्रेरित किया है। जन्म के साथ मृत्यु की अनिवार्यता सिद्ध करते हुए गुरु जी समस्त सांसारिक जंजालों को त्याग कर हरि-गुण-गायन हेतु प्रेरित करते हैं :

जो उपजिओ सो बिनसि है परो आजु कै कालि॥
नानक हरि गुन गाइ ले छाडि सगल जंजाल॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२९)

जगत-रचना स्वप्न सदृश्य है। यहां बड़े-बड़े राजा-महाराजा आए और चले गए :

रामु गइओ रावनु गइओ जा कउ बहु परवारु॥
कहु नानक थिरु कछु नही सुपने जिउ संसारु॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२९)

मन को प्रबोधित करते हुए गुरु जी समस्त सांसारिक सुख-साधनों की क्षणभंगुरता की ओर संकेत करते हुए प्राणी-मात्र को पाप-कर्मों से मुक्त होने हेतु प्रेरित करते हैं कि मुक्तावस्था की प्राप्ति हेतु मानव जीवन ही स्वर्णिम अवसर है। अगर यह भी चूक गया तो पछतावा ही शेष रह जाएगा। गुरु-दरसाए मार्ग पर चल कर प्रभु की शरण में आ जाओ, इसी में सबका उद्धार है :

हरि जसु रे मना गाइ लै जो संगी है तेरो॥
अउसरु बीतिओ जातु है कहिओ मान लै मेरो॥१॥रहाउ॥. . .
जानि बूझ कै बावरे तै काजु बिगारिओ॥
पाप करत सुकचिओ नही नह गरबु निवारिओ॥२॥. . .
नानक कहत पुकारि कै गहु प्रभ सरनाई॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७२७)

गुरु जी ने बहुत ही सरल, सहज एवं भावपूर्ण शैली में मानव जीवन के परम लक्ष्य को समझाया है। संगीत की लहरियों एवं शांत रस से भरपूर प्रत्येक शब्द हृदय को रूपान्तरित करने में सक्षम है। गुरु जी के मुखारबिंद से उच्चरित एक-एक पावन शब्द मानवता के उद्धार एवं परिष्कार हेतु प्रकाश-स्तम्भ है, बशर्ते कोई प्यार एवं श्रद्धा-भाव से अमृतमयी बाणी को पढ़-सुन कर अमल में लाने हेतु प्रयासरत हो। वह निश्चित रूप से जीते-जी मुक्तावस्था का अधिकारी हो सकता है।

धर्म-सिद्धांतों के प्रहरी : श्री गुरु तेग बहादर साहिब

–डॉ. कशमीर सिंघ नूर*

सिक्खों के नवम् गुरु श्री गुरु तेग बहादर साहिब को धर्म-सिद्धांतों के प्रहरी के रूप में स्मरण किया जाता है। धर्म-सिद्धांतों की रक्षा के लिए उन्होंने जो अद्वितीय शहादत दी, उसकी मिसाल विश्व में अन्य किसी धर्म, स्थान, देश में नहीं मिलती। वे ऐसे निडर, दृढ़ निश्चयी, महान गुरु हुए हैं, जिन्होंने धर्म की स्वतंत्रता के लिए, कट्टरवादी ताकतों के जब्रो-जुल्म का सामना करते हुए शहादत दी। उनके साथ उनके अनुयायी सिक्खों ने भी अपने अकीदे पर अडिग रहते हुए, पूरे हौसले के साथ शहादत दी। नवम् पातशाह की शहादत ने धर्म की परिभाषा को परिष्कृत व व्यापक रूप प्रदान कर दिया।

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी की शहादत के बाद नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहादत ने बता दिया कि धर्म को कर्त्तव्य के रूप में परिभाषित करना ही धर्म की वास्तविक परिभाषा है। सिक्ख गुरु साहिबान ने शहादत देकर दुनिया के तमाम धर्मों को मानने वालों को तथा विद्वानों को बता दिया कि धर्म किसी की रक्षा करने, मज़लूमों की मदद करने, न्याय व सत्य के लिए संघर्ष करने, त्याग एवं कुबानी के जज्बे को बलवान बनाने हेतु प्रेरित करता है, उत्साहित करता है। धर्म हमेशा मजबूरों व बेसहारों का पक्षधर रहता है, परोपकार की भावना का सृजन व संचार करता है।

धर्म को केवल पाठ-पूजा-अर्चना तक सीमित कर देना सही नहीं है। धर्म तो सेवा एवं समर्पण के लिए भी प्रेरित करता है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहादत का मुख्य उद्देश्य एवं कारण धर्म की स्वतंत्रता की रक्षा करना ही था, बेशक उनकी शहादत के कुछ अन्य कारण भी रहे हों। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ऐसे गुरु हुए हैं, जिन्होंने धर्म-सिद्धांतों तथा अपने दिव्य उपदेशों का प्रचार करने हेतु लंबी धर्म प्रचार-यात्राएं की। उन्होंने क्रूर व ज़ालिम शासकों-प्रशासकों के विरुद्ध गुरमति सिद्धांतों के अनुरूप लोगों में जागरूकता, जुर्रत एवं दिलेरी पैदा की, लोगों को भीरुता व कायरता का त्याग करने के लिए प्रेरित व उत्साहित किया। "भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन" वाला आदर्श दृढ़ करवाया। कट्टरवादी एवं जुनूनी बादशाह औरंगज़ेब उनके ऐसे विचारों से खुश नहीं था।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने सिक्खों को

*बी-एस-९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००८, फोन : ९८७२२-५४९९०

संगठित करने का काम जारी रखा। सिक्ख जत्थेबंदी की मजबूती मुगल शासकों-प्रशासकों को सुहाती नहीं थी। इस संबंध में वे बादशाह के पास शिकायतें भी कर चुके थे। गुरु साहिब के विरुद्ध मुग़लों का विरोध जारी रहा। जब औरंगजेब गद्दीनशीन हुआ था, तब से उसने गुरु साहिबान को तंग करने का कोई मौका हाथ से न जाने दिया। इसी दुर्भावना के अधीन उसने श्री गुरु तेग बहादर साहिब को अकारण गिरफ्तार किया व इसलाम धर्म न स्वीकार करने के दोष में यातनाएं देकर शहीद किया।

सिक्ख इतिहासकार श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहादत का एक अन्य कारण यह भी बताते हैं कि श्री गुरु अरजन देव जी के समय से उनके कई नज़दीकी रिश्तेदार गुरुगद्दी प्राप्त करने की साज़िशें रचते रहे। श्री गुरु अरजन देव जी के बड़े भ्राता प्रिथीचंद ने गुरुगद्दी पर काबिज़ होने के लिए पूरा ज़ोर लगाया। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के समय प्रिथीचंद के पुत्र मेहरबान द्वारा भी कोशिशें की गईं, किंतु वह कामयाब न हो सका। श्री गुरु हरिराय साहिब के समय यह मामला और ज्यादा बिगड़ गया। श्री गुरु हरिराय साहिब के बड़े भ्राता धीरमल्ल ने गुरु जी का डटकर विरोध किया और गुरु जी के विरुद्ध शासकों के कान भरे। फिर रामराय ने औरंगजेब के समर्थन से श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को गुरुगद्दी पर से उतारना चाहा। जब कोई साज़िश कामयाब न हो सकी, तब रामराय खुद को 'गुरु' घोषित कर संगत का साथ पाने की तलाश करने लगा। रामराय ने श्री गुरु तेग बहादर साहिब के विरुद्ध भी झूठी शिकायतें की थीं।

औरंगज़ेब ने फैसला किया कि गैर-मुसलमानों को इसलाम में लाने की लहर को और प्रचंड करने की ज़रूरत है। इस मंतव्य हेतु उसने कश्मीर को चुना। इतिहासकार मैकालिफ लिखता है कि कश्मीर चुनने के भी कई कारण थे। प्रथम यह था कि कश्मीरी पंडित, विद्वान व पुज़ारी श्रेणी जनता में 'गणमान्य' होने के कारण प्रसिद्ध है। औरंगज़ेब ने सोचा कि अगर वे इसलाम धर्म स्वीकार कर लेंगे तो शेष जनता को इसलाम में लाना आसान हो जाएगा।

अपने मंतव्य को मूर्त रूप देने को औरंगज़ेब ने इफ़्तिख़ार खान को विशेषाधिकार देकर कश्मीर भेजा। बादशाह की शह पर उसने तलवार के बल पर कश्मीरी पंडितों को विवश कर दिया कि वे अपना धर्म छोड़ दें। उसके अत्याचार और धमकियों से डरकर अनेकों ने अपना धर्म छोड़ दिया, अपनी सभ्यता व संस्कृति छोड़ दी।

एक ओर कश्मीर में मुगल हुकूमत के अत्याचार बढ़े तो दूसरी ओर हिंदोस्तान के अन्य क्षेत्रों में प्रलोभन और रियायतें देकर अनेक हिंदुओं को इसलाम धर्म के दायरे में लाया जाने लगा। जब प्रलोभन आदि ने ज्यादा असर न दिखाया, तब हुकूमत ने कठोर व निर्मम नीति से काम लेना शुरू

कर दिया।

ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार जब इफ़्तिख़ार खान तथा अन्य हाकिमों के अत्याचारों की सीमा न रही, तब पूरे कश्मीर में हाहाकार मच गई। सभी ने मंत्रणा की कि सिक्खों के नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब के पास विनती की जाए कि वे हमारी मदद करें। उन्हें पूरा भरोसा था कि श्री गुरु तेग बहादर साहिब अवश्य कोई न कोई समाधान निकालेंगे।

कश्मीरी पंडितों ने अपना एक प्रतिनिधि-मंडल पंडित कृपा राम की आगवानी में श्री अनंदपुर साहिब भेजा। उसने कश्मीरी पंडितों तथा अन्य हिंदुओं पर किए जा रहे अत्याचार, बलपूर्वक धर्म-परिवर्तन के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। गुरु जी के पास हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि हमारी तथा हमारे धर्म की रक्षा की जाए। श्री गुरु तेग बहादर साहिब तो पहले से ही कश्मीर सहित पूरे हिंदोस्तान की परिस्थितियों से वाकिफ़ थे। गुरु जी ने उन पंडितों से कहा कि वे जाकर औरंगज़ेब से कह दें कि अगर वह श्री गुरु तेग बहादर साहिब को इसलाम धर्म के दायरे में ले आए, तो हम सभी अधीनता स्वीकार करने को तैयार हैं।

गुरु जी ने यह निर्णय काफ़ी लंबे विचार-विमर्श के बाद लिया था। नवम् पातशाह ने देख लिया कि मुग़ल बादशाह का अत्याचार रुकने का नाम नहीं ले रहा है। उसकी धक्केशाही एवं तानाशाही निरंतर जारी है। जैसे-तैसे कश्मीरी पंडितों ने गुरु जी का संदेश औरंगज़ेब तक पहुंचा दिया। वह तो पहले से ही किसी न किसी बहाने से गुरु जी को गिरफ्तार करना चाहता था। उसने श्री गुरु तेग बहादर साहिब के धर्म-प्रचार तथा जागरूकता अभियान के दौरों के दौरान अपनी सेना उन्हें गिरफ्तार करने को उनके पीछे लगा दी। बादशाह सिक्खों की संगठित हो रही शक्ति तथा एकजुटता को भी अपने शासन के लिए खतरा व चुनौती समझता था।

इतिहासकार बताते हैं कि श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने अपने प्रचार एवं जागरूकता-अभियान को यथावत पहले दौरों की तरह जारी रखा। उनके प्रचार के कारण आम लोगों में जोश व उत्साह भरता जा रहा था। रास्ते में गुरु जी कुएं खुदवाने, बाउलियां (जलकुंड) बनवाने आदि का काम करवाते जा रहे थे। लोगों में गुरु जी की बढ़ती जा रही लोकप्रियता, सम्मान, प्रशंसा, महिमा से मुग़ल शासक और अधिक घबरा उठे। गुरु जी को जल्दी से कैद कर लेने के बारे में आदेश जारी हो गया।

जब श्री गुरु तेग बहादर साहिब को गिरफ्तार किया गया, तब वे अपने प्रचार-अभियान के दौरान आगरा में थे। उनके सामने कट्टरपंथी सरकार द्वारा तीन शर्तें रखी गईं। पहली यह कि अगर वे इसलाम धर्म धारण कर लें तो उन्हें दुनिया के सब सुख मिलेंगे। दूसरी, करामात करके दिखाएं! करामात दिखाने से आपकी अजमत दिखाई दे जाएगी। इन दो शर्तों में से एक भी न मानने पर आपको तीसरी शर्त मानने अर्थात् मृत्यु स्वीकार कर लेने के लिए कहा गया।

गुरु जी ने दिव्य-दिव्य मुस्कराते हुए उत्तर दिया कि "धर्म छोड़ने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता। लालच वाली वस्तुओं का सुख क्षणभंगुर होता है। रही बात करामात दिखाने की, तो करामात कहर का दूसरा नाम है। यह अकाल पुरख के काम में बाधा उत्पन्न करने जैसा है। प्रभु के भक्तों द्वारा करामात दिखाना शोभा नहीं देता। यदि आप हमारे विचारों से सहमत नहीं है तो हम आपकी तीसरी शर्त मानने को तैयार हैं।"

गुरु जी को भयभीत करने के लिए उनके साथ आए सिक्खों को यातनाएं देकर शहीद किया गया। भाई मतीदास जी को आरे द्वारा चीरा गया और फिर भाई दिआला जी को एक बड़ी देग़ में उबल रहे पानी में बैठाकर शहीद कर दिया गया। भाई सतीदास जी के शरीर पर रुई लपेट कर, फिर आग लगाकर शहीद किया गया। धन्य हैं हमारे गुरु जी और धन्य हैं उनके सिक्ख! प्यारे श्रद्धालु!

हिंदोस्तान के इतिहास को निर्णायक मोड़ देते हुए श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने धर्म-सिद्धांतों की रक्षा हेतु मार्गशीर्ष सुदी ५, संवत १७३२ ई. को अपनी शहादत दिल्ली के चांदनी चौक में दे दी और हिंदोस्तान के अस्तित्व को अंधेरों में गुम होने से बचाते हुए उसे नवकिरण प्रदान की।

नवम् पातशाह की अद्वितीय एवं लासानी शहादत के बारे में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी अपनी बाणी 'बचित्र नाटक' में फ़रमान करते हैं :

तिलक जंञू राखा प्रभ ता का॥
कीनो बडो कलू महि साका॥
साधन हेति इती जिनि करी॥
सीसु दीआ पर सी न उचरी॥१३॥
धरम हेत साका जिनि कीआ॥
सीसु दीआ पर सिररु न दीआ॥
नाटक चेटक कीए कुकाजा॥
प्रभ लोगन कह आवत लाजा॥१४॥
दोहरा॥
ठीकरि फोरि दिलीसि सिरि प्रभ पुर कीया पयान॥
तेग बहादर सी क्रिया करी न किनहूं आन॥१५॥
तेग बहादर के चलत भयो जगत को सोक॥
है है है सभ जग भयो जै जै जै सुर लोक॥१६॥५॥

कुछ लोग प्रश्न करते हैं कि जिस 'जनेव' को श्री गुरु नानक देव जी द्वारा धर्म धारण करवाए जाने के नाम पर पहनने से मना कर दिया जाता है, श्री गुरु तेग बहादर साहिब द्वारा उसी 'जनेव' की खातिर शहादत दी जाती है, ऐसा क्यों? इसका उत्तर है कि नवम् गुरु श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहादत धर्म के नाम पर किए जाते अत्याचार, मानवाधिकारों के हनन के खिलाफ है, धर्मांधता के विरोध में हैं, जबरन धर्म-परिवर्तन के खिलाफ है। नवम् गुरु जी की शहादत धर्म की स्वतंत्रता, विचारों, ख्यालों के आजाद प्रकटीकरण का समर्थन करती है तथा मानसिक गुलामी दूर कर, मानसिक दुर्बलता मिटा कर देश-धर्म हेतु मर-मिटने की भावना से सराबोर करती है।

गुरु-घर के महान् सेवक
शहीद भाई मतीदास जी, भाई सतीदास जी और भाई दिआला जी

–डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल*

नवंबर १६७५ ई. में जब नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने पंडित किरपा (कृपा) राम के आग्रह को स्वीकार करके कश्मीर के ब्राह्मणों के धार्मिक अधिकारों की रक्षा हेतु दिल्ली के चाँदनी चौक में शीश कटा कर शहादत दी तो उस समय गुरु जी के साथ तीन अन्य सिक्ख भी शहीद किये गये थे। ये सिक्ख थे— भाई मतीदास जी, भाई सतीदास जी और भाई दिआला जी। भाई मतीदास जी और भाई सतीदास जी सगे भाई थे और भाई दिआला जी भाई मनी सिंघ जी के बड़े भाई थे। भाई मतीदास जी को आरे से चीर दिया गया था और भाई सतीदास जी को रूई में लपेट कर जला दिया गया था, जबकि भाई दिआला जी को उबलते हुए पानी से भरी देग में बैठा कर शहीद कर दिया गया था।

कश्मीरी ब्राह्मणों की फरियाद : औरंगजेब को दिल्ली के तख़्त पर कब्ज़ा किये २४-२५ वर्ष बीतने को थे। इनमें से पहले १० वर्ष उसने पिता शाहजहाँ को क़ैद में रखने और भाइयों से निपटने में गुज़ारे थे। औरंगजेब की धार्मिक कट्टरता और अत्याचार अपने शिखर पर था। बात सन् १६७५ की है। कश्मीरी ब्राह्मणों का एक दल पंडित किरपा राम के नेतृत्व में श्री गुरु तेग बहादर साहिब के दरबार में श्री अनंदपुर साहिब आया और फरियाद की, "हे सच्चे पातशाह! कश्मीर का सूबेदार बादशाह औरंगजेब को खुश करने के लिए हिंदुओं को जबरन मुसलमान बना रहा है, आप हमारी रक्षा करें!" कश्मीरी ब्राह्मणों की फरियाद सुनकर गुरु जी चिंतन में डूब गए। इतने में, नौ वर्षीय बाल गोबिंद राय जी आ गये। गुरु-पिता को गंभीर मुद्रा में देखकर कारण पूछा। गुरु-पिता ने कश्मीरी ब्राह्मणों की व्यथा कह सुनाई। साथ ही कहा कि "इनकी रक्षा तभी हो सकती है जब कोई महापुरुष इनकी मदद करते हुए कुर्बानी तक दे जाए और इन असहाय लोगों में धर्म की रक्षा की खातिर जान तक कुर्बान करने

*१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा, लुधियाना—१४११०१, फोन : ६२३९६-०१६४१

की भावना पैदा कर जाए।" बाल गोबिंद राय जी ने स्वाभाविक रूप से उत्तर दिया कि इस महान् कार्य के लिए आपसे बड़ा महापुरुष और कौन हो सकता है? नवम् पातशाह ने ब्राह्मणों को आश्वासन देकर वापस भेजा कि "अगर कोई तुम्हारा धर्म-परिवर्तन करने आये तो कहना कि पहले श्री गुरु तेग बहादर साहिब को इसलाम कबूल करवाओ, फिर हम भी मुसलमान हो जायेंगे।"

नवम् पातशाह औरंगजेब से टक्कर लेने के लिए तैयार हो गये। गुरु जी प्रचार-दौरे पर थे तभी मुगल फौज ने गुरु जी को आगरा से गिरफ्तार कर दिल्ली में औरंगजेब के कैदखाने में कैद कर दिया। भाई मतीदास जी, भाई सतीदास जी और भाई दिआला जी भी नवम् पातशाह के साथ कैद कर दिए गए।

भाई मतीदास जी और भाई सतीदास जी : कई पीढ़ियों से गुरु-घर की सेवा में लगा परिवार : नवम् पातशाह साहिब श्री गुरु तेग बहादर साहिब के साथ दिल्ली में शहादत प्राप्त करने वाले सगे भ्राता— भाई मतीदास जी एवं भाई सतीदास जी का परिवार कई पीढ़ियों से गुरु-घर की सेवा में लगा हुआ था। आप दोनों भाई छिब्बर गोत्र के मुहयाल खानदान से संबंधित थे। आपका जन्म (अब पाकिस्तान में स्थित) जेहलम जिले के कड़ियाला गाँव में हुआ था। यह गाँव प्रसिद्ध तीर्थ-स्थल कटासराज के निकट स्थित है। भाई साहिबान के पूर्वज भाई गौतम जी पंचम पातशाह के समय सिक्खी में शामिल हुए थे। भाई गौतम जी के पुत्र भाई परागा जी थे जो गुरु श्री हरिगोबिंद साहिब के प्रमुख सिपहसालार थे और जिन्होंने श्री हरिगोबिंदपुर के युद्ध में रुहेलों के साथ युद्ध करते हुए शहीदी प्राप्त की थी। भाई परागा जी के पुत्र भाई द्वारिका दास जी थे, जिनके चार पुत्रों में सबसे छोटे थे— भाई कबूल दास जी।

भाई कबूल दास जी के तीन पुत्र थे— भाई मतीदास जी, भाई सतीदास जी और भाई जतीदास जी। भाई द्वारिका दास जी के भतीजे भाई दरगह मल्ल जी थे, जो श्री गुरु हरिराय साहिब तथा श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के समय गुरु-घर के दीवान थे। श्री गुरु तेग बहादर साहिब के समय भाई दरगह मल्ल जी ने बुढ़ापे के कारण सेवा-मुक्ति ले ली और अपनी जगह भाई मतीदास जी को दीवान बनवा दिया। भाई मतीदास जी ने यह सेवा जी-जान से निभाई।

'महिमा प्रकाश' में वर्णन है :

मतीदास गुर के दीवान।

सिखी मों पूरण प्रमान ।

भाई दिआला जी : गुरु-घर के प्रति समर्पित परिवार : वंश परम्परा के अनुसार भाई दिआला जी का संबंध छठम् पातशाह के संग जा जुड़ता है। आपके दादा भाई बलू छठम् पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के अनन्य सेवक और जत्थेदार थे, जो १६२८ ई. में श्री अमृतसर साहिब की जंग में शहीद हुए थे। यही नहीं, महान् शहीद भाई मनी सिंघ जी आपके छोटे भाई थे। मस्त हाथी का मुँह मोड़ने वाले भाई बचित्तर सिंघ आपके भतीजे थे।

नवम् पातशाह के साथ शहादत : गुरु जी के साथ भाई मतीदास जी, भाई सतीदास जी और भाई दिआला जी को एक सूनी हवेली में क़ैद कर दिया गया। गुरु जी के सामने तीन शर्तें रखी गईं। पहली यह कि वे इसलाम कबूल करें, दूसरी यह कि कोई करामात करके दिखायें और तीसरी यह कि शहादत के लिए तैयार रहें। गुरु जी ने कहा कि मैं धर्म-परिवर्तन के खिलाफ हूँ और करामात ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध है। गुरु जी ने पहली दोनों शर्तें मानने से इनकार कर दिया। गुरु जी ने औरंगजेब की कट्टरता का विनम्र उत्तर दिया और शहादत देने के लिए तैयार हो गये।

खिसियाते हुए बादशाह ने सर्वप्रथम गुरु जी के साथी सिक्खों को शहीद करने का एलान किया, ताकि उनकी शहादत देखकर गुरु जी शायद भयभीत हो जाएं और उसका कहा मान जाएं। भाई मतीदास जी को आरे से चीर कर शहीद करने का हुक्म दे दिया। अंतिम इच्छा के रूप में भाई जी ने जल्लादों से कहा कि जब उन्हें चीरा जाये तब उनका मुख गुरु साहिब की ओर हो। इस तरह जपु जी साहिब का पाठ करते हुई भाई मतीदास जी ने आरे से अपने शरीर को दो-फाड़ करवा लिया। इसके बाद भाई सतीदास जी को रूई में लपेट कर जला कर शहीद कर दिया गया। भाई दिआला जी को 'देग' (बड़े पतीले) में खौलते हुए पानी में बैठा कर शहीद किया गया।

अपनी अप्रतिम शहादत से भाई मतीदास जी, भाई सतीदास जी और भाई दिआला जी ने अपने वंश की शहीदी-परंपरा को और मजबूत किया।

नवम् पातशाह पर हर तरह का अत्याचार किया गया, परंतु आप अचल रहे और अंतत: चाँदनी चौक में शीश काट कर आपको शहीद कर दिया गया।

भावी वंशज भी गुरु-परिवार के अनन्य सेवक : भाई मतीदास जी की संतानें भी गुरु-सेवा में लगी रहीं। आपके एक पुत्र भाई साहिब चंद श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दीवान रहे और निरमोहगढ़ के युद्ध में शहीद हुए। दूसरे पुत्र भाई मुकंद राय चमकौर साहिब के युद्ध में शहीद हुए। शहादत के समय भाई मतीदास जी मात्र २४ वर्ष के थे और भाई सतीदास जी उनसे भी दो-तीन वर्ष छोटे रहे होंगे। युवावस्था में आप दोनों भाइयों द्वारा दी गई शहादत धन्य है।

इसी प्रकार भाई दिआला जी और भाई मनी सिंघ जी का संपूर्ण परिवार भी निरंतर गुरु-घर की सेवा में लगा रहा। भाई मनी सिंघ जी सहित भाई दिआला जी के १२ भाइयों और भाई मनी सिंघ जी के पांच पुत्रों, भाई बचित्तर सिंघ आदि सभी ने सिक्ख आदर्शों की खातिर कुर्बानी दी। ऐसे महान शहीदों के खानदान में जन्म लिया था भाई दिआला जी ने।

कविता

श्री गुरु तेग बहादर साहिब

कृष्ण पक्ष की पंचमी, अंधियारा था मास।
'अमृतसर गुरु के महिल', लेकिन भया उजास।

'दलि भंजन गुरु सूरमा', मिला पिता का प्यार।
माता बीबी नानकी, करती लाड़-दुलार।

'लाल चंद' दूजे पिता, दिया हाथ में हाथ।
माता गुजरी से जुड़ा, जीवन भर का साथ।

नाम मिला था 'तिआग मल्ल', फितरत में था त्याग।
जीवन में रहकर लिया, जीवन से बैराग।

न थी कोई लालसा, न था कोई मोह।
गुरु जी तो वैराग्य की, बाट रहे थे जोह।

युद्ध लड़ा करतारपुर, लिया तेग से काम।
छठम गुरु-पिता ने दिया 'तेग बहादर' नाम।

ग्राम बकाला जा हुए, भोरे में आसीन।
कई वर्ष व कई दिन, रहे साधना लीन।

ज्योति-जोत समा गये, 'गुरु अष्टम बलबीर'।
सुन गुरु के संकेत को, सब सिक्ख हुए अधीर।

'गुरु-बाबा' होंगे वहाँ, ज्यों ही हुआ प्रचार।
डटे 'बकाला' पहुँच कर, बाईस दावेदार।

तभी बकाला गांव में, आये 'मक्खण शाह'।
बाईस रख कर मंजियां, बैठे रोके राह।

लेकिन 'मक्णख शाह' ने, परखा सच्चा कोष।
'गुरु लाधो रे' का किया, छत पर चढ़ उद्घोष।

समरसता का दे दिया, गुरु जी ने सिद्धांत।
जिसने अपनाया वही, हुआ हृदय से शांत।

हर्ष-शोक से हो परे, नहीं मान-अपमान।
स्तुति-निंदा एक-सी, कंचन-लोह समान।

कश्मीरी पंडित दुखी, आये हो बरबाद।
गुरु-चरणों में आ करी, हाथ जोड़ फरियाद।

किरपा हम पर कीजिए, बोले 'किरपा राम'।
जबरन हैं मनवा रहे, हम से वे इसलाम।

कहा गया है हमसे, इसलाम करो कबूल।
राहों में हम आपकी, बिखरा देंगे फूल।

नवम् पातशाह ने कहा, कोई पुरुष महान।
देना ही होगा उसे, अब प्राणों का दान।

कहा 'बाल गोबिंद' ने, करें सीस कुर्बान!
होगा कोई आपसे, बढ़कर कौन महान!

राह बताई गुरु ने, यही है सच्चा कर्म।
कुर्बानी से ही बचेगा, अपना-अपना धर्म।

'सीसगंज' में दे दी, सीस कटा, कुर्बानी।
सकल सृष्टि की मगर, बचा लिया सम्मानी।

नवम् पातशाह-सा यहाँ, होगा कौन महान?
मानवाधिकारों के लिए, दे दी अपनी जान।

बर दो आलम शाह गुरू गोबिंद सिंघ

–डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ*

संसार में अनेक धर्मपुरुष हुए हैं, अनेक सम्राट, विद्वान, योद्धा, दानी, बलिदानी हुए हैं। सभी का अपना एक क्षेत्र रहा है जिसके अंदर उन्होंने कार्य किया, अपनी-अपनी विशेषता के कारण आदर प्राप्त किया और इतिहास में स्थान बनाया। ऐसे लोग भी हैं जिनकी विश्व स्तर पर पहचान स्थापित हुई, किन्तु अपने क्षेत्र में। आज तो विशेषज्ञता का युग है। विषय के भी उप-विषय और सह-विषय हैं, जिनमें प्रवीणता प्राप्त की जा रही है। मानव-सभ्यता के इतिहास में एक अकेला नाम है श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का, जिन्हें न तो किसी क्षेत्र विशेष, विषय विशेष या बल विशेष के साथ जोड़ा जा सकता है। एक परमात्मा है जो सर्वज्ञ है, क्योंकि संसार का सम्पूर्ण ज्ञान और शक्ति उससे ही निःसृत हो रही है। दूसरे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी हैं, जो उस सर्वज्ञता को उत्तराधिकार में लेकर संसार में अवतरित हुए थे। हर वो विषय, जो मानव-हित से जुड़ा हुआ था, वह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का विषय था। अपने मात्र बयालीस वर्ष के सांसारिक जीवन-काल में उन्होंने वो सब कुछ कर दिखाया जो संसार के किसी भी कोने में बैठे किसी भी धर्म, जाति, वर्ण, वर्ग के मनुष्य का लोक ही नहीं परलोक भी संवार देने में सक्षम था। यह असाध्य था जिसे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने साध्य कर दिखाया। जिन परिस्थितियों के साथ उन्हें जूझना पड़ा उनके लिये असाधारण शब्द भी लभुता से भरा हुआ है। उन्हें अकल्पित ही कहा जा सकता है। ऐसी परिस्थितियों के उत्पन्न होने की कल्पना भी नहीं की जा सकती और उन परिस्थितियों में अंत तक अजेय रहना एक कौतुक से कम नहीं है, जो न कभी पहले हुआ था, न भविष्य में होने की संभावना है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी अपने आप में बस एक ही हैं, कोई दूर-दूर तक दूसरा नहीं है, जो किसी भी प्रकार का साम्य रखता हो। वास्तव में ऐसा तब सोचा जाये जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की ही महानता का किसी ने पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लिया हो। सूफी कवि अल्लाह यार खान योगी ने लिखा है कि मनुष्य की दृष्टि सागर के एक बुलबुले के समान है। बुलबुला वही देख सकता है जो उसे सामने दिखाई दे रहा है। बुलबुला या तो सामने उठती लहर को देख सकता है या मंझधार को देख सकता है या साहिल को देख सकता है। सागर विशाल है। उसमें बहुत कुछ घटित हो रहा है। बुलबुले की आयु सीमित है। वह जिसे देख पायेगा उसे ही सच मान लेगा, किन्तु यह अपूर्ण होगा। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की महानता भी ऐसी ही है। किसी एक पक्ष को देखने-समझने में ही आयु

*ई– १७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ – २२६०१७, फोन : ९४१५९६०५३३, ८४१७८५२८९९

व्यतीत हो जाती है, इसीलिये गुरु साहिब के समकालीन प्रसिद्ध विद्वान भाई नंद लाल जी गोया ने उनकी महानता को प्रतीक रूप में प्रकट करते हुए उन्हें दोनों लोकों का शहंशाह कहा है, जिनकी सर्वोच्चता जानी नहीं जा सकती।

पटना साहिब में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का प्रकाश (जन्म) हुआ। शिशु का जन्म होना हो तो सारा घर एकत्र हो उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा करता है, पिता समाचार सुनने के लिये व्यग्र रहता है और सबसे पहले नवजात का मुख देखने का सुख प्राप्त करना चाहता है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का प्रकाश (जन्म) धर्म प्रचार-यात्राओं की निरंतरता में हुआ। जब पटना साहिब में गुरु साहिब का प्रकाश हुआ, पिता श्री गुरु तेग बहादर साहिब ढाका में थे। उन्होंने प्रथम संस्कार बालक श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को यह दिया कि जीवन में धर्म-कर्म को सर्वोपरि रखना है और वे अपने धर्म-कार्यों को वैयक्तिक भावना के ऊपर प्राथमिकता देते हुए आगे आसाम तक चले गये। दूसरा संस्कार श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने अपने सुपुत्र को संयम का दिया। आसाम से पंजाब वापिस लौटते हुए पटना साहिब से कुछ मील दूर ही रह कर, आप पटना साहिब नहीं गये और समय के महत्व को समझते हुए अन्य मार्ग अपना लिया, जो छोटा था। धर्म प्रथम है और धर्म-निर्वहन का समय महत्व रखता है। ये दो तत्व अत्यंत महत्वपूर्ण हैं जो धर्म को संसार में प्रतिष्ठित करते हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जीवन में ये दोनों तत्व दृढ़ संकल्प बन कर प्रमुखता के साथ उभरे। यही जीवन-पर्यन्त गुरु साहिब के अजेय रहने का आधार बने। प्रकाश के उपरान्त चार वर्ष से अधिक गुरु साहिब पटना साहिब में ही रहे। यह वो समय था जब शिशु को माता के साथ-साथ अपने पिता की भी सर्वाधिक आवश्यकता होती है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इस काल में निर्लिप्त और सहज रहना सीखा। गुरु साहिब श्री अनंदपुर साहिब आये तो छ: वर्ष के हो चुके थे।

श्री अनंदपुर साहिब में रहते हुए मात्र तीन वर्ष में उन्होंने गुरु-पद धारण करने की योग्यता और सामर्थ्य अर्जित कर लिया। यह सामान्य काल नहीं था। पूरे हिन्दुस्तान का धार्मिक-सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य भारी उथल-पुथल से कांप रहा था। मुगल शासक औरंगजेब अपनी धर्मान्ध नीतियों को लागू करने के लिये निर्दयता और क्रूरता के निकृष्ट स्तर पर उतर आया था। अन्य धर्मावलंबियों को दमन और भय से इसलाम धर्म स्वीकार कराने के लिये उसने अपने अधिकारियों को खुली छूट दे रखी थी। कई ऐसे क़ानून बना दिये थे, टैक्स लगा दिये थे कि लोगों को अपने धर्म का पालन करना कठिन हो रहा था। उनके लिये न्याय नाम की कोई चीज नहीं रह गई थी और कोई सुनने वाला नहीं था। किसी में भी साहस नहीं बचा था कि औरंगजेब की अथाह फ़ौजी ताकत के आगे आवाज भी उठा सके। जो अपने पिता को कैद कर और भाई को मार कर गद्दी पर बैठा हो, उसकी निर्दयता तो वैसे ही सामान्यजन को भयभीत करने वाली थी। जितना क्रूर औरंगजेब था उतने ही क्रूर उसके सिपहसालार थे। औरंगजेब

को प्रसन्न करने के लिए उनमें क्रूरता की होड़ लगी हुई थी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की बाल्यावस्था में ही इन विकट परिस्थितियों में धर्म-पालन हेतु तैयार हो जाना अद्भुत था। गुरु साहिब जहां धर्म, आध्यात्म, भाषाओं का ज्ञान प्राप्त कर चुके थे वहीं युद्ध-कला में भी प्रवीण हो गये थे :

चौसठ विदिआ जो जगचारी।
सीखी स्री गुरु निमख मंझारी।

गुरु साहिब का शारीरिक व्यक्तित्व भी अत्यंत सुडौल और सुंदर विकसित हो रहा था। जो भी देखता मंत्रमुग्ध हो जाता था।

देश की परिस्थितियां भी तेजी से बदल रही थीं। औरंगजेब अपनी राजसी शक्ति को अधिक मजबूत करने के लिये इसलाम के प्रचार-प्रसार पर पूरा जोर दे रहा था। इसके लिये उसने मुख्य रूप से कश्मीर को चुना। उसे लगा कि यदि कश्मीर के ब्राह्मण इसलाम धर्म स्वीकार कर लेते हैं तो शेष लोगों को इसलाम में लाना सरल हो जायेगा क्योंकि ब्राह्मणों की हिन्दू समाज में विशेष प्रतिष्ठा थी। जब कश्मीर के ब्राह्मणों पर दबाव पड़ना आरम्भ हुआ, उनके जनेव उतारे जाने लगे, तिलक मिटाया जाने लगा व अन्य प्रतिबंध लगने लगे, तो त्राहि-त्राहि मच गई। कोई भी उनकी सहायता हेतु सामने नहीं आया। उनकी आशा अब सिमट कर एकमात्र श्री गुरु तेग बहादर साहिब पर केंद्रित हो गई, जिनकी प्रतिष्ठा पूरे हिंदुस्तान में सर्वश्रेष्ठ धर्मरक्षक के रूप में पहले से ही स्थापित हो चुकी थी। पंडित कृपा (किरपा) राम के नेतृत्व में ब्राह्मणों का एक दल श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शरण में श्री अनंदपुर साहिब आया। जब ब्राह्मण अपनी व्यथा सुना रहे थे उस समय श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी, जिन्हें उस समय 'बाल गोबिंद राय' नाम से जाना जाता था, भी उपस्थित थे। ब्राह्मणों की विनय सुन कर श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने कहा कि किसी महापुरुष की कुर्बनी से ही सामान्यजन में धर्म-रक्षण का बल पैदा होगा और त्याग के साथ-साथ कुर्बानी की भावना पैदा होगी। जब दरबार के अन्य सारे लोग चुप रहे तो श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने कहा कि "हे पिता-गुरु! ऐसा महापुरुष आपके अतिरिक्त और कौन हो सकता है!"

सिरताज तुमै सम को बपु धारी।

नौ वर्षीय श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के ये वचन सुन कर सभी आवाक रह गये। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने अति आनंद के साथ उनकी ओर देखा और आगे बढ़ कर उन्हें अपने सीने से लगा लिया। एक पुत्र अपने पिता को शहादत के लिये प्रेरित करे, यह पूर्व में कभी सुना नहीं गया था। श्री गुरु तेग बहादर साहिब के दरबार में एक से एक वीर, विद्वान और समर्पित सिक्ख मौजूद थे, फिर भी त्वरित सुझाव कोई नहीं दे सका था। यह प्रेरक सुझाव ऐसा था जिसने हिंदुस्तान का सम्पूर्ण परिदृश्य बदल दिया और एक ऐसे इतिहास के सृजन का द्वार खोल दिया जो बेमिसाल था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी जैसा कोई हुआ ही नहीं। मानवता और धर्म की रक्षा के लिये उन्होंने वह सब कुछ अर्पित कर दिया जो भी उनके पास था। इसका आरम्भ उन्होंने अपने बचपन से किया था,

जब वे अपने पिता के प्यार, दुलार के अधिकारी थे, जिन्हें वे धर्म-हेतु दान कर चुके थे। उन्होंने पिता को ही धर्म-रक्षण हेतु दे दिया। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने कश्मीरी ब्राह्मणों को आश्वस्त किया कि वे भय-मुक्त हो जाएं और मुगल शासन से जाकर कह दें कि पहले श्री गुरु तेग बहादर साहिब को इसलाम स्वीकार करा लो फिर हम सभी स्वीकार कर लेंगे।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब स्वयं महान वीर और युद्ध-कला के ज्ञाता थे। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के मुगलों के साथ हुए चौथे युद्ध में वे अपनी अपार वीरता का प्रदर्शन कर चुके थे, किन्तु इस बार भिन्न प्रकार की वीरता प्रकट होनी थी। श्री गुरु तेग बहादर साहिब भविष्य को देख पा रहे थे। जो भी घट रहा था, अद्भुत था। यह धर्म-रक्षण की नई धारा थी, जिसे श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने प्रस्फुटित किया और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जिसे बाद में प्रवाहमान दरिया का रूप दे दिया। औरंगजेब का सिक्खों के साथ कोई सीधा टकराव नहीं था, सिक्खों पर कोई विशेष दबाव भी नहीं था, किन्तु फिर भी श्री गुरु तेग बहादर साहिब और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इसे अपना प्रश्न बनाया, क्योंकि श्री गुरु नानक साहिब के पंथ में मनुष्य-मनुष्य के बीच कोई भेद नहीं देखा जाता था— "सभ तेरी जोति जोती विचि वरतहि गुरमती तुधै लावणी॥" गुरु साहिब ने न तो युद्ध की कोई चुनौती दी और न किसी चुनौती की प्रतीक्षा की। वे बल के महत्व और बल के प्रयोग के विभिन्न रूपों से परिचित थे। धर्म प्रचार-दौरा करते हुए गुरु जी को सरकारी प्रतिक्रिया का भली-भांति एहसास था।

गुरु साहिब को मध्य मार्ग आगरा में ही मुगल सैनिकों ने गिरफ्तार कर लिया और दिल्ली ले आये। उस समय गुरु साहिब के साथ उनके तीन सिक्ख भी थे। दिल्ली में श्री गुरु तेग बहादर साहिब तथा उनके साथी सिक्खों को चांदनी चौक कोतवाली में बंदी बना कर रखा गया। दिल्ली की सिक्ख संगत को जब गुरु साहिब की गिरफ्तारी के बारे में ज्ञात हुआ तो भारी रोष फ़ैल गया। कुटिल औरंगजेब ने यह देखते हुए मसले को तुरंत निपटाना उचित समझा। उसने श्री गुरु तेग बहादर साहिब के सामने तीन प्रस्ताव रखे। एक यह कि वे इसलाम धर्म स्वीकार कर लें और सारे सुख, रुतबे के अधिकारी बन जायें। दूसरा यह कि दैवीय चमत्कार दिखा कर अपनी रूहानियत सिद्ध करें। यदि इनमें से कोई स्वीकार न हो तो तीसरा विकल्प चुनें अर्थात् प्राणों का त्याग समझें। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने कहा कि वे धर्म की रक्षा की खातिर अपना आप कुर्बान कर देंगे और अपने अनुयायियों से भी ऐसा ही करने का आह्वान करते हैं। औरंगजेब को ऐसे उत्तर की आशा नहीं थी। वह इससे भारी आहत हुआ और वे कुछ दिनों बाद हुक्म जारी कर दिया कि श्री गुरु तेग बहादर साहिब को शहीद कर दिया जाये। श्री गुरु तेग बहादर साहिब को शहीद करने में क्रूरता की सारी हदें पार कर दी गईं। गुरु साहिब की शहीदी से पूर्व उनके साथ कैद किये गये सिक्खों— भाई मतीदास जी, भाई सतीदास जी और भाई दिआला जी की शहीदी

गुरु साहिब की नजरों के सामने कैसे हुई और कैसे गुरु साहिब की शहीदी हुई, यह लेखन का भिन्न विषय है, किन्तु जो भी हुआ, जैसे भी हुआ, यह हिन्दुस्तान के ताकतवर और क्रूर बादशाह औरंगजेब के अहंकार पर करारी चोट थी। औरंगजेब की नाक के ठीक नीचे उसकी सारी ताकत व्यर्थ सिद्ध हुई, क्योंकि उसकी सारी शर्तों को ठेंगा दिखाते हुए शहादत का विकल्प गुरु साहिब और उनके सिक्खों ने स्वयं चुना था। शहीदी के बाद गुरु साहिब के तन की संभाल भी सिक्खों ने ही की। पुत्र कोई उत्तरदायित्व संभालता है तो पिता उसे आशीर्वाद देता है और उपहार देकर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करता है। मानों कुछ ऐसा ही हुआ, जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी गुरुआई पर आसीन हुए तो उन्होंने अपने गुरु-काल का आरंभ अपने पिता श्री गुरु तेग बहादर साहिब का शीश प्राप्त कर किया, जिसे अपनी जान पर खेल कर भाई जैता जी दिल्ली से लाये थे। ऐसे ही गुरु साहिब के धड़ का संस्कार भाई लक्खी शाह बनजारा ने भाई ऊदा जी तथा भाई गुरदित्ता जी के सहयोग से दिल्ली में अपने घर को ही संस्कार-स्थल बनाकर किया। यह एक ऐसी घटना थी जिसने काल की धारा को ही मोड़ दिया। कवि सैनापति ने इसे निम्न शब्दों में वर्णित किया है :

प्रगट भए गुरु तेग बहादर।
सगल स्रिसटि पै ढापी चादर।
करम धरम की जिन पति राखी।
अटल करी कलिजुग मै साखी॥१४॥१॥

(श्री गुरु सोभा)

कलियुग में धर्म-कर्म की मर्यादा बनाये रखने की क्या विधि है, यह श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने दिल्ली में अपनी शहीदी से प्रकट कर दिखाया था। गुरु साहिब की शहीदी ने सम्पूर्ण सृष्टि को असंतुलित होने से बचा लिया और जुल्म के पलड़े को भारी नहीं होने दिया। इससे त्वरित लाभ यह हुआ कि कश्मीर में हिन्दुओं पर चल रहा उत्पीड़न का दौर थम गया। एक पुत्र के रूप में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के लिये यह कठिन परीक्षा की घड़ी थी और अपने गुरु को इस तरह गंवा देना सिक्खों को अति विचलित कर देने वाला था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इस अवसर को अत्यंत संयम, धैर्य और परिपक्वता के साथ नियंत्रित किया। लाखों सिक्ख श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की तरफ देख रहे थे और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी, श्री गुरु नानक साहिब के स्थापित सिद्धांत "जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ॥ सिरु धरि तली गली मेरी आउ॥" में अपनी शक्ति खोज रहे थे।

पिता श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहीदी को नौ वर्षीय श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने परमात्मा की प्रेम-भक्ति के रंग के रूप में लिया और मन में परमात्मा के प्रति विश्वास एवं समर्पण को पूरी तरह से दृढ़ करने में विलम्ब नहीं किया। अति सहज भाव से गुरु साहिब ने सिक्ख पंथ को दिशा देने का कार्य आरम्भ कर दिया। यह समय अत्यंत नाजुक था स्वयं श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के लिये और सिक्ख पंथ के लिये भी। गुरु साहिब की आत्मिक अवस्था की श्रेष्ठता दिशा तय करने में निर्णायक सिद्ध हुई। उन्होंने स्वयं ही पिता श्री गुरु तेग बहादर

साहिब को कुर्बानी के लिये कहा था। उस पल से ही उनके मन में भविष्य के संकल्प आकार लेने लगे होंगे। इसी कारण जब गुरु साहिब ने पिता-गुरु का शीश भाई जैता जी से ग्रहण किया, उनका सहज एक पल के लिये भी भंग नहीं हुआ। इसके विपरीत विचलित हो रही सिक्ख संगत को उन्होंने अवलंबन दिया और परमात्मा का नाम जपने को कहा। सिक्खों में साहस और बल की कमी नहीं थी। यह सिक्खों का साहस ही था कि मुगल सत्ता की दहशत को दरकिनार करते हुए गुरु साहिब का शीश पूरे आदर के साथ श्री अनंदपुर साहिब तक पहुंचाने में भाई जैता जी सफल रहे। गुरु साहिब के धड़ को उठा लाना और संस्कार करना भी एक असाधारण कार्य था, जो केवल सिक्ख ही कर सकते थे, क्योंकि "सिरु धरि तली गली मेरी आउ" उनका प्राथमिक संकल्प था, जो उन्होंने सिक्खी धारण करते वक्त लिया था। आवश्यकता थी इस साहस और बल को समय के अनुसार रूपांतरित एवं संघनित करने की। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी इस कार्य में लग गये। उनके साथ जहां समर्पित सिक्ख थे वहां चुनौतियां भी अधिक विकट थीं। औरंगजेब की क्रूरता को परास्त करने के उस संग्राम को आगे बढ़ाना था, जिसका आरंभ श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने अपनी शहीदी देकर किया था। गुरु-घर से वैर रखने वालों में पहाड़ी हिन्दू राजा भी शामिल थे। छोटी-छोटी पहाड़ी रियासतों के ये राजा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के उदय को अपने लिये खतरा समझने लगे थे। ये बाईधार के राजा जलंधर दोआब, सतलुज हिठाड़ और डूगर नामक तीन भागों में बंटे हुए थे। तीसरी चुनौती उन लोगों से थी जो गुरु-घर, सिक्ख पंथ से बहिष्कृत कर दिये गये थे और गुरु-घर से वैर-भाव में किसी भी निकृष्टता तक गिरने को तैयार रहते थे।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सिक्खों को संगठित करने और उनमें वीरता के भाव को प्रखर करने का मिशन आरंभ कर दिया, जिसका असर शीघ्र ही दिखाई देने लगा। संगत दूर-दूर से गुरु साहिब के दर्शन करने आने लगी और भेंट में शस्त्र आदि लाने लगी। गुरु साहिब ने अभ्यास के लिये छद्म युद्ध कराने शुरू कर दिये। अन्य शारीरिक कसरतें होने लगीं। श्री अनंदपुर साहिब में ही शस्त्र बनाने और बंदूकें ढालने के कारखाने लगाये गये। गुरु साहिब ने अच्छी नस्ल के घोड़े लाने के लिए सिक्खों को काबुल भेजा। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी अपने मिशन को तेजी से आगे बढ़ा रहे थे। एक वर्ष के भीतर ही अर्थात् सन् १६७६ की वैशाखी के दिन एक ऊंचा सिंहासन बनवाया गया और एक नगाड़ा तैयार कराया गया, जिसका नाम 'रणजीत नगाड़ा' रखा गया। वास्तव में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का मिशन बहुपक्षीय था। सिक्खों में वीरता का भाव पैदा किया जा रहा था, उनमें मनोवैज्ञानिक उच्चता पैदा की जा रही थी। गुरु साहिब जब दरबार में आते और दरबार से जाते, रणजीत नगाड़ा बजाया जाता था, जिसकी थाप से आसमान गूंज जाता था। जब गुरु साहिब ऊंचे सिंहासन पर बैठते तो उनकी शोभा एक महाराजा जैसी बनती, जिसे देख कर सिक्ख प्रसन्नता और गौरव से भर उठते थे। उनकी शाही आभा ने

सिक्खों को अभूतपूर्व आत्मविश्वास से भर दिया जिसे देख कर बाईधार के राजा ईर्ष्या से भर उठे। सिक्ख किसी भी बड़ी से बड़ी ताकत से टकराने को तैयार हो रहे थे। ढाडी गायक भी श्री अनंदपुर साहिब आ गये, जिनके वीर रस से भरे गीत एक अलग ही समां बांध देते थे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी स्वयं मृदंग, तबला और सिरंदा बजाने में कुशल थे।

गुरसिक्ख की जीवन-प्रेरणा गुरबाणी है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी इस बात को भली-भांति जानते थे। श्री अनंदपुर साहिब में गुरबाणी के प्रसार और शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया। गुरु साहिब का मानना था कि "जा घर विदिआ आवत है तिन सभ किछ लहिआ॥" सिक्खों को शिक्षित करने के लिए विशेष प्रबंध थे। जो भी श्री अनंदपुर साहिब आता उसे गुरमुखी का ज्ञान दिया जाता और गुरबाणी कंठ करा कर ही वापिस भेजा जाता था। गुरु साहिब स्वयं नितनेम का जीवन भर दृढ़ता से पालन करते रहे। उन्हें श्री गुरु ग्रंथ साहिब की सम्पूर्ण बाणी कंठस्थ थी। कहा जाता है कि इन प्रयासों के परिणामस्वरूप श्री अनंदपुर साहिब में एक भी अनपढ़ न रहा। पाउंटा साहिब में तो ज्ञान का महादरबार सजाया गया था। देश भर के चुने हुए कवियों, विद्वानों को आमंत्रित कर गुरु साहिब ने उनसे सत् साहित्य का सृजन कराया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी अनेक भाषाओं के ज्ञाता और सर्वोत्तम बाणीकार थे, इसलिए उनके मन में कवियों, लेखकों के प्रति गहरा सम्मान था। पाउंटा साहिब में आने वाले रचनाकारों का पूरा आदर किया जाता और गुरु साहिब श्रेष्ठ रचनाओं के लिए उन्हें पुरस्कृत कर उनका उत्साहवर्धन भी किया करते थे। भाई नंद लाल जी और सैनापति जैसे बावन प्रतिष्ठित कवियों ने गुरु साहिब के दरबार का प्रश्रय प्राप्त किया था।

वास्तव में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के गुरु-काल का पूर्वार्ध सिक्खों के सर्वांगीण विकास का काल था। एक ऐसे आदर्श मनुष्य की कल्पना को साकार किया जा रहा था जिसे श्री गुरु नानक साहिब ने "सतिगुरि मिलिऐ सच संजमि सूचा" की उपमा दी थी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने पूरी तैयारी के बाद ही सन् १६९९ की वैशाखी के दिन 'खालसा' सजाया। 'खालसा' का उदय संसार की एक महान घटना थी। इस दिन गुरबाणी की 'बे-गमपुरा' की कल्पना को यथार्थ का आधार प्राप्त हुआ। "बेगम पुरा सहर को नाउ॥ दूखु अंदोहु नही तिहि ठाउ॥" एक ऐसा नगर हो, जिसमें किसी को कोई चिंता न हो, कोई दुख, व्यथा न हो और किसी दुख की कोई आशंका भी न हो। मनुष्य को ऐसे नगर में रहने का अधिकार है।

किन्तु, मनुष्य को ऐसे नगर का नागरिक होने का पात्र बनना पड़ता है। यह परोपकार श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने किया। खालसा के रूप में गुरु साहिब ने ऐसे आदर्श मनुष्य को प्रकट किया जो पूर्ण आनंद और अडोल आशा की अवस्था का धारक था। 'खालसा' का अर्थ है— सतियुग के मनुष्य को कलियुग में प्रकट करना, मनुष्य को देवता बना देना। यह कैसे सम्भव हुआ, इसे श्री गुरु अमरदास साहिब के इस सूत्र-वचन से समझा

जा सकता है— "मानस ते देवते भए सची भगति जिसु देइ॥" श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने देवता बनने की योग्यता दी तब सिक्ख 'खालसा' बना। इसकी तैयारी गुरु साहिब ने गुरुआई पर आसीन होने के बाद ही कर दी थी। श्री गुरु नानक साहिब के काल से ही सिक्ख अपने सिक्ख होने की योग्यता अर्जित कर रहे थे, परीक्षायें दे रहे थे। उनकी योग्यताओं को अंतिम रूप श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने दिया। इसके लिये उन्होंने सन् १६७५ से संवत् १६९९ तक का २४ वर्ष का लंबा समय लिया, क्योंकि यह कार्य असम्भव को सम्भव करने जैसा था। श्री गुरु अमरदास जी ने वचन किया था कि मानस से देवता वही बन सकता है जिसे गुरु-परमात्मा सच्ची भक्ति-भावना देता है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने असंभव कार्य को संभव करने के लिये वह किया जो असम्भव था। गुरु साहिब दोनों लोकों के शहंशाह थे और सिक्ख को 'खालसा' बनाने के लिये उन्होंने दोनों लोकों की शहंशाही, जो उनके पास थी, सिक्खों को सौंपी, साथ ही अपने आप को भी सौंप दिया— "वाह वह गोबिंद सिंघ आपे गुरु चेला॥" श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सिक्खों को केवल अमृत-पान करा कर 'खालसा' ही नहीं सजाया, बल्कि चौबीस वर्ष तक तपा कर, जैसे अग्नि में तपा कर सोने को शुद्ध किया जाता है, पूर्ण निर्मल किया और अमृत-पान करा कर प्रमाण-पत्र दिया कि वे 'खालसा' बनने योग्य हो गये हैं। उस समय धरती पर श्री अनंदपुर साहिब ही 'बेगमपुरा' था, जहां श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का दरबार सजता था। गुरु साहिब ने खालसा को उस समय के 'बेगमपुरा-अनंदपुर' का नागरिक बना दिया।

वास्तव में चिंतन यह होना चाहिये कि गुरु साहिब ने हमें क्या नहीं दिया जो हमें वांछित है :—

१. मनुष्य को जन्म के लिये माता-पिता की आवश्यकता होती है। गुरु साहिब 'खालसा' के पिता बने और माता उनकी सुपत्नी माता साहिब कौर बने।

२. मनुष्य को एक परिवार की आवश्यकता होती है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने पुत्र बाबा अजीत सिंघ जी, बाबा जुझार सिंघ जी, बाबा जोरावर सिंघ जी, बाबा फतिह सिंघ 'खालसा' को दे दिये— "इन पुतरन के सीस पर वार दिए सुत चार। चार मुए तो किआ हुआ जीवत कई हजार।"

३. निवास के लिए उत्तम स्थान की आवश्यकता होती है। गुरु साहिब ने 'खालसा' को अपने नगर 'श्री अनंदपुर साहिब' का निवासी बना दिया।

४. मनुष्य चाहता है कि वह रूपवान और गुणवान हो, जिससे उसे समाज में आदर मिले। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपना ही रूप खालसा को दे दिया— "खालसा मेरो रूप है ख़ास।"

५. प्रत्येक मनुष्य को जीवन जीने के लिये किसी विशेष संबल की आवश्यकता होती है। गुरु साहिब स्वयं 'खालसा' का संबल बन कर उसके अंतर में स्थित हुए और सदा सहायक हो गये— "खालसे महि हौ करौ निवास।"

६. श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने 'पांच प्यारों' से स्वयं विनय कर अमृत-पान किया और गुरु व सिक्ख का भेद मिटा दिया। इस तरह अपना गुरुत्व

भी उन्होंने 'खालसा' को सौंप दिया।

७. श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने महानता में विनम्रता का ऐसा सबक 'खालसा' को दिया जो अद्भुत था। दमदमा साहिब में श्री गुरु ग्रंथ साहिब को सम्पूर्णता प्रदान करते हुए उन्होंने श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी शामिल की, किन्तु स्वयं महान बाणीकार होते हुए भी अपनी बाणी शामिल नहीं की।

८. मनुष्य अपने भविष्य के प्रति सदैव चिंतित होता है। गुरु साहिब ने 'पांच ककारों' के रूप में 'खालसा' को कभी न मिटने वाली पहचान प्रदान की। खालसा अपने ककारों से स्वयं ही श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की विरासत के संग जुड़ कर गौरवमयी हो जाता है।

९. मनुष्य का श्रेष्ठ कुल उसे भावनात्मक रूप से आश्वस्त करता है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने उसे 'सिंघ' और 'कौर' का कुल प्रदान कर उसे सदा के लिये भावनात्मक उच्चता का अधिकारी बना दिया।

१०. मनुष्य एक निश्चित और स्पष्ट मार्ग चाहता है जिस पर चल कर वह सुख प्राप्त कर सके, उसे भटकना न पड़े। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरुगद्दी सौंप कर दुविधा सदा के लिये दूर कर दी। गुरु-काल में ही अनेक स्वार्थी लोग अपने-अपने ग्रंथ लेकर बैठ गये थे, अपनी बाणी को गुरबाणी में मिला कर भ्रम पैदा कर रहे थे। सिक्ख के लिये मात्र श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी मुक्ति का मार्ग बन गई।

११. 'अमृत' के बारे में लोग सुनते आये थे, जिसके लिये देवों और दानवों में भीषण संग्राम हुआ था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने वह 'अमृत' जन-जन को उपलब्ध करा दिया। गुरु साहिब के 'अमृत' ने मानवीय मूल्यों को अमरत्व प्रदान किया। आज भी, जहां भी अन्याय, अत्याचार दिखाई देता है, कोई आये या न आये, 'खालसा' अकेला ही खड़ा हो जाता है। 'खालसा' विश्वास का प्रतीक बन गया है।

१२. जो तेग एक वर्ग विशेष के हाथों में दिखती थी अब वर्ग, वर्ण के भेद के बिना सभी के तन का आभूषण बन गई है।

१३. पहले युद्ध पूरी सेना लड़ती थी और युद्ध में विजय का श्रेय सेनापति को मिलता था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इस धारा को पलट दिया और विजय का ताज 'खालसा' के सिर पर बंधने लगा— "जुद्ध जिते इन ही के प्रसादि इन ही के प्रसादि सु दान करे॥"

विचार करते जायें तो उपरोक्त सूची बढ़ती चली जायेगी और शब्द कम पड़ जायेंगे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने 'खालसा' को इतना समर्थ कर दिया कि वह अकेले ही सवा लाख के साथ लड़ कर जीतने योग्य हो गया। जिस सरहिंद के नवाब को अपनी ताकत पर इतना गुमान था कि उसने गुरु-घर को ही मिटा देने का सपना देख लिया था तथा बार-बार श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी पर आक्रमण भी किये थे और छोटे साहिबजादों— बाबा जोरावर सिंघ जी, बाबा फ़तिह सिंघ जी को निर्दयता की सारी सीमायें लांघते हुए दीवार में चिनवा दिया था, उस सरहिंद के नवाब और पूरी

सरहिंद को बाबा बंदा सिंघ बहादुर के नेतृत्व में सिक्खों ने शीघ्र ही ऐसा नेस्तनाबूद किया कि धरती भी कांप उठी थी। सिक्खों की वीरता की संसार में कोई तुलना ही नहीं है।

यह विचारणीय है कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी स्वयं महान योद्धा थे और अपनी इस महानता के साथ उन्होंने 'खालसा' को भी जोड़ा और शेर बनाया। खालसा अपने जीवन के मुख्य लक्ष्य, आत्मिक उन्नयन से विचलित न हो, इसके लिये ही गुरु साहिब ने 'खालसा' को 'शबद-गुरु' की अधीनता स्वीकार कराई और श्री गुरु ग्रंथ साहिब का दास बनाया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के रूप में गुरु साहिब ने सिक्खों को एक ऐसा गुरु दिया जो जीवन के सभी प्रश्नों का उत्तर देने और निदान करने में सक्षम है। सिक्ख के पास श्री गुरु ग्रंथ साहिब है तो उसे किसी अन्य बाणी, किसे अन्य के मार्गदर्शन की आवश्यकता ही नहीं रह जाती— "तिन कउ किआ उपदेसीऐ जिन गुरु नानक देउ॥"

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सिक्ख को संसार का सबसे धनी व्यक्ति बनाया है जिसके पास न तो ज्ञान का अभाव है, न भावना की कमी है और न ही वीरता की कोई न्यूनता है। सिक्ख यदि उस विरासत को संभाल कर रखे और अनुसरण करे तो आपसी वितण्डों से उबर कर वह पूरे संसार को 'बे-गमपुरा' और 'अनंदपुर' में बदल सकता है।

कविता

सृष्टि की चादर, धर्म के रक्षक

–स. करनैल सिंघ सरदार पंछी*

धर्म पे सतिगुर तेग बहादर जी कुर्बान हुए हैं।
'सृष्टि की चादर, धर्म के रक्षक' का उनवान हुए हैं।

उनकी तूलिका ने जो लिखी है बाणी सोने जैसी,
शब्दों की दौलत से वे सोने की खान हुए हैं।

उनकी शुभ शिक्षा ने बदली हर इन्सान की किस्मत,
उनके सारे शब्द भी रब का ही फरमान हुए हैं।

कश्मीरी पण्डितों पे होते ज़ुल्म थे औरंगजेबी,
सुन कर उनकी दर्द कहानी खुद परेशान हुए हैं।

औरंगज़ेब ने क्या पाया उनका सीस कटा कर?
दीनों के रक्षक गुरु, शहीदों के सुलतान हुए हैं।

धर्म की खातिर दे दी जान प्यारे सतिगुरु ने,
'पंछी' भारत में वो शाने-हिन्दुस्तान हुए हैं।

*जेठी नगर, मालेर कोटला रोड, खन्ना–१४१४०१ (लुधियाना), फोन : ९४१७०–९१६६८

ख़बरनामा

राजस्थान के मंडी गोलूवाला में गुरुद्वारा साहिब पर हुए हमले का एडवोकेट धामी ने लिया सख़्त नोटिस

श्री अमृतसर साहिब : ३ अक्तूबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने राजस्थान के ज़िला हनुमानगढ़ के गुरुद्वारा महिताबगढ़ साहिब मंडी गोलूवाला पर कुछ लोगों द्वारा हमला करने की सख़्त शब्दों में निंदा करते हुए सरकार को हमलावर लोगों के ख़िलाफ़ तुरंत सख़्त कार्रवाई करने की मांग की है। मुख्यालय से जारी बयान में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि प्राप्त जानकारी के अनुसार ऐसा जानबूझ कर किया गया हमला है, जिसे सिक्ख कौम कभी भी बरदाश्त नहीं करेगी। उन्होंने कहा कि बड़े ही वहशियाना ढंग के साथ गुरुद्वारा साहिब में सो रहे सिंघों पर हमला कर उन्हें गंभीर रूप से ज़ख़्मी किया गया। एडवोकेट धामी ने कहा कि दुख की बात है कि यह सब कुछ पुलिस की मौजूदगी में हुआ।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि सिक्खों ने जहाँ देश की सुरक्षा के लिए हमेशा अग्रणी भूमिका निभाई है, वहां जिस भी क्षेत्र में सिक्ख बसे हैं वहाँ की तरक्की में भी बड़ा योगदान दिया है। उन्होंने कहा कि दुख की बात है कि इसके बावजूद भी सिक्खों को अक्सर निशाना बनाया जाता है। उन्होंने कहा कि राजस्थान में सिक्खों को पहले भी कई बार ककारों को लेकर बड़ी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। इसके विरुद्ध जहाँ सिक्ख संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने आवाज़ उठाई है, वहां स्थानीय सिक्खों ने भी सरकार को अपना फ़ैसला बदलने के लिए मजबूर किया है। उन्होंने कहा कि बहुत-से लोग समाज में फूट डाल कर अपनी राजनीति चमकाना चाहते हैं, जो देश-हित में नहीं है। उन्होंने कहा कि किसी को भी ऐसी छूट नहीं दी जा सकती कि वो ऐसी हरकत करे। एडवोकेट धामी ने कहा कि राजस्थान के मुख्यमंत्री को इस मामले का तुरंत संज्ञान लेते हुए दोषियों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई करनी चाहिए।

अमेरिकी सेना में सिक्खों को दाढ़ी रखने से रोकना धार्मिक आज़ादी का उल्लंघन : एडवोकेट धामी

श्री अमृतसर साहिब : ६ अक्तूबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने अमेरिका के रक्षा सचिव के अमेरिका सुरक्षा बलों में सिक्खों को दाढ़ी रखने से रोकने वाले बयान पर भारत के विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर को पत्र लिख कर, अमेरिका सरकार के पास मामला उठा कर इस पर रोक लगाने की मांग की है। पत्र में लिखा गया है कि इस फ़ैसले से सिक्खों की धार्मिक मान्यताओं को ठेस पहुंची है, इसे रोका जाये और सिक्खों को पूर्व की भाँति अमेरिका की सेना में अपने धर्म का पालन करते हुए सेवा निभाने की इजाज़त मिले।

मुख्यालय से जारी बयान में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि अमेरिका सरकार के अधिकारी का

ऐसा बयान सिक्खों की परंपराओं एवं मौलिक अधिकारों को आँखों से ओझल करने वाला है। उन्होंने कहा कि सिक्खों ने अपनी काबलियत के दम पर पूरी दुनिया में उच्च मुकाम हासिल किया है तथा अमेरिका के विकास में भी अपना योगदान दिया है। अमेरिका की सेना में भी सिक्ख अपनी ड्यूटी पूरी लगन के साथ कर रहे हैं। ऐसे में सेना की ड्यूटी के दौरान सिक्खों को दाढ़ी रखने से रोकने वाला फ़ैसला तर्कसंगत नहीं प्रतीत होता।

एडवोकेट धामी ने कहा कि सिक्खों द्वारा अपने केश न काटना अपने गुरु साहिबान तथा धर्म के प्रति वचनबद्धता है और अमेरिका के रक्षा मंत्री द्वारा जारी सिक्खों को दाढ़ी रखने से रोकने का फरमान सिक्खों की धार्मिक आज़ादी पर हमला है। उन्होंने कहा कि अमेरिका जैसे लोकतांत्रिक देश में सिक्ख भाईचारे के साथ ऐसा भेदभाव ठीक नहीं है। उन्होंने यह भी कहा कि अमेरिका के सर्वपक्षीय विकास में सिक्खों के योगदान को नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता। सिक्खों ने वहां रहते हुए सख़्त मेहनत कर देश की ख़ुशहाली के लिए काम किया है। उन्होंने कहा कि सिक्ख कौम के रीति-रिवाज़ दुनिया के किसी हिस्से में भी जान-पहचान के मुहताज नहीं हैं, क्योंकि पूरी दुनिया में सिक्खों ने अपनी पहचान स्थापित की हुई है। अमेरिका देश, जो कि सिक्खों के रहन-सहन, पहचान और मर्यादा को गहराई से समझता है, वहां सिक्खों की धार्मिक आज़ादी को ठेस पहुंचाना सही नहीं है। उन्होंने अमेरिका सरकार को ऐसा कोई भी फ़ैसला न करने की अपील करने के अलावा भारत के विदेश मंत्री से भी अपील की कि वे यह मामला तुरंत अमेरिका सरकार के पास उठा कर इसका समाधान करें।

जम्मू-कश्मीर के गाँव कौलपुर में पावन स्वरूपों की बेअदबी की एडवोकेट धामी ने की सख़्त निंदा

श्री अमृतसर साहिब : ८ अक्तूबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने जम्मू-कश्मीर के सांबा ज़िले के गाँव कौलपुर में एक व्यक्ति द्वारा की गई श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पावन स्वरूपों की बेअदबी की सख़्त शब्दों में निंदा करते हुए दोषी व्यक्ति के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई करने की मांग की है। एडवोकेट धामी ने कहा कि यह बेहद दुखद मामला है, जिसने सिक्ख भावनाओं को गहरी ठेस पहुंचाई है। उन्होंने कहा कि जब समूचा पंथ श्री गुरु तेग बहादर साहिब का ३५०वर्षीय शहीदी दिवस मना रहा है, तो ऐसी घटनाओं का घटना गहरी साजिश का हिस्सा प्रतीत होता है। उन्होंने कहा कि सरकार तुरंत इस साजिश का पता लगाए और दोषियों को मिसाली सज़ा दे। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बेअदबी करना कौम की भावनाओं पर आघात है, जिसे कौम बरदाश्त नहीं कर सकती। ऐसी घटनाएँ सरकारों की लापरवाही और पंथ-विरोधी लोगों के खिलाफ ढीली कार्रवाई का परिणाम हैं। जब भी कोई ऐसी निंदनीय घटना घटित होती है तो दोषी बड़ी सरलता से बच निकलते हैं। यदि मिसाली कार्रवाई और सज़ा का प्रावधान हो तो कोई भी ऐसी हरकत करने की हिम्मत

नहीं करेगा।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि भारत सरकार को देश के कानून में संशोधन कर बेअदबी के दोषियों को सख़्त सज़ा का प्रबंध करने के लिए उचित कदम उठाने चाहिए। उन्होंने कहा कि चाहे पूर्व की सरकारों द्वारा भी सख़्त कानून लाने की कई बार बात की गई है, परंतु कोई ठोस परिणाम सामने नहीं आए।

एडवोकेट धामी ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से सदस्य स. गुरमीत सिंघ बूह, भाई अजैब सिंघ अभ्यासी, सचिव स. प्रताप सिंघ तथा सिक्ख मिशन जम्मू-कश्मीर के इंचार्ज स. हरभिंदर सिंघ को घटना-स्थल पर भेज कर मुकम्मल रिपोर्ट माँगी है। उन्होंने ये भी निर्देश दिए हैं कि प्रभावित पावन स्वरूपों को संभाले जाने की कार्यवाही की जाये और कानूनी कार्रवाई करवाने के लिए भी जिम्मेदारी निभाई जाये।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने बाढ़ पीड़ितों के लिए राहत-सामग्री के तीन ट्रक रवाना किए

श्री अमृतसर साहिब : १३ अक्तूबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने आज स्थानीय भाई गुरदास जी हाल से बाढ़ पीड़ितों के लिए राहत-सामग्री के तीन ट्रक रवाना किये। भेजी गई राहत-सामग्री में रोज़मर्रा के सामान के अलावा सर्दियों के लिए कंबल, गद्दे, मच्छरदानियाँ तथा अन्य आवश्यक सामान शामिल है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने बताया कि बाढ़ पीड़ितों की माँग के अनुसार शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से समय-समय पर हर संभव मदद भेजी जा रही है। एडवोकेट धामी ने कहा कि अब सर्दी के मौसम की आमद होने के कारण हालात को मुख्य रखते हुए आवश्यकतानुसार कंबल, गद्दे तथा अन्य आवश्यक सामान भेजा गया है। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी भी अपनी तरफ से बाढ़ पीडितों के लिए आवश्यकतानुसार सामान खरीद रही है तथा संगत की तरफ से भी सहयोग दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि सिक्ख संस्था गुरु साहिब के उपदेशानुसार हर समय ज़रूरतमंदों की सहायता के लिए तत्पर है और हालात सामान्य होने तक निरंतर सेवा-कार्य जारी रहेगी।

इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्य सचिव स. कुलवंत सिंघ मंनण, ओएसडी स. सतबीर सिंघ (धामी), सचिव स. प्रताप सिंघ, स. बलविंदर सिंघ काहलवां, निजी सचिव स. शाहबाज सिंघ, श्री दरबार साहिब के जनरल मैनेजर स. भगवंत सिंघ धंगेड़ा, उप सचिव स. हरभजन सिंघ वक्ता, मैनेजर स. सतनाम सिंघ रिआड़, स. राजिंदर सिंघ रूबी आदि उपस्थित थे।

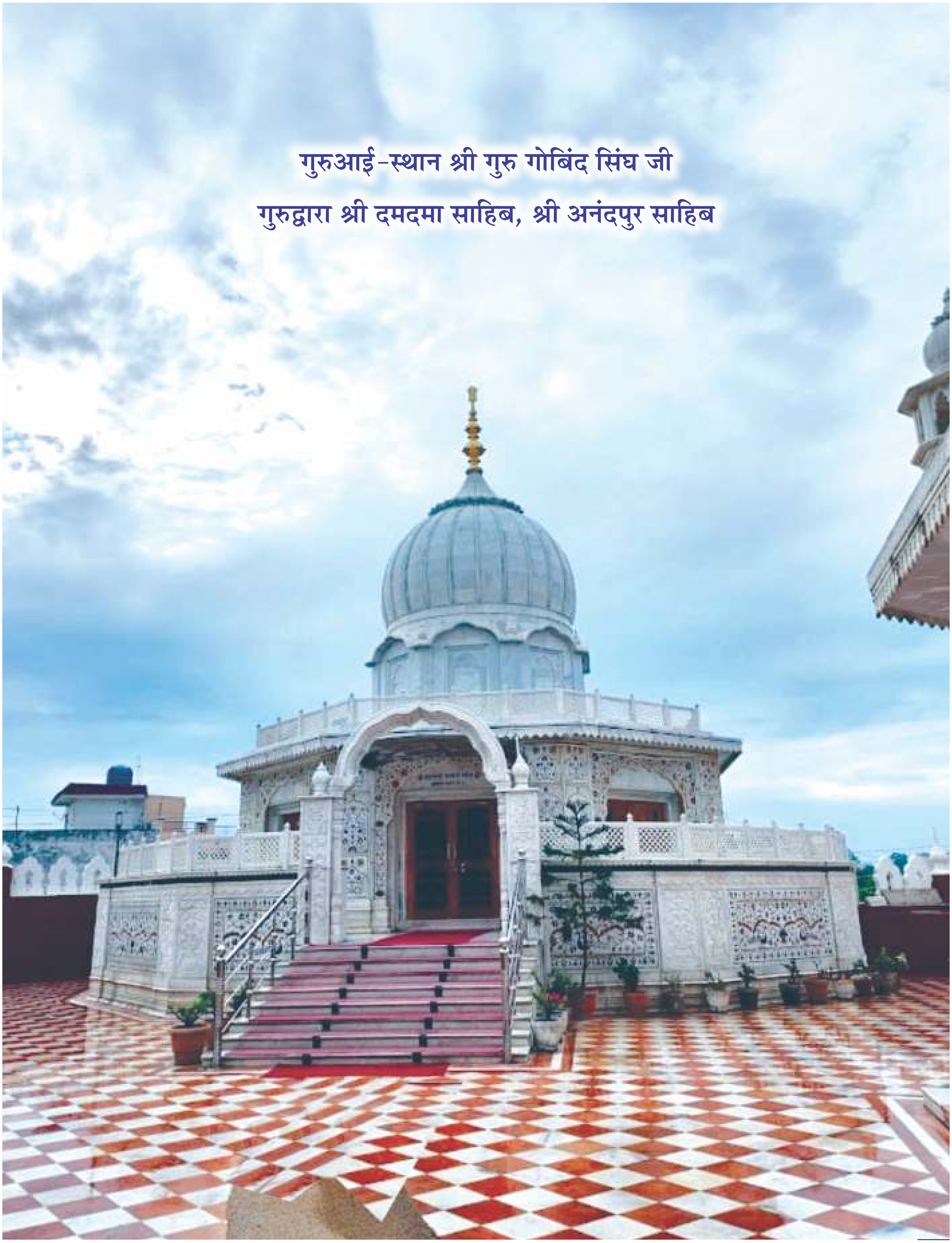
गुरुआई-स्थान श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी
गुरुद्वारा श्री दमदमा साहिब, श्री अनंदपुर साहिब

Registered with PRGI at No. PUNHIN/2007/21665
Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2023-25 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2023-25

GURMAT GYAN

November 2025
DHARAM PARCHAR COMMITTEE,
Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

शीश-संस्कार-स्थान श्री गुरु तेग बहादर साहिब
गुरुद्वारा सीसगंज साहिब, श्री अनंदपुर साहिब

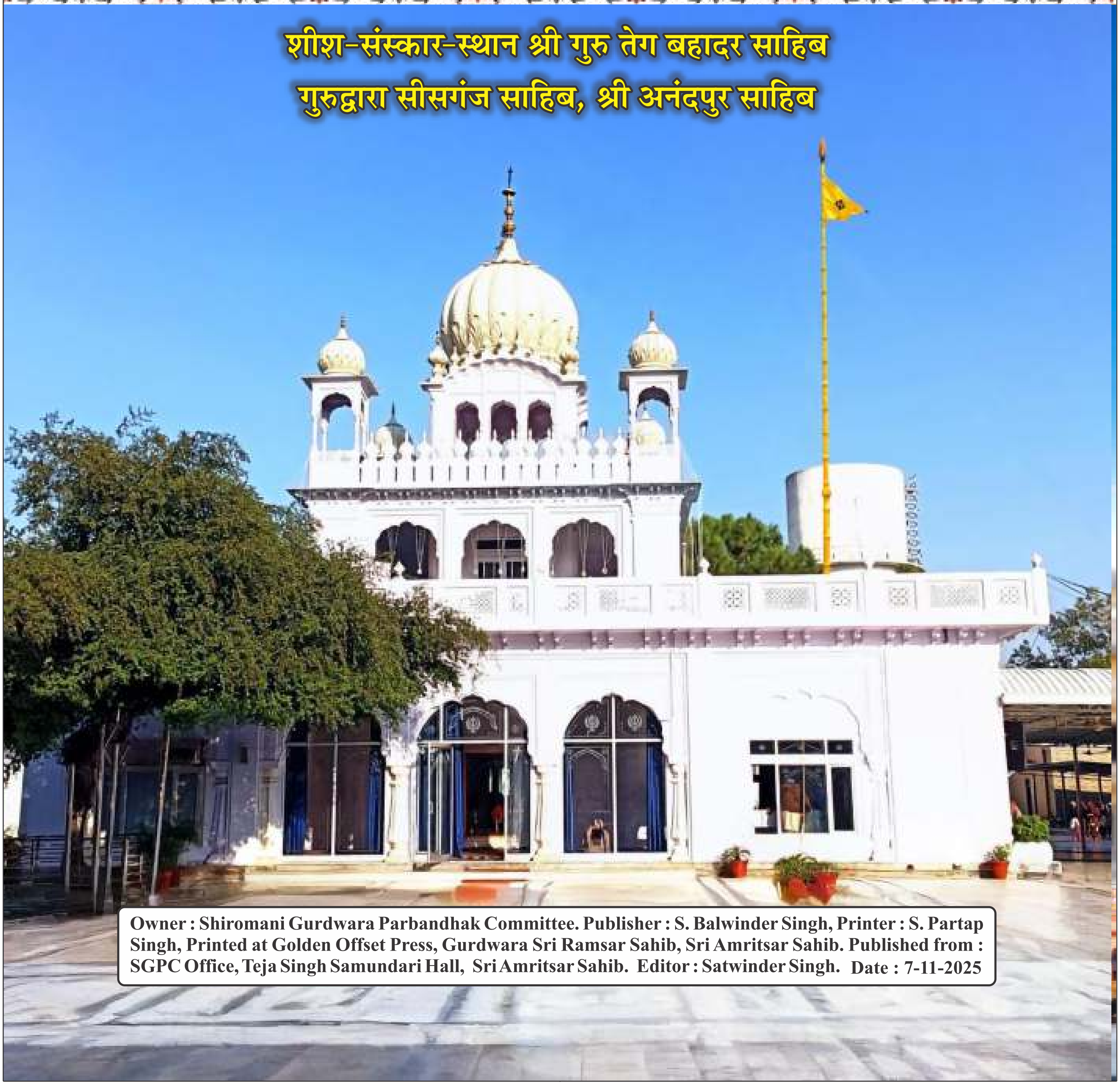

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher : S. Balwinder Singh, Printer : S. Partap Singh, Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar Sahib. Published from : SGPC Office, Teja Singh Samundari Hall, Sri Amritsar Sahib. Editor : Satwinder Singh. Date : 7-11-2025